छब्बीसवाँ अंक, 2021

प्रज्ञा ज्योति

सद्भावना

स्थापित 1993

सुबोध

2020-2021

किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय रकसा

रतसर-बलिया (उ0प्र0)

सम्बद्ध : जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

वन्दना

उतरो देवि ! हृदय मन्दिर में
तिमिर काट, आलोक विभा दो.....

वर दे, वीणावादिनि वर दे!
प्रिय स्वतन्त्र-रव, अमृत मन्त्र नव
भारत में भर दे!

काट अंध-उर के बन्धन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;
कलुष-भेद-तम, हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे!

नव गति, नव लय, ताल-छन्द नव
नवल कंठ, नव जलद-मंद्ररव;
नव नभ के नव विहग-वृन्द को
नव पर, नव स्वर दे!
वर दे, वीणावादिनि वर दे!

छब्बीसवाँ अंक, 2021

सुबोध

वर्ष : 28 सत्र : 2020-2021 अंक : 26

संरक्षक
डॉ० अशोक कुमार सिंह
प्राचार्य

प्रधान संपादक
डॉ० अनिल कुमार पाण्डेय
विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग

सह संपादक
डॉ० अभय नाथ सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय रकसा
रतसर-बलिया (उ०प्र०)
सम्बद्ध : जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

प्रकाशक

किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय रकसा

रतसर-बलिया (उ0प्र0)

सम्बद्ध : जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

(यू.जी.सी.एक्ट 1956 की धारा 2-एफ एवं 12-बी के अन्तर्गत पंजीकृत)

दूरभाष : 9415254779, 9415690684, 9918469616

Visit us at : www.kisanpgcollege.in

E-mail : kisankmv@gmail.com

शैक्षिक सत्र

2020-21

मुद्रण

परफेक्ट कम्प्यूटर

आवासीय कालोनी, बहादुरपुर, बलिया

कम्पोजिंग व आवरण एवं चित्र सज्जा

अजय कुमार

© प्रकाशनाधीन

पत्रिका के लेखों/अन्य सामाग्रियों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, उनसे प्रकाशक/सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

राज भवन
लखनऊ–266 027

दिनांक : 02 फरवरी, 2021

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय रकसा, रतसर, बलिया द्वारा वार्षिक पत्रिका **'सुबोध'** के छब्बीसवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

राष्ट्र के नवनिर्माण में उच्च शिक्षा की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उच्च शिक्षा संस्थानों पर अपने विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा देने और शिक्षा की गुणवत्ता बनाये रखने की जिम्मेदारी है। मुझे आशा है कि वार्षिक पत्रिका में ऐसे मूल्यपरक लेखों का प्रकाशन किया जायेगा जो विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे।

वार्षिक पत्रिका **'सुबोध'** के सफल प्रकाशन के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन

(आनंदीबेन पटेल)

दूरभाष : 0522-2236497 फैक्स : 0522-2239488 ईमेल: hgovup@nic.in वेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

प्रोफेसर कल्पलता पाण्डेय
कुलपति
Prof. Kalplata Pandey
Vice-Chancellor

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय
बलिया-277001, उत्तर प्रदेश
Jananayak Chandrashekhar University
Ballia-277001, UttarPradesh
Website : www.jncu.ac.in
E-mail: vcjncuballia@gmail.com

दिनांक : 02 फरवरी, 2021

संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रकसा, रतसर-बलिया द्वारा वार्षिक पत्रिका **'सुबोध'** के छब्बीसवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए अध्ययन के साथ-साथ सृजनशीलता का अभ्यास भी होना आवश्यक है। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन द्वारा विद्यार्थियों को स्वयं के सर्वांगीण विकास हेतु एक अवसर प्राप्त होगा।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए महाविद्यालय परिवार को शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ एवं कामना करती हूँ कि यह महाविद्यालय उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर बढ़ता रहे।

प्रो0 (कल्पलता पाण्डेय)

प्रो0 टी0एन0 सिंह
कुलपति
Prof. T.N. Singh
Vice Chancellor

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी-२२१००२
Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith
Varanasi-221 002

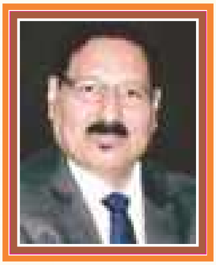

दिनांक : 30 जनवरी, 2021

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय रकसा, रतसर, बलिया अपनी वार्षिक पत्रिका **'सुबोध'** के छब्बीसवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

आशा है पत्रिका में महाविद्यालय के वर्ष पर्यन्त किये गये उत्कृष्ट कार्यों, शैक्षणिक एवं सृजनात्मक उपलब्धियों आदि को उचित स्थान दिया जायेगा जो छात्रों, शोधार्थियों एवं जनमानस में नई ऊर्जा एवं शक्ति का संचार करेगा।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ तथा प्रकाशन कार्य में लगे सभी सदस्यों को शुभकामनाएं देता हूँ।

(प्रो0 टी0एन0 सिंह)
कुलपति

Tel: +91 542-2225472(O), 2221268®,2223160(Camp Off.), Fax:2225472(O), 2221268®,e-mail:vcmgkvp@gmail.com

डा0 अमित भारद्वाज
निदेशक, उच्च शिक्षा

उच्च शिक्षा निदेशालय, उ0प्र0
प्रयागराज।
0532-2623874 (का0)
0532-2423919 (फैक्स)
0532-2256785 (आ0)

दिनांक : 09 फरवरी, 2021

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय रकसा, रतसर-बलिया, उ0प्र0, द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका **'सुबोध'** के छब्बीसवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

शिक्षा के माध्यम से जीवन, समाज और राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित होती है। शिक्षित व्यक्ति ऐसे आधार स्तम्भ होते हैं, जो उज्ज्वल भविष्य हेतु देश के नियंता होते हैं। इसके दृष्टिगत हमें अपनी भावी पीढ़ी के लिए बेहतर शिक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करनी होगी। संस्थान द्वारा पत्रिका का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। मुझे विश्वास है कि इसमें विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सामग्री का समावेश किया जायेगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए प्राचार्य एवं महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ।

डा0 (अमित भारद्वाज)

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

संजय कुमार
कुलसचिव
Sanjay Kumar
Registar

Mobile No.: 9415196266
Email ID : registrarjncu@gmail.com

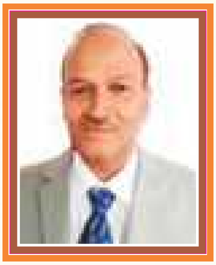

दिनांक – 06 फरवरी, 2021

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय रकसा, रतसर-बलिया द्वारा महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **'सुबोध'** के छब्बीसवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। शैक्षणिक गतिविधियों की निरन्तरता व विविधता बनाये रखने की दृष्टि से वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रयास है। युवाओं के सफल व्यक्तित्व निर्माण के लिए उनकी रूचि, क्षमता के अनुरूप मार्गदर्शन की अत्यन्त आवश्यकता है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित लेखों के माध्यम से छात्र एवं छात्राएं अपने व्यक्तित्व एवं भविष्य का निर्माण कर देश को विकास के पथ पर आगे ले जाने में अग्रणी भूमिका का निर्वाह कर विश्वविद्यालय का नाम रोशन करेंगे।

मैं अपने एवं विश्वविद्यालय परिवार की ओर से प्रकाशित होने वाली पत्रिका के सफल प्रकाशन की शुभकामना व्यक्त करता हूँ। साथ ही सम्पादक मण्डल के सदस्यों को बधाई देते हुए अपनी हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ तथा छात्र एवं छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

Sanjay

(संजय कुमार)
कुलसचिव

लल्लन सिंह

संस्थापक/प्रबन्धक

- किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय रकसा, रतसर-बलिया
- स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाँसडीह, बलिया
- पार्वती देवी इण्टर कालेज रकसा, रतसर-बलिया

प्रबन्धक

- नागेश्वरी देवी श्रीकृष्ण कन्या इण्टर कालेज उकछी, बलिया

दिनांक : 19.02 2021

संदेश

किसी भी शैक्षणिक संस्था के विकास एवं संवर्धनार्थ निरंतर चिंतन, प्रयास तथा व्यवस्था परमावश्यक है।

इसी परिप्रेक्ष्य में महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका **'सुबोध'** के माध्यम से शिक्षा की दशा एवं दिशा के आलोक में, विशेष सामग्री का समावेश होगा, ऐसी मेरी सोच है।

पत्रिका के सफल व सशक्त प्रकाशनार्थ मेरी सतत् शुभकामनाएं!

(लल्लन सिंह)
संस्थापक व प्रबन्धक
किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रकसा, रतसर-बलिया

डॉ0 अशोक कुमार सिंह

प्राचार्य

किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रकसा, रतसर-बलिया

दिनांक : 15.02 2021

संदेश

मानव जीवन में शिक्षा का सदैव से महत्व रहा है। इसके माध्यम से ही समाज प्रदेश और देश का समग्र विकास किया जा सकता है। पत्रिका अपने परिवेश का एक दर्पण होती है, जिसमें समाज विशेष की तस्वीर साफ परिलक्षित होती है। आशा है महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **'सुबोध'** के माध्यम से महाविद्यालय के प्रस्फुटित स्वरूप को लिपिबद्ध किया जा सकेगा तथा महाविद्यालय शिक्षा जगत् में अपनी अमिट पहचान बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

'सुबोध' के छब्बीसवें अंक के सुरूचिपूर्ण व सफल प्रकाशनार्थ मेरी शुभकामनाएं।

डॉ0 (अशोक कुमार सिंह)
प्राचार्य
किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रकसा, रतसर-बलिया

सम्पादक मण्डल

प्रधान संपादक

डॉ० अनिल कुमार पाण्डेय

सह संपादक

डॉ० अभय नाथ सिंह

किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय रकसा
रतसर, बलिया–उ0प्र0
एक परिचयात्मक परिदृष्टि

महाविद्यालय का स्थापना वर्ष	:	01.07.1993
महाविद्यालय में संचालित विषय -		
कला स्नातक स्तर पर	:	1. हिन्दी 2. राजनीति विज्ञान 3. प्राचीन इतिहास 4. समाजशास्त्र 5. भूगोल 6. गृह विज्ञान 7. सैन्य विज्ञान 8. शिक्षाशास्त्र
विज्ञान स्नातक स्तर पर	:	1. गणित 2. भौतिक विज्ञान 3. रसायन विज्ञान 4. वनस्पति विज्ञान 5. प्राणि विज्ञान 6. सैन्य विज्ञान 7. गृह विज्ञान।
शिक्षा संकाय	:	बी0एड्0 पाठ्यक्रम।
कला परास्नातक स्तर पर	:	1. प्राचीन इतिहास 2. राजनीति विज्ञान 3. गृह विज्ञान 4. समाजशास्त्र
डी0एल0एड्0(बी0टी0सी0)	:	शैक्षिक सत्र : 2011-2012 से संचालित।
बी0एल0एड्0	:	शैक्षिक सत्र 2019-2020 से संचालित।
पुस्तकालय-वाचनालय	:	समृद्ध पुस्तकालय व वाचनालय की सम्यक् व्यवस्था है, जिसमें स्नातक, परास्नातक व शिक्षण-प्रशिक्षण संदर्भित समस्त विषयों की पाठ्य पुस्तकें, सन्दर्भ ग्रन्थ एवं विभागीय शोध ग्रन्थ उपलब्ध हैं।
पत्रिका प्रकाशन	:	विद्यार्थियों में अन्तर्निहित प्रतिभा को प्रस्फुटित करने तथा उन्हें रचनात्मक कार्यों से जोड़ने के प्रयोजन से 'सुबोध' पत्रिका प्रत्येक वर्ष प्रकाशित होती है।
स्मारिका प्रकाशन	:	शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या (04 सितम्बर) पर महाविद्यालय सभागार में आयोजित जनपदीय अवकाश प्राप्त शिक्षक सम्मान समारोह की 'स्मारिका' शिक्षा संकाय द्वारा प्रत्येक वर्ष प्रकाशित किया जाता है।
जर्नल फॉर रिसर्च इन गांधीयन स्टडीज शोध पत्रिका प्रकाशन	:	गाँधी दर्शन, व्यक्तित्व व कृतित्व संदर्भित समग्र अध्ययन हेतु पत्र-पत्रिकाएं व पुस्तकों की व्यवस्था महाविद्यालय में सुलभ है। विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों से आमंत्रित राष्ट्रीय स्तरीय उत्कृष्ट शोध प्रपत्रों का संकलन कर प्रतिवर्ष शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम : महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्रओं को भारत की सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराने एवं उसे अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए प्रतिवर्ष धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय पर्व सामूहिक रूप से आयोजित किए जाते हैं।

अनुशासन समिति : महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं में अनुशासन की भावना जागृत करने हेतु अनुशासन समिति गठित है, जिसका मुख्य उद्देश्य महाविद्यालय में अनुशासन की श्रेष्ठ परम्परा स्थापित करना है।

कोर कमेटी : शिक्षक/गैरशिक्षक कर्मचारीगण के क्रियाकलाप पर दृष्टिपात रखने हेतु वरिष्ठता के क्रम में शिक्षकगण को कमेटी का सदस्य मनोनीत किया गया है।

महाविद्यालयीय शैक्षिक/शिक्षणेत्तर क्रिया कलाप

शिक्षक सम्मान समारोह : शिक्षा संकाय के तत्वावधान में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर प्रतिवर्ष जनपद के अवकाश प्राप्त शिक्षकों को सम्मानित किया जाता रहा है। किन्तु सत्र 2020-2021 में वैश्विक महामारी कोविड-19 काल के होने व पूर्व राष्ट्रपति स्व0 प्रणव मुखर्जी के निधन (31 अगस्त, 2020) पर राष्ट्रीय शोक सप्ताह मनाए जाने के कारण 16 फरवरी, 2021 को महाविद्यालय में जनपदीय अवकाश प्राप्त शिक्षकगण को सम्मानित किये जाने हेतु सम्मान समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर महाविद्यालयीय विशिष्टता अर्जित पुरातन छात्र उत्प्रेरक समारोह का आयोजन भी सम्पन्न हुआ।

दीक्षान्त समारोह का आयोजन : शैक्षिक संस्कारों के विकास व संवर्धनार्थ महाविद्यालय द्वारा यथा सम्भव प्रत्येक दूसरे शैक्षिक सत्र में दीक्षान्त समारोह का आयोजन किया जाता है। इस क्रम में महाविद्यालय में 01 मार्च, 2020 को दीक्षान्त समारोह आयोजित हुआ।

राष्ट्रीय सेवा योजना : त्याग, बलिदान व समर्पण की भावना विकसित करने, युवावर्ग को समाज के साथ जोड़ने एवं श्रम की महत्ता स्थापित करने के उद्देश्य से शासन व विश्वविद्यालय द्वारा गठित दो इकाइयां महाविद्यालय में संचालित हैं।

रोवर्स/रेंजर्स : महाविद्यालय में रोवर्स/रेंजर्स प्रत्येक का एक-एक दल कार्यरत है, जिसके माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों को योजना के लक्ष्यों के अनुरूप प्रशिक्षित किया जाता है। प्रतिवर्ष महाविद्यालय का दल जनपदीय एवं विश्वविद्यालयीय समागम में सम्मिलित होकर विविध प्रतियोगिताओं में विजेता व उपविजेता का श्रेय अर्जित कर महाविद्यालय को गौरवान्वित करता रहा है। इसी अनुक्रम में

शैक्षिक सत्र 2020-2021 में 27 व 28 फरवरी, 2021 को महाविद्यालय परिसर में आयोजित विश्वविद्यालयीय रोवर्स/रेंजर्स समागम में महाविद्यालय का रोवर्स दल ने विजेता का श्रेय अर्जित कर राज्य स्तरीय रोवर्स/रेंजर्स समागम में प्रतिभाग करने का अवसर प्राप्त कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया, साथ ही समागम में विविध प्रतियोगिताओं यथा-मार्च पास्ट, पोस्टर, रोल प्ले, लोक नृत्य में प्रथम स्थान प्राप्त किया। रेंजर्स टीम ने मार्च पास्ट व लोक नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर उपविजेता का श्रेय अर्जित की।

खेल-कूद : महाविद्यालय में छात्र/छात्रओं के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकासार्थ पठन-पाठन के साथ-साथ खेल-कूद की समुचित व्यवस्था है। महाविद्यालय परिसर में प्रतिवर्ष बॉलीबाल, फुटबाल, क्रिकेट, बैडमिंटन व अन्य प्रतियोगिताओं के आयोजन सम्पन्न होते हैं। इसी अनुक्रम में शैक्षिक सत्र 2021 में, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय बलिया के संयोजकत्व में महाविद्यालय परिसर में 2-3 फरवरी को अन्तर महाविद्यालयीय दो दिवसीय कबड्डी प्रतियोगिता आयोजित हुई। कबड्डी प्रतियोगिता में महाविद्यालय की बालिका टीम ने उपविजेता का श्रेय अर्जित कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया।

संगोष्ठी आयोजन/अतिथि व्याख्यान : छात्र/छात्रओं के सर्वांगीण विकास व बौद्धिक ज्ञान के परिमार्जनार्थ जनपदीय व विविध विश्वविद्यालयों के विद्वतजनों को आमंत्रित कर प्रतिवर्ष विषय सन्दर्भित अतिथि व्याख्यान कराये जाते हैं।

कवि सम्मेलन व मुशायरा कार्यक्रम : हिन्दी व उर्दू विभाग के तत्वावधान में समय-समय पर क्रमवार कवि सम्मेलन व मुशायरा का आयोजन किया जाता है।

महाविद्यालय में संचालित विशिष्ट योजनाएं

कन्या अभिरक्षा योजना : बालिका सन्तानों की घटती जन्मदर और भविष्य में उससे उत्पन्न होने वाली सामाजिक कुरीतियों को सन्तुलित करने की महाविद्यालय प्रबन्धन की सोच के अनुरूप अपने शैक्षिक/गैर शिक्षक समस्त कर्मचारीगण को कन्या के जन्म लेने पर 'कन्या अभिरक्षा योजना' के अन्तर्गत एक मुश्त रूपये 30000.00 (तीस हजार रूपये मात्र) की धनराशि प्रदान किये जाने की व्यवस्था की गयी है।

छात्र दुर्घटना राहत योजना : महाविद्यालय प्रबन्धन द्वारा महाविद्यालय के समस्त शैक्षिक/गैर शिक्षक कर्मचारीगण तथा संस्थागत छात्र/छात्राओं हेतु 'दुर्घटना राहत योजना' महाविद्यालयीय नियमावली के अनुरूप

संचालित है।

निराश्रितों, असहायों, निस्सहाय विधवाओं एवं विकलांगों/दिव्यांगों को कम्बल वितरण : महाविद्यालय प्रबन्धन प्रत्येक वर्ष शीतकालीन अवधि में क्षेत्र के किसी एक ग्राम सभा का चयन कर उस गाँव में निवास करने वाले निराश्रितों, असहायों, निस्सहाय विधवाओं एवं विकलांगों/दिव्यांगो को कम्बल वितरित कर मानव सेवा की भावना को जागृत करता है। इसी अनुक्रम में शैक्षिक सत्र 2020-21 में दिनांक 24 दिसम्बर, 2020 को ग्राम सभा उसरैला में कम्बल वितरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें 120 निराश्रितों, असहायों, निस्सहाय, विधवाओं, विकलांगों/दिव्यांगों को कम्बल वितरित किया गया।

कुष्ठ रोगियों/दिव्यांगों को आर्थिक सहायता : महाविद्यालय क्षेत्र पंचायत पन्दह में संस्थापित है। महाविद्यालय प्रबन्धन द्वारा पन्दह-परिक्षेत्र के चयनित पात्र कुल 21 कुष्ठ रोगियों/दिव्यांगों को रू0 500 प्रति माह के अनुक्रम में प्रत्येक दूसरे माह रू0 एक हजार की धनराशि उनके व्यक्तिगत खाते में अन्तरित कर समाज में परोपकार की भावना प्रेरित किया जाता है।

विप्लव/आपदा राहत योजना : प्रदेश अथवा राष्ट्र में किसी प्रकार की विप्लव या आपदा की परिस्थिति में महाविद्यालय प्रबन्धन द्वारा यथासम्भव धनराशि संस्तुत कर, चेक के माध्यम से शासन को प्रदत्त किया जाता रहा है। इसी अनुक्रम में 20 मई, 2020 को वैश्विक महामारी कोविड-19 से संक्रमित लोगों के सहायतार्थ रू0 50,000/- (रूपया पचास हजार) धनराशि का चेक मुख्य मंत्री आपदा राहत कोष, उ0प्र0 सरकार, लखनऊ को संप्रेषित किया गया।

सुदूर व शिक्षा से वंचित रहने वाले वनवासी बालक/बालिकाओं को शिक्षा सुलभ कराना : इस योजना के अन्तर्गत महाविद्यालय प्रबन्धन द्वारा सेवा समर्पण संस्थान, रावतपुर गाँव, कानपुर द्वारा संचालित वनवासी विद्यालय विन्दौआ, राय बरेली रोड, मोहनलाल गंज लखनऊ में अध्ययनरत एक वनवासी छात्र का शिक्षण सहित आवासीय कुल वार्षिक व्यय की धनराशि प्रति वर्ष प्रदान किया जाता है।

प्राचार्य की लेखनी से...

मानव निर्माण के इस दौर में शिक्षा माध्यम सशक्त उपकरण का रूप लेते जा रहे हैं। ऐसे समय में स्वाभाविक रूप से शिक्षा की महत्ता गुरूत्तर होती जा रही है। इस मानव जीवन में व्यक्तित्व व जीवन कार्यशैली के सर्वांगीण विकासार्थ शिक्षा की महती आवश्यकता है। शिक्षा मानव निर्माण की एक ऐसी कड़ी है, जिसके माध्यम से समाज का कोई भी मानव मानवीय विलक्षण प्रतिभाओं व सारगर्भित तत्वों से समाविष्ट होकर सामाजिक जन-जागरण में प्रकाश की किरण को प्रस्फुटित करते हुए "तमसो मा ज्योतिर्गमय" की चरितार्थता को सिद्ध कर सकता है।

शिक्षा अनवरत रूप से चलने वाली सचेतन क्रिया के साथ-साथ अनुभव के सतत् पुनर्स्थापन द्वारा जीवन्त रहने की एक सशक्त प्रक्रिया है।

किसी प्रगतिशील व्यक्ति को शिक्षालय के मुख्य द्वार से ही होकर जाना पड़ेगा। डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, कलाविद्, वैज्ञानिक, पत्रकार एवं अधिकारी का निश्चय ही कोई गुरू होगा। ज्ञान एवं विद्यार्थी के बीच में गुरू एक अपरिहार्य कड़ी है। गुरू अपनी गुरूता के कारण गोविन्द से बड़ा है तथा गुरू को कबीर ने कुम्भकार तथा शिष्य को मिट्टी का लोदा माना है।

भारतीय समाज में मूल्यों की अवधारणा तीन ऋणों, माता-पिता व गुरू से ऋण मुक्त को श्रेष्ठ बताया गया है। ऋण से मुक्त होना भारतीय संस्कार की कड़ी है। ऋण ही व्यक्ति को बिखरने से बचाता है। माता-पिता, गुरू ज्ञान की गंगोत्री है। समाज, ज्ञान का वृहत् परीक्षा स्थल है। सफल सामाजिक ज्ञान, सद्ज्ञान एवं परिपक्व ज्ञान का दर्पण है। गुरूओं ने राम, कृष्ण, बुद्ध, गांधी आदि महापुरूषों का निर्माण किया है। शिष्य से गुरू की पहचान होती है, सदज्ञानी गुरू ही महापुरूषों को बना सकता है।

सदगुण एवं अवगुण का सनातन संघर्ष है। राम एवं रावण, कृष्ण एवं कंस दो व्यक्ति नहीं वरन् दो गुणों का संघर्ष है। प्रकाश एवं अन्धकार का अटूट सम्बन्ध है। सम्प्रति, ज्ञान भटक रहा है। बेईमान व्यक्ति ईमानदार व्यक्ति की समीक्षा कर रहा है। न्याय दुर्लभ स्वप्न बनता जा रहा है। सत्य का गला घोंटा जा रहा है। समाज में अवसाद बढ़ रहा है। इस बढ़ते हुए तम को दूर करने का मात्र विकल्प न्यायप्रिय, सम्मानप्रिय, मूल्य परक शिक्षा है। शिक्षा नैतिक शिक्षा से नहीं वरन् आत्म मूल्यांकन परक कर्म में ढालने से आ सकती है। कर्म ज्ञान की कसौटी है। कर्म को जीवन में उतार कर ही हम श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर हो सकते हैं, न कि आलोचना तथा अनर्गल प्रलाप से।

यदि हमें ज्ञान की गंगा को सतत् प्रवाहित करना है तो शिक्षा को जाति, वर्ण, भाषा, राजनीति एवं भ्रष्टाचार से मुक्त कराना होगा। दोष व्यक्ति विशेष पर नहीं वरन् पूरे समाज के विकृत स्वरूप के लिए सभी की भूमिका निर्धारित करनी होगी। विशेषतया उच्च शिक्षा जगत् में शिक्षोन्नयनार्थ शिक्षकों का दायित्व काफी महत्वपूर्ण हो गया है। न केवल पुस्तकीय ज्ञान अपितु इससे इतर शिक्षा की सम्यक् गुणवता व ज्ञान-पुंज के प्रस्फुटन हेतु इन्हें शिक्षा के बहुआयामी वाह्य परिशिष्टों की ओर ध्यानाकृष्ट करना होगा। आपसी मतभेदों, छात्र-राजनीति व कुसंगत नीतियों का परित्याग करना होगा। शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षक, शिक्षा, शिक्षार्थी एवं शिक्षालय को अपना मूल्यांकन कर अपनी भूमिका सिद्ध करनी होगी, ताकि वे ज्ञान के क्षेत्र में मील के पत्थर बन सके।

– डॉ० अशोक कुमार सिंह
प्राचार्य

सम्पादकीय...

आज हम जिस परिवेश एवं वातावरण में जीवन व्यतीत कर रहे हैं, यद्यपि वह देखने में तो अत्यन्त मनोरम है परन्तु यर्थाथतः वह आत्मघाती है। परस्पर सद्भाव, सहिष्णुता एवं संवेदना का नितान्त अभाव है। बेतहाशा बढ़ते हुए औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं तथाकथित आधुनिकीकरण के फलस्वरूप इस आपाधापी के युग में, गलाकाट प्रतिस्पर्धा के दौर में मानवीय मूल्यों में हो रहे क्षरण के परिणाम स्वरूप मानव संवेदन शून्य हो चुका है, शायद इसी का प्रतिफल है वैश्विक महामारी 'कोरोना'।

चीन के वुहान प्रान्त से फैला 'कोरोना वायरस' पूरी दुनिया के लिए परेशानी का सबब बन गया है। पूरी दुनिया दहशत में है। लोगों में इस बिमारी को लेकर आतंक है। इस तरह कोरोना वायरस के संक्रमण को यदि 'कोरोना आतंक' की संज्ञा दी जाय, तो कोई अत्युक्ति नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू0एच0ओ0) ने इस बिमारी को महामारी घोषित किया है। इस महामारी से बचने के लिए स्वयं सुरक्षा की अति आवश्यकता है। जैसे- मास्क का प्रयोग करना, साबुन या सेनेटाइजर से बार-बार हाथ धोना एवं दो गज की शारीरिक दूरी बनाये रखना आदि।

कोरोना वायरस का प्रभाव समूचे विश्व पर पड़ा है। दुनिया के लगभग 193 देश इसकी चपेट में आ चुके हैं तथा अर्थव्यवस्था बुरी तरह जूझ रही है, हम धीरे-धीरे वैश्विक मंदी की तरफ बढ़ रहे हैं। इस वायरस की वजह से कितने देशों में तो लॉक डाउन और कर्फ्यू की स्थिति आ गई है। उद्योग जगत, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र के साथ एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र इस वैश्विक महामारी से बुरी तरह प्रभावित हो रहा है, वह है शिक्षा का। कोनोना जनित यह समय असाधारण मानवीय संकट का समय है।

शिक्षा, विशेषतः उच्च शिक्षा के मूल चरित्र में भी कोरोना संकट के कारण बड़े परिवर्तन की संभावना है। चूँकि अब समाज भी स्वयं को वर्चुअल सोशल स्पेश में बदलने को बाध्य है, ऐसे में शिक्षा के क्षेत्र में भी क्लास रूम की अवधारणा व बर्चुअल होती जाएगी। हम धीरे-धीरे एक ऐसे समाज में बदलते जायेंगे, जहाँ सीधा संवाद लगभग समाप्त हो जाएगा। सबकुछ वर्चुअल, ऑनलाइन एवं डिजिटल टेक्नो संवादो के रूप में ही रह जाएगा।

संभव है कि उच्च शिक्षा का यह नया वर्चुअल रूपान्तरण हमें बेहतरी की ओर ले जाए। सम्भव है, यह शिक्षा के परिक्षेत्र को ज्यादा नवाचारी, समाहारी एवं क्षमता विकास की दिशा में आगे बढ़ाए। किन्तु भारत जैसे समाज में हमें गरीब, उपेक्षित और दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में बसे सामाजिक समूहों में इण्टरनेट रखने, इस्तेमाल करने एवं सतत् कनेक्टिविटी बनाए रखने पर जोर देना होगा।

पृथ्वी पर मानव अपनी ज्ञान की विशिष्टता से समस्त जीवों का राजा है। ज्ञान एक दृष्टि है जिसके माध्यम से हमें व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, भौगोलिक परिस्थितियों एवं वैज्ञानिक दिशाओं आदि का समग्र

अध्ययन करने का अवसर प्राप्त होता है। ज्ञान, अशिक्षा रूपी अन्धकार को दूर कर मानव को प्रकाशवान बनाता है। साधक, साधना, सत्पात्र का संयोग ही ज्ञान को पुष्ट कर स्वस्थ समाज, स्वस्थ व्यक्ति एवं स्वस्थ मन का जनक बन सकता है।

आज देश में उच्च शिक्षा के समक्ष विशालकाय चुनौतियाँ हैं। जिसके समाधान की नितान्त आवश्यकता है। यह समाधान योजनाबद्ध तरीके से ही सम्भव है। हम यह स्वीकार करते हैं कि हमारी उच्च शिक्षा अद्योगामी ही है, जिसके अधःपतन को रोके बिना उन्नयन सम्भव ही नहीं है। वर्तमान में अधःपतन को रोकने के लिए समग्र वैचारिक क्रांति की आवश्यकता है। जिसमें शिक्षक, छात्र एवं अभिभावक के पूर्ण सकारात्मक सहयोग की अपेक्षा है। परिवर्तन आवश्यक है। वाद का प्रतिवाद भी स्वाभाविक है, किन्तु प्रतिवाद के लिए आवश्यकता है- दृढ़ इच्छाशक्ति की, संकल्पयुक्त हस्तक्षेप की। समग्र वैचारिक क्रान्ति के द्वारा ही अधोमुखी उच्च शिक्षा को ऊर्ध्वमुखी किया जा सकता है। शिक्षा का ऊर्ध्वमुखी होना देश के विकास का मूल आधार है।

इसी परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में बदलाव लाने के लिए भारत सरकार द्वारा 'नई शिक्षा नीति-2020 को मंजूरी दी गयी है। जिसे पूरे देश में अगामी सत्र से लागू किया जाना है। नई शिक्षा नीति एक बहु विषयक दृष्टिकोण की प्रासंगिकता पर केन्द्रित है। नई शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की सोच और सृजनात्मक क्षमता को और अधिक बढ़ाकर, सीखने की प्रक्रिया को कुशल बनाने के साथ-साथ जिस भी क्षेत्र में वे रूचि रखते हैं, उसी क्षेत्र में उन्हें प्रशिक्षित कर शिक्षा को रोजगारोन्मुखी बनाना है।

छात्र/छात्राओं में सृजनात्मक प्रतिभा को विकसित करने का 'सुबोध' पत्रिका एक लघु प्रयास है। पत्रिका का प्रस्तुत अंक विद्याव्यसनी प्राध्यापकगण के सारगर्भित विचाराभिव्यक्तियों एवं छात्र/छात्राओं के विविध निबन्धों, कहानियों, गीतों एवं कविताओं आदि से सुसज्जित है। हम उन सभी प्राध्यापकगण, कर्मचारीगण, विद्यार्थियों तथा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सहयोग देने वाले शुभेच्छु बन्धुओं के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हैं जिनके सहयोग एवं प्रतिभा का सुफल है 'सुबोध' का वर्तमान अंक।

– डॉ० अनिल कुमार पाण्डेय

अनुक्रमणिका

क्रमांक	रचनाक्रम	नाम	पृष्ठ संख्या
1.	हिन्दी साहित्य में नारी जागृति	डॉ0 अभय नाथ सिंह	1-4
2.	स्वयं	हेमन्त कुमार शर्मा	5-8
3.	मौत बेरहम है ...	नेहा विश्वकर्मा	9
4.	मैंने भी कुछ सोचा है!	नेहा विश्वकर्मा	9
5.	बचपन	नेहा विश्वकर्मा	9
6.	स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत	डॉ0 अनिल कुमार पाण्डेय	10-11
7.	आसान नहीं है जिन्दगी	संगीता गुप्ता	12
8.	वक्त	रिंकी कुमारी	12
9.	ठिकाना न मिला	रिंकी कुमारी	12
10.	माँ-बाप	श्वेता सिंह	13
11.	अनमोल शायरी	श्वेता सिंह	13
12.	पापा	रितिका यादव	13-14
13.	अनमोल वचन	रितिका यादव	14
14.	"कोशिश करने वालों ...	प्राची राय	14
15.	मोक्ष के संदर्भ में दार्शनिक समरूपता	डॉ0 चन्द्रमा सिंह	15-17
16.	भारतीय संस्कृति,और कोविड-19	अंकित वर्मा	17
17.	जीवन की तीन चीजें	संगीता कुमारी रावत	18
18.	नसीहत	कु0 ममता चौहान	18
19.	कुछ सच्ची बाते	शिल्पी यादव	19-20
20.	सबक	कु0 स्वाती शर्मा	21
21.	Poem	Vandana Prakash	21
22.	भगत सिंह	अम्बुज मिश्र	22-23
23.	पुलवामा आतंकी हमला	सुजीत गुप्ता	24-25
24.	एक बेटी की कहानी	सिब्बा खातून	26
25.	शब्दों का वजन	मदीना खातून	26
26.	माँ	प्रियंका वर्मा	27
27.	वो सुबह कभी तो आएगी?	शबनम खातुन	27
28.	जिन्दगी	पिन्टू कुमार रावत	28
29.	जिन्दगी	कु0 अंकिता राय	28

क्रमांक	रचनाक्रम	नाम	पृष्ठ संख्या
30.	चुटकुले	पिन्टू कुमार रावत	28
31.	भारत-नेपाल सीमावर्ती	डॉ0 रूदल कुमार सिंह	29-32
32.	राधे-राधे	अपराजिता सिंह	32
33.	पर्यावरण संरक्षण	सलोनी शर्मा	33-34
34.	सुविचार	सत्ताक्षी पाण्डेय	34
35.	माँ का प्यार	कु0 विद्योत्मा चौहान	35
36.	डॉ0 भीमराव अम्बेडकर	नीरज कुमार	36
37.	मासूम सी परी	नीरज कुमार	37
38.	जिन्दगी की सच्चाई	कु0 पूजा राजभर	37
39.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में...	नीलम गुप्ता	38-39
40.	परिपक्वता	आकाश सिंह 'विक्रान्त'	40-41
41.	आखिर बहू भी....	माधुरी शर्मा	41-42
42.	मिट्टी के दीये जलाएं	माधुरी शर्मा	42
43.	परिवार और माँ	मधु प्रजापति	43-44
44.	साइबर अपराध	डॉ0 अश्विनी कुमार पाण्डेय	44-45
45.	जय जवान, जय किसान,....	संदीप कुमार	46
46.	क्या बनना है?	संदीप कुमार	46-48
47.	गजल	हिना चौहान	49
48.	अनमोल वचन	हिना चौहान	49
49.	चुटकुले	हिना चौहान	49-50
50.	दोस्ती	ट्विंकल यादव	51
51.	ऋतु गीत	ट्विंकल यादव	51
52.	विदाई गीत	ट्विंकल यादव	51
53.	यह क्यों?	ट्विंकल यादव	52
54.	Great Success Quotes for Student	Km. Kashika Gupta	52
55.	हिन्दी	कु0 कशिका गुप्ता	53
56.	गीत नया गाता हूँ	कु0 कशिका गुप्ता	53
57.	कहीं खो गई हूँ	कु0 कशिका गुप्ता	53
58.	दो शब्द	गुड़िया चौहान	54
59.	कड़वा सच	बिन्दु चौहान	54
60.	प्रेरणादायक विचार	ज्योति मौर्या	54

क्रमांक	रचनाक्रम	नाम	पृष्ठ संख्या
61	अनमोल विचार	ज्योति मौर्या	55
62.	एक सैनिक का जीवन	ज्योति गुप्ता	55
63.	स्वच्छता अभियान	निशा गुप्ता	55
64.	चुटकुला	बिन्दू भारती	56
65.	लड़की हूँ बस इतनी...	मु0 जाफर हुसैन	56
66.	कामयाबी	स्वीटी सिंह	57
67.	बेटियां	स्वीटी सिंह	57
68.	काला कौआ	कु0 प्रतिभा	57
69.	सकारात्मक सोच	कु0 प्रतिभा	57
70.	कर्म	जीतन परवीन	58
71.	कविता	अंशिका यादव	58
72.	प्रेरक शब्द-	अंशिका यादव	58-59
73.	अजन्मी बेटी की पुकार	श्वेता गुप्ता	59
74.	दयानन्द सरस्वती का जीवन दर्शन	डॉ0 शारदा यादव	59
75.	जीवन की सच्चाई	कुसुमलता	60
76.	पीड़ाकारी आँकड़े	संजय कुमार सिंह	60-61
77.	मित्रता	संजय कुमार सिंह	61
78.	शुभ विचार	ज्योती भारद्वाज	61
79.	औरत की सच्चाई	निकहत परवीन	62
80.	सफलता	राधा रानी	62
81.	मंजिल	नितिश कुमार सिंह	62
82.	सच्चाई	प्रिया यादव	63
83.	गम	अंकिता राय	63
84.	जिन्दगी	अंकिता राय	63
85.	The Road Not Taken	Nitu Yadav	64
86.	बेटियाँ	विजय लक्ष्मी गुप्ता	64
87.	शुभ विचार	पूनम यादव	64-65
88.	किताब	चन्दा सोनी	65
89.	बनें हम!	कु0 ममता	65
90.	माँ-बाप	कु0 सोनी प्रजापति	65
91.	नया साल	सबीना जमाल	66

क्रमांक	रचनाक्रम	नाम	पृष्ठ संख्या
92.	वक्त की पुकार	सोनी गुप्ता	66
93.	जिन्दगी	शफक कायनात	66
94.	सुविचार	आंचल गुप्ता	67
95.	2020 की यादें	अम्बुज यादव	67-68
96.	खुश हूँ	कु0 नीतू	68
97.	बचपन	कु0 नीतू	68
98.	सच	विरेन्द्र चौहान	69
99.	सुविचार	कु0 कंचन ठाकुर	69
100.	मैं भारत भाग्य विधाता हूँ	अम्बुज मिश्र	70
101.	सिक्किम राज्य के फूल	प्रियंका वर्मा	71
102.	बेटी होना आसान नहीं	शिवानी सिंह	71
103.	नकारात्मक सोच	राहुल यादव	71
104.	माँ-बाप	गजेन्द्र कुमार रावत	72
105.	कुछ बातें	दुर्गा रावत	72
106.	हम पूर्ण आर्य...	शीतांशु पाठक	72
107.	हम बेटियाँ	सुरभि शर्मा	73
108.	घायल पंख हुए हैं,...	सरुभि शर्मा	73-74
109.	बेटियाँ	ज्योति	75
110.	सपनों की लाठी	नीतू यादव	76
111.	हाँ! मैं खामोश रहना चाहता हूँ	आदित्या सोनी	77
112.	परहित का महत्व	पिंकी भारती	77
113.	कविता	पिंकी भारती	77
114.	संतोषम् परम् सुखम्	कु0 शिम्पी	78
115.	पहेली	प्रभा यादव	78
116.	सुविचार	रितिका वर्मा	79
117.	मंजिल	रितिका वर्मा	79-80
118.	थोड़ा थक सा जाता हूँ..	सरिता यादव	80
119.	जय-जवान, जय-किसान	सरिता यादव	80
120.	तीखे वचन	कु0 अन्जू यादव	81
121.	किताबों का महत्व	कु0 अन्जू यादव	81
122.	Thought	Shweta Shrma	82

क्रमांक	रचनाक्रम	नाम	पृष्ठ संख्या
123.	दुनिया का सबसे कड़वा सच	नितू सिंह कुशवाहा	82
124.	चुटकुले	खुश्बू चौहान	83
125.	दोस्ती	प्रियंका सिंह	84
126.	पहरूए सावधान रहना	अजय कुमार	84
127.	मन की सोच	अनुज कुमार तिवारी	85
128.	नन्हा पौधा	सृष्टि गुप्ता	85
129.	माँ का आँचल	आदर्श कुमार चौहान	86
130.	नव वर्ष का उमंग	अंजली यादव	86
131.	इंसान की सोच	कन्हैया यादव	86-87
132.	माँ	स्वाती सिंह	87
133.	अनमोल बातें	सपना गुप्ता	88
134.	दहेज गीत	आरती गुप्ता	88
135.	सुखी जीवन	कंचन चौहान	89
136.	सच्ची बातें	पूजा वर्मा	89
137.	हकीकत	रंजू	89
138.	दास्तान-ए-औरत	सत्येन्द्र सिंह	90
139.	मर्द हो न...	सत्येन्द्र सिंह	90
140.	पर क्यों ?	सत्येन्द्र सिंह	90-91
141.	किसान आन्दोलन	अनुष्का यादव	91-92
142.	गाँव-गंवार	सारिका वर्मा	92
143.	कोई तुमसे पूछे	सारिका वर्मा	92-93
144.	स्कूल लाइफ	अमित कुमार	93
145.	बचपन	अमित कुमार	94
146.	संघर्ष	सत्यम कुमार यादव	94
147.	हारा नहीं मुसाफिर हूँ	सत्यम कुमार यादव	95
148.	माता-पिता	तन्नू गुप्ता	95
149.	चुटकुला	पूजा वर्मा	96
150.	कामयाबी	शालू गुप्ता	96
151.	बेटी का जवाब	शालू गुप्ता	96-97
152.	धर्म-अधर्म	अंशु यादव	97
153.	ऐसा आसमान दो	अंशु यादव	97

क्रमांक	रचनाक्रम	नाम	पृष्ठ संख्या
154.	भाई सा कोई नहीं	प्रीति राय	98
155.	गज़ल	प्रीति राय	98
156.	बटोही ! धीरे-धीरे चल	प्रतिभा सिंह	98
157.	कन्यादान	कु0 चन्द्रकला वर्मा	99
158.	इ कोरोनवा बीमारिया	अर्पिता सिंह	100
159.	What is life		100
160.	गज़ल	शशि राय	100-101
161.	माँ	शशि राय	101
162.	धैर्य ही सफलता का कारण	सुजीत गुप्ता	101
163.	फरिश्ता	पुष्पा चौहान	102
164.	चुटकुला	पुष्पा चौहान	102
165.	अनमोल वचन	डिम्पल यादव	103
166.	गाँठ बांध लो	डिम्पल यादव	103
167.	चुटकुला	डिम्पल यादव	103
168.	शिक्षा	रूक्मिणी सिंह 'राजपूत'	104-105
169.	हास्य व्यंग्य	रूक्मिणी सिंह 'राजपूत'	105
170.	लड़कियों की जिन्दगी...	मधु सोनी	106-107
171.	ढ़ोंग की जिन्दगी	कु0 किरन चौहान	107

हिन्दी साहित्य में नारी जागृति
(गुप्त, प्रसाद और पंत के काव्य संदर्भ में)

डॉ. अमर नाथ सिंह
असि. प्रोफेसर, हिन्दी

भारतवर्ष में नरों और नारियों के लिए नैतिकता के अलग-अलग नियम थे। पुरुष वेद पढ़ सकता था, किन्तु नारी को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था। बुद्धदेव ने जब यह घोषणा की कि मनुष्य का परम लक्ष्य मोक्ष है और मोक्ष की साधना संन्यास लेकर ही की जा सकती है, तब बहुत-सी नारियों ने भी तथागत से प्रार्थना की कि हमें भी भिक्षुणी होने का अधिकार दिया जाय, किन्तु तथागत ने बहुत दिनों तक नारियों को भिक्षुणी होने का अधिकार नहीं दिया। और अन्त में आनन्द के कहने से जब उन्होंने नारियों को भी भिक्षुणी होने की अनुज्ञा दे दी, तब एक दिन स्वयं उन्होंने पश्चाताप किया कि "आनन्द! मैंने जो धर्म चलाया था, वह पाँच सहस्र वर्षों तक चलने वाला था, किन्तु अब वह केवल पाँच सौ वर्ष ही चलेगा, क्योंकि मैंने नारियों को भिक्षुणी होने का अधिकार दे दिया है।" यही बात जैन संप्रदाय में भी हुई। यद्यपि जैन धर्म में आरम्भ से ही नारियों को भिक्षुणी होने का अधिकार था, किन्तु जब दिगम्बर-संप्रदाय निकला, उसने नारियों के उस अधिकार से वंचित कर दिया जो बिल्कुल स्वाभाविक बात थी। तब से जैन भिक्षुणी केवल श्वेताम्बर संप्रदाय में ही होती है।

वैदिक, अवैदिक, बौद्ध और जैन, वैदिक काल के उपरान्त, कम से कम इस बात में नारियों की उपेक्षा और उन पर अत्याचार, सभी धर्मों ने किया। जब जीवन का सर्वोच्च ध्येय मोक्ष और मोक्ष का उपाय संन्यास हो गया तब समाज के नवयुवक भी पत्नियों को छोड़कर संन्यास लेने लगे। उस विकलतापूर्ण वेदना की कल्पना कीजिए जो उन पत्नियों के हृदय को दग्ध करती होगी, जिनके पति जीवन के सर्वोच्च ध्येय की खोज में उनका त्याग कर रहे थे। वे अपने पतियों की निन्दा नहीं कर सकती थीं, क्योंकि पति तो बहुत बड़े उद्देश्य की सिद्धि के लिए संन्यास लेते थे। दूसरी ओर, वे पतियों के साथ संन्यासिनी भी नहीं हो सकती थीं, क्योंकि वह संन्यास संन्यास नहीं होता जिसमें माया भी संन्यासी के साथ चलती है।

"हाय, मेरे कारण ही छोड़ गए घर वे,
गृहिणी ही त्यागते हैं नर गृह करके।"

कोई आश्चर्य नहीं कि नारियों ने मन-ही-मन अपने को अधम मानना स्वीकार कर लिया। इस प्रकार नारियों पर अत्याचार सभी देशों के पुरुषों ने किया था किन्तु उन पर जैसा अत्याचार भारतवर्ष में हुआ, वैसा कदाचित अन्यत्र नहीं हुआ होगा।

नारियों की अवज्ञा सिखाने वाली इस कुत्सित परम्परा के मूल को भारत में पुनरुत्थान ने हिलाया। पुनरुत्थान आन्दोलन के क्रम में भारतवासियों के भीतर यह अनुभूति जगी कि नारी निन्दा की पात्री नहीं, प्रत्युत पूजा की अधिकारिणी है। इसी आन्दोलन के क्रम में वह परम प्राचीन विश्वास बलोकाई पुनरुज्जीवित हो फिर से प्रचलित हो गया कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।" निवृत्ति के साथ संन्यास और प्रवृत्ति के साथ गार्हस्थ्य की महिमा बढ़ती है। और जब-जब गार्हस्थ्य के गौरव में वृद्धि होती है, नारियों की पद-मर्यादा बढ़ जाती है। पुनरुत्थान ने प्रवृत्ति की जो महिमा जगाई, उससे गार्हस्थ्य गौरवपूर्ण हो उठा और उसके स्वाभाविक परिणाम के रूप में नारी आदरणीय हो उठी।

भारतवासियों के नारी विषयक दृष्टिकोण में परिवर्तन कैसे-कैसे आया, पिछले सौ वर्षों की हिन्दी कविता के अवलोकन से स्पष्ट समझ में आती है। रीतिकालीन कवियों ने नारी को केवल काम-क्रीड़ा का साधन समझा था और इसमें कोई सन्देह नहीं कि नारी को केवल कामिनी मानने से बढ़कर उसकी और कोई

निन्दा नहीं हो सकती-

"भूषण न आप बन सके, मतिराम ही बने,
कामारि आप बन न सके, काम ही बने।
सब और काम भूलकर, रसधाम ही बने,
क्यों राम आप बन न गए, श्याम ही बने?

इसके साथ ही साहित्य में यह विलाप भी सुनायी पड़ने लगा कि भारत के पुरूषों ने ही नारियों को अशिक्षित, अपाहिज और पंगु बना रखा है। नारी नर की समकक्षिणी एवं उसका पूरक अंश है, यह अनुभूति ठीक उसके बाद ही उत्पन्न होने लगी।

"क्या दोष उनका, किन्तु जो उनमें गुणों की है कमी?
हा! क्या करें वे, जबकि उनको मूर्ख रखते हैं हमीं।
विद्या हमारी भी न तब तक काम में कुछ आएगी,
अर्धांगियों को भी सुशिक्षा दी न जब तक जाएगी।"

और उसके बाद तो नारी के प्रति पुरूष की उदारता और न्याय भावना का द्वार ही उन्मुक्त हो गया। यहाँ तक की छायावाद के आते-आते हिन्दी में यह भाव जग पड़ी कि नारी नर से श्रेष्ठ है, वह पुरूष में प्रेरणा भरने वाली शक्ति है, वह विश्व की रमणीयता में वृद्धि करने वाली किरण है तथा यह उचित है कि हम उसकी आराधना किंचित इस भाव से भी करें कि वह स्वप्नों की देवी है, जिसे पुष्प तो अर्पित किया जा सकता है, किन्तु अपनी उंगलियों के स्पर्श से उसे कलंकित बनाना पाप है-

"न छू सकते जिसको हम देवि!
कल्पना वह तुम अगुण, अमेय,
भावना अन्तर की वह गूढ़
रही जो युग-युग अकथ अगेय।"

प्रसाद ने कामायनी में नारी के जिस रूप की कल्पना की है, वह उसका निष्कलुष रूप है। उनका ध्येय पाठकों को नारी के उस आभ्यंतर सौन्दर्य से परिचित कराना है जो नारी के चर्म और मांस में नहीं प्रत्युंत्त उसकी आत्मा में बसता है। जो वासना नहीं, अर्चना का विषय है, जिससे पुरूष भोग और तृप्ति नहीं, प्रेरणा और स्फुरता की प्राप्ति करता है, जिसे छूने की इच्छा तो जगती है, किन्तु उस इच्छा का पर्यवसान स्पर्श नहीं, स्फूर्ति में होता है-

"स्पर्श के आकर्षण से पूर्ण प्रकट
करती ज्यों जड़ में स्फूर्ति।"

छायावाद ने नारी को केवल सौन्दर्य बोध की दृष्टि से देखा। इसीलिए वह उसे सौन्दर्य की अकलुष प्रतिमा, चंद्रमा की मुसकान, जुही की माला और सपनों की शोभा मानकर रह गया। कामायनी में श्रद्धा आरम्भ में मनु का गुरू, फिर पत्नी और अन्त में पराशक्ति बन जाती है। नारी के सम्बन्ध में प्रसाद के अपने जो विचार हैं, वे लज्जा के मुख से कहलाये हैं-

"नारी! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पगतल में,
पीयूष स्रोत सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में।

प्रसाद जी नारी से यह तो कहते हैं कि तुम रूपवती होने के कारण दिव्य हो। अतः हम तुम्हें कल्पना के मन्दिर में स्थापित करके तुम्हारी अर्चना करेंगे, किन्तु वह नारी स्वातंत्र्य के सभी पक्षों की ओर नहीं देखते, क्योंकि स्वातंत्र्य पाने के लिए नारी यदि खेतों और कारखानों में काम करने लग जायेगी तो उनकी त्वचा कड़ी हो जाएगी, उसके शरीर में स्वर्ण के स्थान पर ताम्र निकल आएगा और ऐसा प्रतीत होने लगेगा, मानों सपने धरती पर उतर कर पसीना बहा रहे हों। और सपनों को प्रस्वेदयुक्त होना छायावाद को पसन्द नहीं था। अतएवं उसने नारी की प्रशंसा का उत्कोच देना आरम्भ किया। युग-युग की वन्दिनी नारी इस नवीन उत्कोच से प्रसन्न हो रही हैं। जो नारियां इस रोमांटिक उत्कोच से प्रसन्न होती हैं, उनमें अपनी स्वतंत्रता का पूरा मूल्य चुकाने की शक्ति नहीं है। असली स्वतंत्रता आर्थिक होती है और आर्थिक स्वतंत्रता तब तक प्राप्त नहीं हो सकती जब तक पसीना न बहाया जाय।

नारियों को रोमांस की दृष्टि से केवल प्रसाद

और रवीन्द्रनाथ ने ही नहीं देखा, इस विषय में स्वयं प्रेमचन्द जी की दृष्टि भी रोमासयुक्त है। एक स्थान पर उन्होंने लिखा है कि-"नर जब नारियों के गुण सीखता है तब वह देवता बन जाता है, किन्तु नारियां जब पुरूषों के गुण सीखती हैं तब वे राक्षसी हो जाती हैं।" यह विचित्र बात है-नरों में ऐसे कौन से गुण हैं जो नारियों को राक्षसी बना देंगे? वस्तुस्थिति यह है कि नर और नारी में परस्पर एक दूसरे का गुण आ जाय तो सभ्यता की कमजोरियां कम होंगी। उदाहरणार्थ, यदि नारियां पुरूषों के समान मेहनती और साहसी हो जाएं तो उनके स्वावलम्बन में वृद्धि होगी और पुरूष भी यदि नारियों से भीरूता सीख लें तो वह, कम से कम अनावश्यक विनाश से तो बच ही सकता है। किन्तु श्रद्धा की दृष्टि इतनी दूर तक नहीं जाती। वह तो जीवन को रोमांस की दृष्टि से देख रही है। पुरूष के अधीन होकर रहना कोई गौरव की बात नहीं है। किन्तु इस अधीनता में भी एक सुख है जिसे रोमांसवादी नारी नहीं छोड़ सकती। सर्वस्व समर्पण करके विश्वास के महावट के नीचे पड़े रहने में बड़ी शान्ति है, बड़ा आनन्द है-

"यह आज समझ तो पायी हूँ, मैं दुर्बलता में नारी हूँ,
अवयव की सुन्दर कोमलता लेकर मैं सबसे हारी हूँ।
पर, मन भी क्यों इतना ढ़ीला अपने ही होता जाता है!
घनश्याम-खंड-सी आँखों में क्यों सहसा जल भर आता है?
सर्वस्व समर्पण करने की विश्वास-महातरू-छाया में,
चुपचाप पड़ी रहने की क्यों ममता जगती है माया में?

इस रोमांसकारी चिन्तन का प्रभाव यह हुआ कि पुरूषों और नारियों के क्षेत्र परस्पर भिन्न माने जाने लगे। धूप, पत्थर, साहस, शूरता, निर्दयता और स्वार्थ से सम्बन्ध पुरूषों से माना जाने लगा तथा चांदनी, नदी, फूल, भीरूता, दया और त्याग नारियों के मत्थे मढ़ दिये गए। इस विभाजन का जो परिणाम निकला उसके कारण मर्दाना मर्दों और औरतानी औरतों की संख्या दिन-प्रति-दिन विशाल होती जा रही है।

जयशंकर प्रसाद ने स्त्रियों को यद्यपि छायावादी दृष्टि से देखा है किन्तु श्रद्धा और इड़ा नारियां ठीक-ठीक औरतानी औरतों का प्रतिनिधित्व नहीं करतीं। इड़ा तो बिल्कुल नहीं, क्योंकि वह ऐसी नारी है जिसने पुरूषों के गुण सीखे हैं किन्तु श्रद्धा औरतानी औरत के कुछ अधिक समीप है, बल्कि कहना चाहिए कि उसके भीतर से यदि पराशक्तिवाला रूप प्रकट न होता तो वह शुद्ध औरतानी औरत होती।

वास्तव में छायावाद नारी समस्या पर इस दृष्टि से विचार नहीं करता था कि नारी पुरुष के साथ समकक्षता कैसे प्राप्त कर सकती है। वह नारी को समस्त भव्य प्रेरणाओं का उद्‌गम मानता था। वह उसे जीवन पर फैली हुई चांदनी और स्वप्नों की प्रतिमा कहता था और उसकी चेष्टा थी कि नारी कोमल, मृदुल, मोहिनी और आकर्षक बनी रहे, जिससे पुरूष उसे देखकर अपनी क्लान्ति भूलने में समर्थ हो। स्पष्ट ही, यह आग्रह पुरूष की वासना की तृप्ति का आग्रह था। किन्तु 'युगवाणी' के बाद से पन्त जी इस छायावादी संस्कार से निकलने लगे। 'रजतशिखर' का युवक जब युवती को छायावादी शैली में अपने प्रेम की याद दिलाता है तब युवती उससे कहती है-

"जो भी समझो, वह केवल कैशोर प्रणय था!
अभी नहीं छूटी क्या मुग्ध तुम्हारे मन से
मेहंदी की लाली-सी वह कैशोर भावना
जिसने निज यौवन-उन्मुख प्रच्छन्न राग से
उद्‌गारों की कीर्ति तुम्हारे मुख से सुनकर
मेरा मन अवसन्न, हृदय उद्विग्न हो उठा।"

और तब युवक को भी यह ज्ञान होता है कि काम की शुद्धि के बिना जीवन की वास्तविक सुन्दरता नहीं निखर सकती-

"काम शुद्ध कांचन की प्राणोज्वलता से ही
जीवन शोभा की प्रतिमा हो सकती निर्मित।

किन्तु, यह काम शुद्धि होगी कैसे? उसका एक उपाय काम को प्रेम पर आधारित करती है, जिसकी अभिव्यक्ति पंत जी के विचार काव्य में अनेक स्थलों पर पायी जाती है।

"प्रीतिपाश में बंध सुन्दरता काम-भीति से हो अकलंकित।
स्वस्थ हृदय तारूण्य प्रणय को करे युग्म निज अर्पित।
बहता स्निग्ध स्पर्श प्राण में अमर चेतना-सा नव।
उर को होता चिर-प्रतीति की मधुर मुक्ति का अनुभव।"

किन्तु, केवल प्रेम क्या यथेष्ट है? प्रेम की सार्थकता इतनी ही मानी जा सकती है कि उससे कामाचार निर्दोष हो जाता है। प्रेम भावना है और भावनाएं अन्ततः ज्ञान का ही अंग होती है। किन्तु स्वस्थ जीवन के लिए ज्ञान और कर्म, प्रेम और कर्तव्य दोनों का समन्वय चाहिए। नर-नारी परस्पर प्रेम के बन्धन में बंधे रहें, यह तो ठीक है, किन्तु स्वस्थ काम की स्थिति उन्हें तब भी प्राप्त नहीं हो सकती। मनुष्य का मानसिक स्वास्थ्य काम को याद रखने में नहीं, उसे भूल जाने में है। इसका सरल उपाय यह है कि नर और नारी श्रम का कोई काम करें, समाज को अपनी सेवाएं अर्पित करने में लग जायं, तभी काम का स्वस्थ रूप प्रकट हो सकता है।

अतएव नर-नारी-समस्या का जो समाधान रोमांटिक कवियों और चितकों ने दिया है, वह किसी काम का नहीं है। इस समस्या का श्रेष्ठ समाधान वह है जिसकी ओर गांधी और मार्क्स ने संकेत किया है। यह समाधान 'ग्राम्या' की "मजदूरनी के प्रति" कविता में स्पष्ट परिलक्षित होता है-

"तुम प्रिय हो मुझे, न छूती तुमको काम-लाज।
कुलवधू-सुलभ संरक्षणता से हो वंचित,
निज बन्धन खो तुमने स्वतंत्रता की अर्जित।
स्त्री नहीं, आज मानवी बन गयी तुम निश्चित,
जिसके प्रिय अंगों को छू अनिलातप पुलकित।"

पंत जी का यह नवीन दर्शन भूत और आत्मा के संघर्ष से उत्पन्न हुआ है। जीवन के भौतिक रूप को ग्रहण करने की प्रक्रिया में वे नारी को ग्रहण करते हैं और आत्मा के विकास की प्रक्रिया में वे नर-नारी सम्बन्ध को किसी उच्च धरातल पर अवस्थित करना चाहते हैं। यह उच्च धरातल उन्हें निश्छल प्रेम में दिखायी देता है जो एक सीमा तक उचित है।

संक्षेपतः पिछले सौ वर्षों में जिस वैचारिक आन्दोलन ने नारियों के उत्थान को संभव किया, उसके तीन सोपान दिखायी देते हैं। पहले तो नारियों के प्रति सहानुभूति जगी, तब नर-नारी समानता के भाव जगने लगे और तीसरे सोपान पर पहुंचकर नारी विद्रोह पूर्वक अपने अधिकार मांगने लगी। इस दृष्टि से गुप्त जी का भाव जगत पहले दो सोपानों का भाव जाग्रत है। उन्होंने नारी जाति के प्रति अपनी निश्छल सहानुभूति प्रकट करके पुरूषों के भीतर यह प्रेरणा जाग्रत की कि हमें स्वेच्छया नारियों को उनके अधिकार समर्पित कर देने चाहिए। यहीं गांधी मार्ग है। किन्तु सहानुभूति यदि विफल हुई, यदि नारी पुरूषों के हृदय से वज्र-कपाट को गलाने में असमर्थ रही तो विद्रोह का आश्रय लेना पड़ सकता है, जिसकी अभिव्यक्ति गुप्त जी ने इस प्रकार की है-

"व्यथित हो रहा मेरे कारण सारा स्त्री संसार है,
मुझ पर कृपा, कोप स्वामी पर करता बारंबार है।
कहता है, नारी पर नर का कितना अत्याचार है!
लगता है, विद्रोह मात्र ही अब इसका प्रतिकार है।"

किन्तु विद्रोह के ये स्फुलिंग प्रायः आकस्मिक रूप से छिटके हैं। वस्तुतः सहनशीलता ही नारी का परम धर्म है। और इसी गुण से नारी नर को जीत सकती है।

"नारी लेने नहीं, लोक में देने ही आती है,
अश्रु शेष रखकर वह उनसे प्रभु पद धो जाती है।
पर, देने में विनय न होकर जहाँ गर्व होता है,
तपस्त्याग का पर्व हमारा वहीं खर्व होता है।"

[illegible]

आत्मा क्या है?

तुम्हें और मुझे ही आत्मा कहा जाता है। तुम्हारे और हमारे ही नाम रखे जाते हैं। जब हम शरीर छोड़ देते हैं तो कुछ लोग तुम्हें या मुझे भूतात्मा नाम देते हैं और कुछ लोग कहते हैं कि इ़सत आत्मा का स्वर्गवास हो गया है। मैं हूँ यह बोध ही हमें आत्मवान बनाता है ऐसा वेद, गीता और पुराणों में लिखा है।

"न तो यह शरीर तुम्हारा है और न ही तुम इस शरीर के हो। यह शरीर पाँच तत्वों से बना है-अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी और आकाश। एक दिन यह शरीर इन्हीं पाँच तत्वों में विलीन हो जाएगा।" - गीता

वेद-पुराण और गीता के अनुसार आत्मा एक शरीर धारण कर जन्म और मृत्यु के बीच नए जीवन का उपयोग करती है और पुनः शरीर के जीर्ण होने पर शरीर छोड़कर चली जाती है। आत्मा का यह जीवन चक्र तब तक चलता रहता है जब तक कि वह मुक्त नहीं हो जाती या उसे मोक्ष नहीं मिलता।

प्रत्येक व्यक्ति, पशु, पक्षी, जीव-जन्तु आदि सभी आत्मा हैं। व्यक्तिश: यह समझना कि मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ। यह आत्मज्ञान के मार्ग पर रखा गया पहला कदम है।

आत्माएं कितने प्रकार की होती हैं?

आत्मा के तीन स्वरूप माने गए हैं-जीवात्मा, प्रेतात्मा और सूक्ष्मात्मा। जो भौतिक शरीर में वास करती है उसे जीवात्मा कहते हैं। जब इस जीवात्मा का वासना और कामनामय शरीर में निवास होता है तब उसे प्रेतात्मा कहते हैं। यह आत्मा जब सूक्ष्मतम् शरीर में प्रवेश करता है, उसे सूक्ष्मात्मा कहते हैं।

84 लाख योनियां -

पशु योनि, पक्षी योनि, मनुष्य योनि में जीवन यापन करने वाली आत्माएं मरने के बाद अदृश्य भूत-प्रेत योनि में चली जाती हैं। आत्मा के प्रत्येक जन्म द्वारा प्राप्त जीव रूप को योनि कहते हैं। ऐसी 84 लाख योनियां हैं, जिसमें कीट-पतंगे, पशु-पक्षी, वृक्ष और मानव आदि सभी शामिल हैं।

हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार जीवात्मा 84 लाख योनियों में भटकने के बाद मनुष्य जन्म पाती है।

84 लाख योनियां निम्नानुसार मानी गयी हैं-

पेड़-पौधे-30 लाख, कीड़े-मकौड़े-27 लाख, पक्षी-14 लाख, पानी के जीव-जन्तु-9 लाख, देवता, मनुष्य, पशु-4 लाख, कुल योनियां 84 लाख।

आत्मा शरीर किस तरह छोड़ती है?

शरीर साधारणतः वृद्धावस्था में जीर्ण होने पर नष्ट होता है, परन्तु बीच में कोई आकस्मिक कारण उपस्थित हो जाए तब अल्पायु में ही शरीर त्यागना पड़ता है। जब मनुष्य मरने को होता है तो उसकी समस्त बाहरी शक्तियाँ एकत्रित होकर अन्तर्मुखी हो जाती है और फिर आत्मा स्थूल शरीर से बाहर निकल पड़ती है।

मुख, नाक, आँख, कान प्राण उत्सर्जन के प्रमुख मार्ग हैं। दुष्ट-वृत्ति के लोगों के प्राण मल-मूत्र के मार्ग से निकलते देखे गए हैं। योगी और सत्कर्मी में यह आत्मा ब्रह्मरन्ध्र से प्राण त्याग करती है।

शरीर छोड़ने के बाद आत्मा क्या करती है?

मृतात्मा स्थूल शरीर से अलग होने पर सूक्ष्म शरीर में प्रविष्ट कर जाती है। यह सूक्ष्म शरीर ठीक स्थूल शरीर की ही बनावट का होता है, जो दिखाई नहीं देता। खुद मृतात्मा को भी इस शरीर के होने की बस अनुभूति होती है लेकिन कुछ आत्माएं ही इस शरीर को

देख पाती है।

इस दौरान मृतक को बड़ा आश्चर्य लगता है कि मेरा शरीर कितना हल्का हो गया है और मैं हवा में पक्षियों की तरह उड़ सकता हूँ। स्थूल शरीर छोड़ने के बाद आत्मा अपने मृतक शरीर के आस-पास ही मंडराती रहती है। उसके शरीर के आस-पास एकत्रित लोगों से वह कुछ कहना चाहती है लेकिन कोई उसकी सुनता नहीं है।

मृत आत्मा खुद को मृत नहीं मानकर अजीब सी व्यवहार भी करती है। वह अपने अंग-प्रत्यंगों को हिलाती-डुलाती है, हाथ-पैर को चलाती है, पर उसे ऐसा अनुभव नहीं होता कि वह मर गयी है। उसे लगता है कि शायद यह स्वप्न चल रहा है। लेकिन उसका भ्रम मिट जाता है तब वह पुनः मृत शरीर में घुमने का प्रयास करती है लेकिन वह उसमें सफल नहीं हो पाती।

जब तक मृत शरीर की अन्त्येष्टि क्रिया नहीं होती है, तब तक जीव बार-बार उसके शरीर के पास मंडराता रहता है। जला देने पर वह उसी समय निराश होकर दूसरी ओर मन को लगाने लग जाता है, किन्तु जमीन में दफन कर देने पर वह शरीर का मोह नहीं छोड़ पाता और बहुत दिनों तक उसके इधर-उधर फिरा करता है।

अधिक मोह माया के बन्धन में अद्‌भुत रूप से अधिक दृढ़ता से बंधे हुए मृतक प्रायः श्मशानों में बहुत दिनों तक चक्कर काटते रहते हैं। शरीर की ममता बार-बार इधर खींचती है और वे अपने को सम्भालने में असमर्थ होने के कारण उसी के आस-पास रूदन करते रहते हैं। कई ऐसे होते हैं जो शरीर की अपेक्षा प्रियजनों से अधिक मोह करते हैं। वे मरघटों के स्थान पर प्रिय व्यक्ति के निकट रहने का प्रयत्न करते हैं। इस मामले में उनकी धारणा कार्य करती है कि वह किस तरह की धारणा और विश्वास लेकरी मरे हैं।

मरने या शरीर छोड़ने के बाद कहाँ जाती है आत्मा?

पुराणों के अनुसार जब भी कोई मनुष्य मरता है या आत्मा शरीर को त्यागकर यात्रा आरम्भ करती है तो इस दौरान उसे तीन प्रकार के मार्ग मिलते हैं। उस आत्मा को किस मार्ग पर चलाया जाएगा। यह केवल उसके कर्मों पर निर्भर करता है। ये तीन मार्ग हैं-अर्चि मार्ग, धूम मार्ग और उत्पत्ति-विनाश मार्ग।

अर्चि मार्ग ब्रह्मलोक और देवलोक की यात्रा के लिए होता है, वहीं धूम मार्ग पितृलोक की यात्रा पर ले जाता है और उत्पत्ति विनाश मार्ग नर्क की यात्रा के लिए है। हालांकि सभी मार्ग से गई आत्माओं को कुछ काल भिन्न-भिन्न लोक में रहने के बाद पुनः मृत्यु लोक में आना पड़ता है। अधिकतर आत्माओं को भी यहीं जन्म लेना और यहीं मरकर पुनः जन्म लेना होता है।

यजुर्वेद में कहा गया है कि शरीर छोड़ने के पश्चात् जिन्होंने तप ध्यान किया है वे ब्रह्मलोक चले जाते हैं अर्थात् ब्रह्मलीन हो जाते हैं। कुछ सत्कर्म करने वाले भक्त जन स्वर्ग चले जाते हैं। अर्थात् वे देव बन जाते हैं। राक्षसी कर्म करने वाले कुछ प्रेत योनि में अनन्तकाल तक भटकते रहते हैं और कुछ पुनः धरती पर जन्म ले लेते हैं। जन्म लेने वालों में भी जरूरी नहीं कि वे मनुष्य योनि में ही जन्म लें। इससे पूर्व ये सभी पितृलोक में रहते हैं, वहीं उनका न्याय होता है।

सामान्यजनों ने देह त्यागा है तो इस मामले में उनकी धारणा कार्य करती है कि वे किस तरह की धारणा और विश्वास लेकर मरे हैं, तब वे उसी अनुसार गति करते हैं। जैसे बचपन से यह धारणा मजबूत है कि मरने के बाद कोई यमदूत लेने आएंगे तो उसे सच में ही यमदूत नजर आते हैं। लेकिन जिनको यह विश्वास दिलाया गया है कि मरने के बाद व्यक्ति गहरी नींद में चला जाता है तो ऐसे लोगा सच में ही नींद में चले जाते हैं।

जानिए कैसा है आत्मा का रंग?

शास्त्र के अनुसार हमारे शरीर में सात प्रकार के चक्र स्थित हैं। ये सातों चक्र हमारे सात प्रकार के शरीर से जुड़े हुए हैं। सात शरीर में से प्रमुख है तीन शरीर-भौतिक, सूक्ष्म और कारण। भौतिक शरीर लाल

रक्त से सना है जिसमें लाल रंग की अधिकता है। सूक्ष्म शरीर सूर्य के पीले प्रकाश की तरह है और शरीर नीला रंग लिए हुए है।

कुछ ज्ञानी जन मानते हैं कि नीला रंग आज्ञा चक्र का एवं आत्मा का रंग है। नीले रंग के प्रकाश के रूप में आत्मा ही दिखाई पड़ती है और पीले रंग का प्रकाश आत्मा की उपस्थिति को सूचित करता है। आचार्य श्रीराम शर्मा के अनुसार-"पाश्चात्य योगियों का मत है कि जीव का सूक्ष्म शरीर बैगनी रंग की छाया के लिए शरीर से बाहर निकलता है। भारतीय योगी इसका रंग शुभ्र ज्योतिस्वरूप सफेद मानते हैं।"

आत्मा के लिए कौन सा महत्वपूर्ण दिन है?

भाद्रपद की पूर्णिमा एवं आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से अमावस्या तक का समय पितृपक्ष कहलाता है। इस पक्ष में मृत पूर्वजों का श्राद्ध किया जाता है। पितृपक्ष में पितरों की मरण-तिथि को ही उनका श्राद्ध किया जाता है। सर्वपितृ अमावस्या को कुल के उन लोगों का श्राद्ध किया जाता है जिन्हें हम नहीं जानते हैं।

क्या इच्छा अनुसार जन्म और मृत्यु ले सकते हैं?

अपनी इच्छा से शरीर त्यागना आसान है लेकिन इच्छा से शरीर धारण करना मुश्किल। फिर भी जो व्यक्ति इच्छा से शरीर छोड़ना सीख जाता है वह इच्छा अनुसार जन्म भी ले सकता है।

इच्छा मृत्यु शब्द का सर्व प्रथम उल्लेख महाभारत में मिलता है जिसका अर्थ अपनी मर्जी से मृत्यु का वरण करना यानि शरीर का त्याग कर देना। भीष्म पितामह ने तीरों की शैय्या पर लेटकर अपनी इच्छा से मौत को बुलाया था।

शास्त्रानुसार जीव स्वयं अपनी इच्छा, भाव और कर्म से संस्कारों के वशीभूत होकर जन्म ग्रहण करता है। लेकिन यह इच्छा भाव उसके जीवन पर्यन्त किए गए कर्म और भोगे गए दुःख-सुख से उपजते हैं जिसका उसे भी ज्ञान नहीं होता। ये बीज रूप में मृत्यु के साथ चले जाते है और व्यक्ति फिर वही जन्म लेता है जैसे कि उसका पिछला जन्म निर्धारित करता है। इसे समझना बहुत आसान है, यह बिल्कुल गणित के प्रश्न जैसा है, जिसे हल किया जा सकता है। अधिकतर लोग प्रकृति के इस नियम से बंधे रहकर जन्म लेते हैं। लेकिन बहुत कम लोग ही हैं, जो जन्म स्थान चयन करके ही जन्म लेते हैं। शंकराचार्य को परकाय प्रवेश सिद्धि प्राप्त थी। ऐसे व्यक्ति ही अपनी इच्छा से कहीं पर भी जन्म ले सकता है। किसी के गर्भ में प्रवेश कर सकता है।

मौत का अनुभव और शरीर में आत्मा कहाँ रहती है?

मृत्यु का करीबी अनुभव करने वाले लोगों के अनुभवों पर तथा उसे आधार मानकर दो प्रख्यात वैज्ञानिकों ने मृत्यु के अनुभव पर एक सिद्धान्त प्रतिपादित किया है। प्राणी की तंत्रिका प्रणाली से जब आत्मा को बनाने वाला क्वांटम पदार्थ निकलकर व्यापक बह्माण्ड में विलीन होता है तो मृत्यु जैसा अनुभव होता है।

इस सिद्धान्त के पीछे विचार यह है कि मस्तिष्क में क्वांटम कम्प्यूटर के लिए चेतना एक प्रोग्राम की तरह काम करती है। यह चेतना मृत्यु के बाद भी ब्रह्माण्ड में परिव्याप्त रहती है।

'डेली मेल' की खबर के अनुसार एरिजोना विश्वविद्यालय में एनेस्थिसियोलॉजी एवं मनोविज्ञान विभाग के प्रोफेसर एमरेट्स एवं चेतना अध्ययन केन्द्र के निदेशक डॉ0 स्टुवर्ट हेमेराफ ने इस अर्द्ध धार्मिक सिद्धान्त को आगे बढ़ाया है। यह परिकल्पना चेतनता के उस सिद्धान्त पर आधारित है जो, उन्होंने एवं ब्रिटिश मनोविज्ञानी सर रोजर पेनरोस ने विकसित की है।

इस सिद्धान्त के अनुसार हमारी आत्मा का मूल स्थान मस्तिष्क की कोशिकाओं के अन्दर बने ढ़ाचों में होता है जिसे माइक्रोट्यूबुल्स कहते हैं। दोनों वैज्ञानिकों का तर्क है कि इन माइक्रोट्यूबुल्स पर पड़ने

वाले क्वांटम गुरूत्वाकर्षण प्रभाव के परिणाम स्वरूप हमें चेतनता का अनुभव होता है।

वैज्ञानिकों ने इस सिद्धान्त को आर्वेक्स्ट्रेड आब्जेक्टिव रिडक्शन (आर्च-ओर) का नाम दिया गया है। इस सिद्धान्त के अनुसार हमारी आत्मा मस्तिष्क में न्यूरॉन के बीच होने वाले सम्बन्ध से कहीं व्यापक है। दरअसल इसका निर्माण उन्हीं तन्तुओं से हुआ है जिससे बह्माण्ड बना था। यह आत्मा काल के जन्म से ही व्याप्त थी।

'डेली-मेल' के अनुसार यह परिकल्पना बौद्ध एवं हिन्दुओं की इस मान्यता से काफी मिलती जुलती है कि चेतनता ब्रह्माण्ड का अभिन्न अंग है। इन परिकल्पना के साथ डॉ0 स्टुवर्आ हेमराफ कहते हैं कि मृत्यु जैसे अनुभव में माइक्रोट्यूबुल्स अपनी क्वांटम अवस्था गंवा देते हैं। लेकिन इसके अन्दर के अनुभव नष्ट नहीं होते। आत्मा केवल शरीर छोड़ती है और ब्रह्माण्ड में विलीन हो जाती है।

डॉ0 हेमराफ का कहना है कि हम कह सकते हैं कि दिल धड़कना बन्द हो जाता है। रक्त का प्रवाह रूक जाता है। माइक्रोट्यूबुल्स क्वांटम सूचना नष्ट नहीं होती। यह नष्ट नहीं हो सकती। यह महज व्यापक ब्रह्माण्ड में वितरित एवं विलीयित हो जाती है।

उन्होंने कहा कि यदि रोगी बच जाता है तो यह क्वांटम सूचना माइक्रोट्यूबुल्स से वापस चली जाती है तथा रोगी कहता है कि उसे मृत्यु जैसा अनुभव हुआ है। हेमराफ यह भी कहते हैं कि यदि रोगी ठीक नहीं हो पाता और उसकी मृत्यु हो जाती है तो यह सम्भव है कि क्वांटम सूचना शरीर के बाहर व्याप्त है।

कैसे याद कर सकते हैं पिछले जन्म की बातों को? जाति स्मरण का प्रयोग-

जब चित्त स्थिर हो जाए अर्थात् मन भटकना छोड़कर एकाग्र होकर स्वांसो में ही स्थिर रहने लगे तब जाति स्मरण का प्रयोग करना चाहिए। जाति स्मरण के प्रयोग के लिए ध्यान को जारी रखते हुए आप जब भी बिस्तर पर सोने जाएं तब आँखे बन्द करके उल्टे क्रम में अपनी दिनचर्या के घटनाक्रम को याद करें। जैसे सोने से पूर्व आप क्या कर रहे थे फिर उससे पूर्व क्या कर रहे थे तब इस तरह की स्मृतियों को सुबह उठने तक ले जाएं।

दिनचर्या का सतत् क्रम जारी रखते हुए 'मेमोरी रिवर्स' को बढ़ाते जाएं। ध्यान के साथ इस जाति स्मरण के साथ अभ्यास जारी रखने से कुछ माह बाद जहाँ स्मरण शक्ति बढ़ेगा, वहीं नए-नए अनुभवों के साथ पिछले जन्म को जानने का द्वार भी खुलने लगेगा। जैन धर्म में जाति स्मरण के ज्ञान पर विस्तार से उल्लेख मिलता है। इस प्रयोग के पूर्व ध्यान का अभ्यास जरूरी है।

संसार में अच्छी बात कहने वालों की कमी नहीं है परन्तु मनुष्य के सामाजिक संगठन में ही कहीं कुछ ऐसा बड़ा दोष रह गया है जो मनुष्य को अच्छी बात सुनने और समझने से रोक रहा है। इसलिए आज की सबसे बड़ी समस्या यह नहीं है कि अच्छी बात कैसे कही जाय, बल्कि यह है कि अच्छी बात को सुनने और मानने के लिए मनुष्य को कैसे तैयार किया जाए?

-आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

मौत बेरहम है

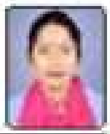

[illegible]
[illegible]

बड़े ही प्यार से मुझे नहलाया जा रहा था,
था मैं नींद में और मुझे इतना सजाया जा रहा था।
बड़े ही प्यार से मुझे नहलाया जा रहा था।
न जाने वो कौन सा था, अजब खेल मेरे घर में,
बच्चों की तरह मुझे कंधे पे उठाया जा रहा था।
था पास मेरे, मेरा हर अपना उस वक्त,
फिर भी मैं, हर किसी के मुंह से बुलाया जा रहा था।
जो कभी देखते भी न थे, मोहब्बत की निगाह से,
उनके दिल से भी, प्यार मुझ पे लुटाया जा रहा था।
मालूम नहीं हैरान था, हर कोई मुझे सोते हुए देखकर,
ज़ोर-ज़ोर से रो कर हंसाया जा रहा था।

कांप उठी मेरी रूह, मेरा वो मकान देखकर,
पता चला अब मुझे, दफनाया जा रहा था।
वो महल जिन में भी, वो मेरा मंजर देखकर,
जहाँ मुझे हमेशा के लिए सुलाया जा रहा था।
मुहब्बत की इंतहा थी, जिन दिलों में मेरे लिए,
उसी घर से आज मैं, एक पल में भुलाया जा रहा था,
था मैं नींद में और मुझे इतना सजाया जा रहा था,
बड़े ही प्यार से मुझे नहलाया जा रहा था।

मैंने भी कुछ सोचा है!

हाँ .... मैंने भी कुछ सोचा है ऐसा,
वक्त अगर पीछे लौटे, मैं भी उसके साथ चलूँ।
कुछ राह अधूरी छोड़ी थी
कुछ मंजिल यूँ ही छूटी थी,
कुछ वचन उधारे थे जाने
कुछ कसमें यूँ ही खाई थी।
कुछ निभा लिए रो-रो कर के
कुछ हंस कर तोड़े थे वादे,
मैं उनको जा कर फिर देखूँ
मौजूद हैं क्या वो घड़ियाँ अब?
या साँसें वो भी तोड़ चुकी।
हाँ .... मैंने भी कुछ सोचा है ऐसा।
वक्त अगर पीछे लौटे, मैं भी उसके साथ चलूँ।
कुछ थी लकीर सी हाथों में
कोई अजब पुराना नगमा था,
सबने बोला ये किस्मत है
मैंने चाहा इसको बदलूँ।
सब ने मुझको ये समझाया,
बेकार की तेरी हसरत है।
मैं उसको जाकर फिर देखूँ,
तकदीर क्या अब भी बाकी है?
या हाथों को वो छोड़ चुकी।
हाँ .... मैंने भी कुछ सोचा है ऐसा,
वक्त अगर पीछे लौटे, मैं भी उसके साथ चलूँ।

बचपन

उठ जाता हूँ भोर से पहले, सपने सुहाने नहीं आते,
अब मुझे स्कूल न जाने वाले, बहाने बनाने नहीं आते।
कभी पा लेते थे घर से, निकलते ही मंजिल को,
अब मीलों सफर करके भी, ठिकाने नहीं आते।
मुंह चिढ़ाती है खाली जेब, महीने के आखिर में,
अब बचपन की तरह, गुल्लक में पैसे बचाने नहीं आते।
यूं तो रखते हैं बहुत से लोग, पलकों पर मुझे,
मगर बेमतलब बचपन की तरह गोदी उठाने नहीं आते।
माना कि जिम्मेदारियों की, बेड़ियों में जकड़ा हूँ,
क्यूं बचपन की तरह छुड़वाने, वो दोस्त पुराने नहीं आते।
बहला रहा हूं बस दिल को बच्चों की तरह,
मैं जानता हूं फिर वापस बीते हुए जमाने नहीं आते।

स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत अभियान : एक दूरदर्शिता

डॉ. अनिल कुमार [illegible]
शिक्षाविद, [illegible]

जब भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2014 के स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 'स्वच्छता अभियान' की शुरुआत की, तो कुछ लोगों को लगा था कि यह योजना थोड़ी बहुत प्रगति के साथ महज तस्वीर खिंचवाने का अवसर साबित होगी। स्वतंत्र भारत के इतिहास में यह एक ऐसी योजना है, जिसे देश के लोगों ने सरकार से छीनकर उसे 'जनता के आंदोलन' में बदल दिया। जब इस अभियान का ऐलान किया गया था तो भारत में ग्रामीण इलाकों में सफाई का कवरेज 39 फीसदी था। प्रधानमंत्री ने स्वच्छ भारत को लेकर लक्ष्य तय करते हुए ऐलान किया था कि जब हम 2019 में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती मनाएंगे, तब तक भारत को 'खुले में शौच से मुक्त' कर दिया जाएगा। यह प्रतीक काफी सही था, क्योंकि गांधी जी स्वच्छता पर काफी जोर देते थे। इस योजना के चार साल पूरे होने के बाद स्वच्छता का कवरेज 39 फीसदी से बढ़कर शानदार 92 फीसदी पर पहुंच चुका है। यह लक्ष्य हासिल करना आसान नहीं था। इसमें लोगों का तौर-तरीका बदलने का मामला शामिल था। शुरू में ग्रामीण इलाकों में कई लोग इस बदलाव के लिए इच्छुक नहीं थे।

हालांकि, यह 'जनता का आंदोलन' आज 'महिलाओं के आंदोलन' में बदल गया है और ग्रामीण महिलाएं इस आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। हम सभी जानते हैं कि महिला की गरिमा और सम्मान के लिए निजी शौचालय की दरकार थी। हालांकि, भारत की महिलाएं अब इस अभियान की लाभार्थी की भूमिका से आगे बढ़कर इसको लेकर नेतृत्व करने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। उदाहरण के तौर पर शौचालयों के निर्माण में हमेशा से पुरुषों का एकाधिकार जैसा रहा है। हालांकि, कई राज्यों में हजारों ग्रामीण महिलाओं को स्वयं-सहायता समूहों की मदद से राजमिस्त्री की तरह प्रशिक्षित किया गया है और वे अब राज्य को खुले में शौच से मुक्त करने में अहम योगदान कर रही हैं। शौचालयों के निर्माण के जरिये महिलाएं रोजी-रोटी कमा रही हैं और परिवार की आय में बढ़ोतरी कर रही हैं।

शौचालय के उपयोग में स्वच्छता भी एक शक्तिशाली स्वास्थ्य सेवा योजना है। वैश्विक विशेषज्ञों का मानना है कि 2019 तक जब देश खुले में शौच से मुक्त होगा, तब तक स्वच्छ भारत अभियान से 3 लाख लोगों की जिंदगी बचाई जा सकेगी। देश के कई हिस्सों में शौचालयों को 'इज्जत घर' नाम दिया गया है। ऐसा पहली बार हुआ है, जब शौचालय निर्माण के अभियान का विषय 'राष्ट्रीय एजेंडे' में प्रमुखता से अपनी जगह बना चुका है। यह आम चर्चा का विषय बन गया है। सरकार ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए जरूरी धनराशि उपलब्ध कराया है। यह योजना देश की ग्रामीण आबादी विशेषकर महिलाओं का जीवन स्तर सुधारने में काफी मददगार साबित होगी।

ग्रामीण सड़कें, ग्रामीण विद्युतीकरण, ग्रामीण आवास योजना, शौचालय और सस्ती दर पर अन्न के साथ रसोई गैस कनेक्शन जैसी सुविधाओं से देश के ग्रामीण गरीबों के जीवन स्तर में बड़े पैमाने पर सुधार होगा। इसके अलावा, 'आयुष्मान भारत' योजना अब पूरी तरह से लागू हो जाएगा, तो यह देश की ग्रामीण आबादी के जीवन स्तर को बदल कर रख देगा। 'आयुष्मान भारत' के अन्तर्गत प्रत्येक परिवार को 5 लाख का स्वास्थ्य बीमा देने की बात है।

गंगा को निर्मल बनाने के उद्देश्य से मौजूदा सरकार द्वारा 2015 में शुरू किये गये 'नमामि गंगे' कार्यक्रम ने इस दिशा में अच्छी प्रगति की है। गंगा को स्वच्छ बनाकर उसका पुनरोद्धार करने के लिए 2014 में

एक नया मंत्रालय गठित किया गया और 2015 में 20,000 करोड़ रुपये के परिव्यय से 'नमामि गंगे' नाम का महत्वपूर्ण कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। इस कार्यक्रम को लागू करने की जिम्मेदारी 'राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन' को सौंपी गयी जिसे पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 के तहत 2016 में और अधिक अधिकार सौंपकर प्राधिकरण घोषित किया गया है। इसके अलावा 2017 में राज्य और जिला गंगा समितियों की भी स्थापना की गयी है।

इस कार्यक्रम के तहत सन् 2015 से 2020 तक की अवधि के लिए 20,000 करोड़ रुपये की धनराशि का प्राविधान किया गया है जो गंगा को स्वच्छ बनाने के इतिहास में अब तक किया गया सबसे बड़ा आवंटन है। कार्यक्रम के तहत अब तक 22,238 करोड रुपये लागत की 240 परियोजनाएं पहले ही स्वीकृत की जा चुकी हैं। इन परियोजनाओं में जल-मल के निस्तारण के लिए सीवेज लाइनें बिछाना, नदी-घाटों और श्मशान घाटों का निर्माण, रिवरफ्रंट का विकास, नदी की सतह की सफाई, संस्थागत विकास, जैव-विविधता संरक्षण, वृक्षारोपण और ग्रामीण स्वच्छता जैसे कार्य शामिल है। इनमें से 64 परियोजनाएं पूरी भी हो चुकी हैं और बाकी निर्माण के विभिन्न चरणों में हैं। गंगा की मुख्यधारा के किनारे बसे 97 ऐसे शहरों और कस्बों की पहचान की गयी है जिनमें 3603 एमएलडी सीवेज शोधन क्षमता पैदा होने का अनुमान लगाया गया है (2035 के लिए अनुमानित) जबकि इन कस्बों की मौजूदा सीवेज शोधन क्षमता केवल 1651 एमएलडी की ही है। जिसे कार्यक्रम के अंतर्गत बढ़ाया जाएगा। इन 97 शहरों, कस्बों में हरिद्वार, कानपुर, इलाहाबाद, फर्रुखाबाद, वाराणसी, पटना, भागलपुर, कोलकाता और हावड़ा भी शामिल है जहां से नदी में सबसे अधिक प्रदूषण फैलता है। इनमें बड़े पैमाने पर जलमल शोधन संयंत्र स्थापत किये जा रहे हैं।

स्वच्छ, स्वस्थ, सर्वत्र-

स्वच्छ, स्वस्थ, सर्वत्र , वर्धित स्वच्छता के जरिए बेहतर स्वास्थ्यप्रद परिणाम हासिल करने और स्वस्थ जीवनचर्या के बारे में जागरूकता बढ़ाने के उद्‌देश्य से स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय तथा पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय की एक संयुक्त पहल है। इसका उद्‌देश्य दो पूरक कार्यक्रमों-स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम) और कायाकल्प के बीच अधिक समन्वय रखना है।

इस योजना के तीन प्रमुख उद्‌देश्य हैं:-

1. उन ग्राम पंचायतों को खुले में शौच से मुक्त बनाने में सहयोग करना, जहाँ कायाकल्प पुरस्कृत प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र स्थित हैं।
2. खुले में शौच से मुक्त खण्डों में स्वच्छता के उच्च स्तर हासिल करने के लिये राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अधीन 10 लाख रुपये की सहायता से कायाकल्प मानदंड पूरा करने के उद्देश्य से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का सुदृढ़ीकरण करना।
3. ऐसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों से नामांकित व्यक्तियों को जल, स्वच्छता और साफ-सफाई (धुलाई) में प्रशिक्षण द्वारा क्षमता निर्माण।

इस पहल के अधीन, तकनीकी सहायता और 10 लाख रुपये की सहायता राशि द्वारा स्वच्छता के मानदंडों का पालन करते हुए 'कायाकल्प पुरस्कार' के लिये कार्य में सहायता करने हेतु खुले में शौच से मुक्त खण्ड़ों में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के सुदृढ़ीकरण के लिये धनराशि आबंटित की गई है। साथ ही सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में साफ-सफाई और स्वच्छता के प्रति जागरूकता हेतु कार्य करने की अपेक्षा होती है ताकि पंचायतें खुले में शौच से मुक्त का दर्जा हासिल करने के लिए सामूहिक प्रयास करें।

आसान नहीं है जिन्दगी

[illegible]

भाई की लाडली हूँ और हर फिक्र से अनजान,
माँ का सपना और हूँ पिता का अभिमान,
पर क्या जानती हूँ, पर क्या जानते हैं आप,
जब भी तो इन परियों की हद कमरे से बाहर
कभी उड़ान नहीं होती
और जितना सोचते हैं हम लड़कियों की जिन्दगी
उतनी आसान नहीं होती।
जन्म लेते ही माँ इनकी शादी का गहने जुटाने लगती है,
क्या सही है, क्या गलत, ये समझाने लगती है,
देखो तुम लड़की हो अपना ध्यान रखना,
जमाने को बदलना मुमकिन नहीं, इसलिए कपड़ों
का खास ध्यान रखना।

वक्त

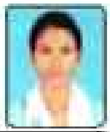

[illegible]

वक्त ऐसा चीज है, जो दोबारा लौट कर नहीं आता। इसलिए हमें वक्त को खोना नहीं चाहिए और समय का सदा उपयोग करना चाहिए। क्योंकि जो वक्त गुजर जायेगा, वह कभी वापस नहीं आयेगा। इसलिए वक्त को सबसे बड़ा दौलत कहा गया है। एक मिनट की कीमत उनसे पूछिए जिनकी रेलगाड़ी स्टेशन पहुँचने से पहले छूट जाती है। अर्थात् वक्त को हमें अपने जीवन में अहमियत समझना चाहिए।

वक्त है दौलत बड़ी,
वक्त से चलती घड़ी,
वक्त जो जाता गुजर,
आता नहीं फिर लौटकर।
वक्त जो खोते नहीं,
पछता के वे रोते नहीं,
इसलिए वक्त कभी ना खोना।
और पछता कर कभी ना रोना।

ठिकाना न मिला

सात सागर पार करके भी, ठिकाना न मिला।
सौ साल प्यार करके भी, निशाना न मिला।।

कई जन्मों से बिछड़े थे, एक माँ से हम।
दूसरी माँ के आँचल में, फिर छिपाना न मिला।।

पीढ़ियाँ खेली है रे देश! तेरी गोद में।
फिर भी हमें तेरी ममता, का नजारा न मिला।।

हमने बंजर में खिला दिये, रंगीन फूल।
तेरी पूजा के लिए, दो फूल चढ़ाना न मिला।।

खून पसीने से बनाया था, जन्नत का चमन।
इसके किसी डाल पर भी, आशियाना न मिला।।

हम तो पागल हो गये, मंजिलों की खोज में।
इतनी भटकन के बाद भी, कोई ठिकाना न मिला।।

हमने क्या पाप किया, समझ में आता नहीं।
वर्षों की लगन था हमें, कोई खजाना न मिला।।

माँ-बाप

[illegible]
[illegible]

किसी ने कहा है दोस्तो! माँ और बाप क्या हैं।
मैंने सहम कर जवाब दिया।
जो डाँटकर मना ले वो बाप
और जो रुला के खुद भी रो दे,
वो माँ है। मुझे छाँव में रखा खुद जलते रहे धूप में।
मैंने देखा एक फरिश्ते को पिता के रूप में।

दरअसल माँ-बाप को लात मारने की प्रथा
औलाद माँ के पेट में ही शुरू कर देती है।
फर्क सिर्फ इतना है,
पेट में लात मारती
तो माँ-बाप फूले नहीं समाते।
और अब बुढ़ापे में लात मारती है
तो आँसू रोके नहीं रुकते।

जब नोटों का रंग बदला
तो कई लोगों की जान निकल गई।
जरा सोचिए!
जब औलाद रंग बदलती है
तो माँ-बाप पे क्या गुजरती होगी।

अनमोल शायरी

मेरे लहजे में जरा भी हुजूर नहीं था,
इसके अलावा मेरा कोई कसूर नहीं था।
असल में वही जीवन की चाल को समझता है,
जो पत्थर में फूल को गुलाल समझता है।
झूठ है, छल है, कपट है, जंग है, तकरार है,
सोचता रहता हूँ अक्सर क्या यही संसार है।
खुशियों का सूर्य जो ढलने लगता है,
मुकद्दर भी उसका पलटने लगता है।
है जिनके पास अपने, तो वो अपनों से झगड़ते हैं,
नहीं जिनका कोई अपना, वो अपनों को तरसते हैं।
तजुर्बे ने एक बात सिखाई है,
एक नया दर्द ही पुराने दर्द की दवाई है।
नारी त्याग की मूरत है, तो पुरुष संघर्ष की सूरत है,
कैसे कहूँ महान किसी को
दोनों एक दूसरे की जरूरत हैं,
कुछ लोग मोम की तरह
पिघल कर रिश्ता निभाते हैं,
और कुछ लोग आग बनकर उन्हें जलाते ही जाते हैं।

माँ तो जन्नत का फूल है।
प्यार करना उसका उसूल है।
दुनिया की मोहब्बत फिजूल है।
माँ की हर दुआ कबूल है।
माँ को नाराज करना तेरी भूल है।
माँ के कदमों की मिट्टी जन्नत की धूल है।

पापा

[illegible]
[illegible]

आज भी याद आते हैं बचपन के वो दिन
जब उंगली मेरी पकड़ कर आप ने चलना सिखाया।
इस तरह जिन्दगी में चलना सिखाया
कि जिन्दगी की हर कसौटी पर
मैंने आपको अपने करीब पाया।
बेमतलब की इस दुनिया में वो ही हमारी शान है,
किसी शख्स के वजूद की
'पिता' ही पहली पहचान है।
बिना उसके न एक पल भी गंवारा है।
पिता ही साथी है, पिता ही सहारा है।
भगवान का दिया हुआ सबसे
कीमती एक नजारा है।

कुछ और नहीं बस मेरे पापा आप ही हैं....

पापा का प्यार निराला है,
पापा के साथ रिश्ता न्यारा है,

इस रिश्ते जैसा कोई और नहीं
यही रिश्ता दुनिया में सबसे प्यारा है।

अनमोल वचन

1. भगवान कहते हैं...
   - किसी को तकलीफ देकर मुझसे अपनी खुशी की दुआ मत करना,
   - लेकिन अगर किसी को एक पल की खुशी देते हो, तो अपनी तकलीफ की फिक्र मत करना।
2. वक्त भी सिखाता है और अध्यापक भी,
   - पर दोनों में फर्क सिर्फ इतना है कि अध्यापक सिखा कर इम्तेहान लेता है, और वक्त इम्तेहान लेकर सिखाता है।
3. बचपन के आठ साल मुझे उंगली पकड़कर जो माँ-बाप स्कूल ले जाते थे, उस माँ-बाप को बुढ़ापे में आठ साल सहारा बनकर मंदिर ले जाना, शायद थोड़ा सा तेरा कर्ज, थोड़ा सा तेरा फर्ज पूरा होगा।
4. ये जरूरी तो नहीं कि इंसान हर रोज मंदिर जाए बल्कि ......
   - कर्म ऐसा होने चाहिए कि इंसान जहाँ भी जाए मंदिर वहीं बन जाए।
5. हाथ और दिमाग को सम्भाल कर रखिये.....
   - क्योंकि "हाथ" छन्द में और "दिमाग" घमण्ड में काम नहीं करता।

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

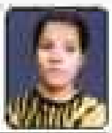

[illegible]
[illegible]

लहरों से डर कर, नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की, कभी हार नहीं होती।

नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है।

मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।

आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा जाकर खाली हाथ लौट आता है।

मिलते न सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में।

मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।

जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम।

कुछ किये बिना ही, जय जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

मोक्ष के संदर्भ में दार्शनिक समरूपता

डॉ० [illegible] सिंह
[illegible]

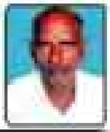

भारतीय दर्शन के प्रत्येक सम्प्रदाय का अन्तिम लक्ष्य आत्यन्तिक दुःख निवृत्ति है- एक ऐसी अवस्था की प्राप्ति जिसमें समस्त दुःखों का अवसान हो जाये। इस अवस्था को विभिन्न दर्शनों में अलग-अलग नाम दिये हैं, किन्तु सामान्यतः मोक्ष, मुक्ति, अपवर्ग, कैवल्य, निर्वाण आदि शब्द इसी अवस्था को घोतित करते हैं। इससे जन्म-मरण के चक्र सदैव के लिए विरत होकर दुःखों का समूल उच्छेदन हो जाता है।

मोक्ष प्राप्ति हो जाने पर जीवात्मा की क्या अवस्था होगी? वह अपने स्वरूप में स्थित हो जायेगा या ब्रह्मरूप हो जायेगा या वह अज्ञान नष्ट हो जाने से स्वयं ब्रह्म ही हो जायेगा अथवा यह विज्ञान सन्तति निर्वाण होते ही अस्तित्व विहीन हो जायेगा? मोक्ष या निर्वाण की स्थिति आनन्दपूर्ण या समस्त प्रकार के अनुभवों से रहित है। इन प्रश्नों के उत्तर में दर्शनों के भिन्न-भिन्न मत हैं। मोक्ष के स्वरूप के विषय में मतभेद होते हुए भी इतना निर्विवाद है कि एक स्थिति ऐसी अवश्य है, जिसको पाने के लिए तत्वज्ञान की प्राप्ति आवश्यक है तथा दीर्घकाल तक निश्चित साधना पद्धति का अवलम्बन अपेक्षित है। उस स्थिति को पा लेने पर पुनः जन्म-मरण के बन्धन में नहीं आना होगा, फलतः दुःख की अनिवार्यता सदैव के लिए समाप्त हो जायेगी।

डॉ० धर्मेन्द्र शास्त्री ने लिखा है कि प्रत्येक भारतीय दर्शन अपने प्रतिपाद्य विषय में मोक्ष को उद्देश्य मानकर प्रवृत्त होता है। भारतीय दर्शन की उस प्रवृत्ति पर कतिपय पाश्चात्य आलोचकों का आक्षेप है कि भारतीयों की प्रवृत्ति निराशावादी रही है तथा वे इस लोक को छोड़कर परलोक तथा किसी दूसरी दुनिया की ओर अभिमुख रहे हैं। मोक्ष का अर्थ है- मानव जीवन की भौतिक परिस्थितियों के बन्धन से, जिनमें मनुष्य जकड़ा हुआ है- छूट जाना। यह मनुष्य के जीवन का भौतिक आवश्यकताओं से परे एक ऐसा अलौकिक आदर्श है, जो कि प्रत्येक प्रतिभाशाली मनुष्य के अन्दर सब देशों और सब कालों में पाया जाता है। केवल भारत के दार्शनिकों ने इसको स्पष्ट और निश्चित रूप से समझकर इसे दर्शनशास्त्र का लक्ष्य माना था।

डॉ० दासगुप्त का कथन है कि वास्तव में भारत में एक बड़ी गहन धार्मिक अभिलाषा रही है कि मनुष्य मोक्ष को प्राप्त करे और आत्मानुभूति का आनन्द उठाये-इसी भावना के चक्र से छूटकर मोक्ष की प्राप्ति भारतीय दर्शनों का अन्तिम लक्ष्य है तथा इसी ओर उनकी प्रमुख प्रवृत्ति रही है।

जैन दर्शन में मोक्ष का तात्पर्य है-जीवन की अजीव से मुक्ति। बन्ध के कारणों के अभाव होने पर तथा संचित कर्मों की निर्जरा होने से समस्त कर्मों का समूल उच्छेद होने पर जीव को मोक्ष की प्राप्ति होती है। मोक्ष आत्मा की शून्यावस्था नहीं वरन् उस परम आनन्द में उसका प्रवेश है, जिसका अन्त नहीं है। यह शरीर से वियोग तो है किन्तु वे लम्बी व छोटी, न काली न नीली न कड़वी न मीठी, न ठण्डी न गरम होती है। शरीर-रहित, पुनर्जन्म से भी रहित, वह देखती है, जानती है, किन्तु उसका सादृश्य कुछ भी नहीं है। जिसके द्वारा मुक्तात्मा के स्वरूप को जाना जा सके।

बौद्ध दर्शन के सभी सम्प्रदाय निर्वाण का प्रतिपादन करते हैं। सामान्यतः निर्वाण के विषय में इस प्रकार की धारणा है कि शब्दों के द्वारा निर्वाण का निर्वचन नहीं किया जा सकता। यह असंस्कृत धर्म है। अतः न तो इसकी उत्पत्ति है, न विनाश है, न परिवर्तन है। इसकी अनुभूति अपने ही अन्दर स्वतः की जा सकती है। इसी कारण इसे प्रत्यात्मवेद्य कहा गया है।

अष्टांग मार्ग के द्वारा निर्वाण की प्राप्ति होती है। निर्वाण में व्यक्तित्व का सर्वथा विरोध हो जाता है।

न्याय सूत्रों में दुःखों की आत्यान्तिक निवृत्ति को 'अपवर्ग' कहा गया है। सभी प्रकार के दुःखों की सदैव के लिए समाप्ति अपवर्ग या मोक्ष है। तत्तवज्ञान के द्वारा जब मिथ्याज्ञान नष्ट हो जाता है तो राग, द्वेष आदि दोष दूर हो जाते है। दोषों की समाप्ति होने से जन्म या बन्धन भी समाप्त हो जाता है। जन्म-मरण का चक्र टूट जाने से दुःखों की आत्यान्तिक निवृत्ति हो जाती है। यही स्थिति अपवर्ग या मोक्ष है। वैशेषिक सूत्र में कहा गया है कि सभी प्रकार के कर्मों की समाप्ति पर आत्मा का शरीर से सम्बन्ध विच्छिन्न हो जाता है। जन्म-मरण के चक्र की भी समाप्ति हो जाती है तथा सभी दुःख अनन्त काल के लिए नष्ट हो जाते हैं। यहीं मोक्ष है।

पुरूष का प्रकृति के साथ संयोग बन्धन है तथा वियोग मोक्ष है। पुरूष तथा प्रकृति के भेद का ज्ञान जब तक नहीं होता तब तक बन्धन की स्थिति रहती है, भेद ज्ञान को जाने पर मोक्ष प्राप्ति हो जाती है। जिस प्रकार नर्तकी दर्शकों का मनोरंजन करके रंग गंध से तुरन्त निवृत्त नहीं हो जाती उसी प्रकार विवेक ज्ञान होने के तुरन्त बाद ही पुरूष पूर्णतः मुक्त नहीं हो जाता। जब प्रारब्ध कर्म भी समाप्त हो जाते हैं, तब यह शरीर छूट जाता है तथा नित्य कैवल्य प्राप्त हो जाता है। अष्टांग योग के अभ्यास से कैवल्य-प्राप्ति होती है। निरंतर योगाभ्यास के द्वारा बुद्धि शुद्ध हो जाती है, तब वह प्रकृति में लय होने लगती है, जहाँ से उसका विकास हुआ था। पुरूष को यह ज्ञान हो जाता है कि मन आदि से उसका सम्बन्ध अज्ञान पर आधारित था।उस सम्बन्ध के समाप्त होते ही पुरुष को कैवल्य प्राप्त हो जाता है।

यद्यपि जैमिनी तथा शबर ने मोक्ष के विषय में विचार नहीं किया है, किन्तु परवर्ती मीमांसक मोक्ष का विवेचन करते हैं। प्रभाकर के मत में धर्म तथा अधर्म के सर्वथा नष्ट हो जाने का नाम मोक्ष है। धर्म तथा अधर्म धर्म तथा अधर्म पुनर्जन्म का कारण बनते हैं। अतः इनकी पूर्णतः समाप्ति मोक्ष-प्राप्ति के लिए आवश्यक है। धर्म तथा अधर्म का विलोप हो जाने के कारण जो शरीर की समाप्ति है, वहीं मोक्ष है। केवल ज्ञान से मुक्ति नहीं प्राप्त हो सकती, कर्म भी सर्वथा समाप्ति से ही मोक्ष प्राप्त होता है। मोक्ष सुख-दुःख आदि से पूर्णतः रहित अवस्था है। ज्ञानयुक्त कर्म मोक्ष-प्राप्ति में सहायक होते हैं। शंकराचार्य मोक्ष के स्वरूप का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि "यह परमार्थ है, कूटस्थ, नित्य है, आकाश के समान सर्वव्यापी है, सभी विकारों से शून्य है, नित्य तृप्त है, अवयवों से रहित है, स्वभाव से स्वयं प्रकाश है, यह ऐसी स्थिति है जहाँ तक पाप और पुण्य अपने कार्य के साथ त्रिकाल में भी नहीं पहुँच सकते। अविद्या का नाश होने पर जीवात्मा स्वतः प्रकाशित हो जाता है, जैसे मालिन्य से रहित होने पर स्वर्ण अपनी स्वाभाविक चमक को प्राप्त कर लेता है अथवा जैसे- बादलों से रहित आकाश में रात्रि में नक्षत्र प्रकाशित होते हैं। मोक्ष की अवस्था में आत्मा अपने यथार्थ स्वरूप को धारण कर लेता है। मोक्ष कोई उत्पन्न वस्तु नहीं है। यदि वह कर्म द्वारा उत्पन्न वस्तु होती तो उसके लिए किसी शारीरिक, वाचिक या मानसिक क्रिया की आवश्यकता पड़ती। परन्तु इनमें से कोई भी क्रिया किसी नित्य वस्तु की उत्पत्ति नहीं कर सकती। प्रत्येक उत्पन्न वस्तु नाशवान् है। मोक्ष को नाशवान नहीं माना जा सकता, इसलिए वह उत्पन्न वस्तु भी नहीं है। मोक्ष विकार भी नहीं है। यदि वह विकार होता तो वह नित्य नहीं हो सकता था। संसार में कोई भी विकार नित्य नहीं होता। अतः कर्म से मोक्ष प्राप्त नहीं होती, केवल तत्तज्ञान से ही मुक्ति होती है। आत्मज्ञान के उदय होने के उपरान्त मोक्ष प्राप्त हो जाता है, किन्तु शरीर कुछ समय तक बना रहता है। यह जीवन मुक्ति की दशा है। जिस प्रकार पूर्ण वेग संस्कार के कारण कुम्हार का चक्र चलाना बन्द कर देने पर भी कुछ देर तक चलता रहता है, इसी प्रकार पूर्व

संस्कारवश कुछ समय तक शरीर बना रहता है, उसकी भी समाप्ति हो जाने पर विदेह मुक्ति हो जाती है। मोक्ष के स्वरूप का विवेचन भी विवादास्पद विषय है किन्तु पूर्वोक्त दुःख निरोध की एक शाश्वत अवस्था के रूप में मोक्ष का अस्तित्व इन सभी दर्शनों में स्वीकृत है।

भारतीय संस्कृति और कोविड-19

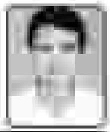

- अंकित शर्मा

"सीने में जलन, आँखों में तूफान सा क्यों है
इस शहर में हर शख्स परेशान-सा क्यों है"

स्वास्थ्य आज के समय की एक बहुत बड़ी चुनौती है। स्वास्थ्य से तात्पर्य शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य दोनों से है। जिन्दगी की भागदौड़ में हम प्रायः यह भूल जाते हैं कि हमारे खान-पान तथा हमारे व्यवहार शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव असर डालेगा। खान-पान के सम्बन्ध में हम बात करें तो जो भी चीज हम खाते हैं जैसे रोटी, चावल, सब्जी यह कहीं न कहीं रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक दवाओं से प्रभावित है। हम चाहकर भी इन रसायनों के प्रयोग से परहेज नहीं कर सकते क्योंकि बढ़ती जनसंख्या और उनका पेट भरना हमारी प्राथमिक जिम्मेदारी है। लेकिन हम थोड़ा सा अपने दैनिक जीवन में योग और ध्यान को शामिल कर ले तो हम समस्याओं से निजात पा सकते हैं।

कोरोना (COVID 19) महामारी पूरे विश्व को संकट में डाल दिया था। अभी भी हम इस महामारी से पूरी तरह नहीं निकल पाये हैं। इस महामारी ने अर्थ व्यवस्था, शासन-प्रशासन के सामने एक प्रश्न के रूप में सामने आयी है। त्यौहारों को मनाने का स्वरूप भी बहुत हद तक बदल गया है। बच्चे से बूढ़े लोग एक सीमित दायरे में रहने के लिए मजबूर हो गये हैं जिसके कारण वे पारिवारिक तनाव और अवसाद के शिकार हुए हैं।

पश्चिमी देशों का अनुसरण करते हुए हम अपनी प्राचीन एवं भारतीय खान-पान को छोड़ते जा रहे थे परन्तु कोरोना जैसी महामारी विश्व को एक बार पुनः भारतीय परम्पराओं जैसे हाथ जोड़कर अभिवादन, तुलसी, अदरक का काढ़ा, हल्दी, दूध का सेवन, नियमित योग और ध्यान को अपनी दिनचर्या में शामिल करने के लिए मजबूर किया है। भारतीय संस्कृति पर अगर गौर किया जाए तो हम पायेंगे कि इसमें विज्ञान पहले से ही समाहित है या हम कह सकते हैं कि आधुनिक विज्ञान भारतीय संस्कृति का ही परिणाम है।

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक ईरानी, यूनानी, तुर्क, मंगोल, यूरोपियन देशों ने भारत में शासन किया किन्तु वे भारतीय संस्कृति को प्रभावित नहीं कर पाये बल्कि वे खुद प्रभावित हो गये।

"यूनान मिस्र रूमां सब मिट गये जहाँ से,
अब तक मगर है बाकी नामोनिशां हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा।"

अतः हम भारतीय संस्कृति से सीख लेकर उसको हम अपने दैनिक दिनचर्या में शामिल कर लें तो बहुत सारी समस्यायें अपने आप ही समाप्त हो जायेंगी।

भारतीय होने के कारण ये हमारी नैतिक जिम्मेदारी है कि हम अपनी संस्कृति संजोकर रखें और दूसरों को भी इसके संरक्षण के लिए प्रेरित करें।

जीवन की तीन चीजें

[illegible]

1. तीन चीजें हमेशा दर्द देती है-
   1. गरीबी 2. यादें 3. धोखा

2. तीन चीजें हर पल पराई होती है।
   1. औलाद 2. दौलत 3. औरत

3. तीन चीजें कभी मत छोड़ो-
   1. उम्मीद 2. अपमान 3. घमण्ड

4. तीन चीजें सोच समझकर करो-
   1. प्यार 2. बात 3. फैसला

5. तीन चीजें सोच समझकर उठाओ-
   1. कलम 2. कदम 3. कसम

6. तीन चीजें चुराई नहीं जा सकती-
   1. विद्या 2. चरित्र 3. ज्ञान

7. तीन चीजें पर्दे के योग्य है-
   1. स्त्री 2. धन 3. भोजन

8. तीन चीजों की हमेशा महत्व दो-
   1. परिवार 2. रिश्तेदार 3. मित्र

9. तीन चीजें सबके लिए अलग-अलग होती है।
   1. भाग्य 2. स्वभाव 3. रूप

नसीहत

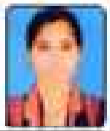

[illegible]

1. कद्र ज्ञान देती है, नजरत मान देती है।
   योग्यता स्थान देती है, अगर ये तीनों,
   एक साथ मिल जाए तो व्यक्ति को
   हर जगह सम्मान मिलता है।

2. जिन्दगी में इतनी गलतियाँ मत करो कि
   पैन्सिल से पहले रबड़ घिस जाए
   और रबड़ को इतना मत घिसो कि
   जिन्दगी का पेज फट जाए।

3. सफलता उन्हें ही मिलती है जिनके सपनों
   में जान होती है, पंखो से नहीं
   हौसलों से उड़ान होती है।

4. जिस घर में माँ-बाप हंसते हैं,
   उसी घर में भगवान बसते हैं।

5. दोस्ती-
   दोस्ती जिन्दगी की एक कड़ी होती है,
   बड़ी मुश्किल से ये खड़ी होती है।

6. फूल बनकर मुस्कुराना जिन्दगी है,
   मुस्कुराकर गम भुलाना जिन्दगी है।

9. हाथ और दिमाग को संभल कर रखिये,
   क्योंकि 'हाथ' ठण्ड में और दिमाग घमण्ड में
   काम नहीं करता है।

कुछ लोगों के द्वारा प्राप्त की गयी महान सफलता
इस बात का प्रमाण है कि बाकी सारे लोग भी
इसे प्राप्त कर सकते हैं।

-अब्राहम लिंकन

सच्ची बातें

[illegible]

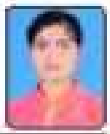

1. मेरी मंजिल मेरे करीब है, इसका मुझे एहसास है। घमंड नहीं मुझे अपने इरादों पर, ये मेरी सोच और हौसले का विश्वास है।

2. कई बार मन करता है, हार मान लूँ, लेकिन बाद में याद आती है कि अभी तो मुझे बहुत लोगों को गलत साबित करना है।

3. आधी जिन्दगी गुजार दी हमने पढ़ते-पढ़ते और सीखा क्या एक दूसरे को नीचा दिखाना।

4. न किसी के अभाव में जियो, न किसी के प्रभाव में जियो, ये जिन्दगी है आपकी, आप अपने स्वभाव में जियो।

5. अपनी जिन्दगी से कभी भी नाराज मत होना, क्या पता आप जैसी जिन्दगी दूसरे लोगों का सपना हो।

6. कभी मैं अपने हाथों की लकीरों में नहीं उलझा क्योंकि मुझे पता था कि किस्मत का लिखा भी बदला जा सकता है।

7. जिसके पास उम्मीद है, वो लाख बार हार कर भी नहीं हारता।

8. सुनने की आदत डालो क्योंकि ताने मारने वालों की कमी नहीं।
   - मुस्कुराने की आदत डालो क्योंकि रुलाने वालों की कमी नहीं।
   - ऊपर उठने की आदत डालो क्योंकि टांग खींचने वालों की कमी नहीं।

9. गलतियाँ सुधारी जा सकती हैं, गलतफहमियां भी सुधारी जा सकती हैं। मगर गलत सोच कभी नहीं सुधारी जा सकती।

10. जिन्दगी में कभी किसी बुरे दिन से रूबरू हो जाओ तो इतना हौसला जरूर रखना कि दिन बुरा है, जिन्दगी नहीं।

11. जीवन एक खेल है, यह आप पर निर्भर करता है कि, आपको खिलाड़ी बनना है कि खिलौना।

12. मुझे लगा था कि मैं बहुत खुशकिस्मत हूँ, सब मुझे चाहते हैं, पर बाद में पता चला कि चाहते तो सब हैं, पर सिर्फ मतलब के लिए।

13. जिसमें खुद झुकने की हिम्मत होती है, वो पूरी दुनिया को झुकाने की ताकत भी रखता है।

14. किसी ने पूछा, इस दुनिया में अपना कौन है, मैंने कहा, वक्त अगर सही है तो सब अपने हैं वर्ना कोई नहीं।

15. कपड़े और चेहरे अक्सर झूठ बोला करते हैं, इंसान की असलियत तो वक्त बताता है।

16. जब इस पृथ्वी का अंतिम पेड़ काटा जायेगा और नदी जब जहरीली हो जायेगी, तब हम शायद समझ पायेंगे कि हम पैसों को खा नहीं सकते।

17. उम्रें, नफरतें, ख्वाहिशें, शोहरतें सदा एक सी रहती नहीं, आज तू है जहाँ, कल कोई और था, ये भी एक दौर है वो भी एक दौर था।

18. अंधेरे में जब हम दीया हाथ में लेकर चलते हैं तो हमें ये भ्रम रहता है कि हम दीए को लेकर चल रहे हैं, जबकि सच्चाई एकदम उल्टी है दीया हमें लेकर चल रहा होता है।

19. अगर किसी परिस्थिति में आपके पास सही शब्द नहीं है तो सिर्फ मुस्कुरा दीजिए, शब्द

उलझा सकते हैं पर मुस्कुराहट हमेशा काम कर जाती है।

20. लोग किसी के बारे में अच्छा सुनने पर शक करते हैं और बुरा सुनने पर तुरन्त यकीन कर लेते हैं।

21. हजार गलतियों के बावजूद हम अपने आप से प्यार करते हैं, तो फिर किसी की एक गलती के लिए उससे नफरत क्यूं करने लगते हैं।

22. लोगों को भरपूर सम्मान दीजिए इसलिए नहीं कि उनका अधिकार है बल्कि इसलिए कि आपमें संस्कार है।

23. हर फैसला सोच समझकर लो क्यूंकि हर फैसले के अन्दर उसका अंजाम ऐसे छिपा होता है, जैसे बीज के अन्दर पेड़।

24. कितनी अजीब फितरत है हम इंसानों की, हम समझौता चाहते हैं, जब हम गलत होते हैं और हम इन्साफ चाहते हैं, जब कोई दूसरा गलत होता है।

25. बदल जाऊं तो मेरा नाम वक्त रखना, थम जाऊं तो हालात, झलक जाऊं तो मुझे जज्बात कहना, महसूस हो जाऊं तो दोस्त।

26. जीवन में जब भी बुरा वक्त आता है तो यही ख्याल आता है कि ईश्वर मेरी तकलीफ क्यूं नहीं देख रहा, मेरी प्रार्थनाएं सुन क्यों नहीं रहा, कुछ कर क्यों नहीं रहा, उस वक्त बस इतना याद रखना कि जब इम्तिहान चल रहे होते हैं तो शिक्षक सदैव मौन रहता है।

27. किसी ने बर्फ से पूछा आप इतने ठण्डे क्यों हो, बर्फ ने बहुत खूबसूरत जवाब दिया, मेरा अतीत भी पानी, मेरा भविष्य भी पानी, फिर गर्मी किस बात की रखूं।

28. कल एक इंसान रोटी मांग कर ले गया और बदले में करोड़ों की दुआएं दे गया, पता नहीं चला कि गरीब मैं थी या वो।

29. पिता की दौलत पर क्या घमण्ड करना, मजा तो तब है जब दौलत अपनी हो और घमण्ड पिता करे।

30. अजीब तरह से गुजरती है जिन्दगी, सोचा कुछ, किया कुछ, हुआ कुछ और मिला कुछ।

31. साहिल पे बैठके यूं सोचते हैं, आज कौन ज्यादा मजबूर है, वो किनारा जो चल नहीं सकता या वो लहर जो ठहर नहीं सकती।

32. इंसान भी मालिक ने एक जैसे ही बनाए हैं, कौन कैसा व्यवहार करता है ये उसके संस्कार तय करते हैं, इसीलिए अपने विचारो पर ध्यान दो, क्यूंकि वो आपके शब्द बनेंगे। अपने शब्दों पर ध्यान दो क्यूंकि वो आपके कर्म बनेंगे और अपने कर्मों पर ध्यान दो क्यूंकि वो आप स्वयं बनोगे।

33. अगर कभी अपनी दौलत देखनी हो तो बैंक बैलेंस और तिजोरी की तरफ मत देखना, बस अपनी आँख से एक आँसू गिराकर देखना कि कितने लोग उसे पोछने आते हैं। जीवन की असली दौलत तो आपका व्यवहार है।

34. हमेशा प्रार्थना किया करो कि हे परमात्मा जो कुछ आपने मुझे दिया या जो कुछ आपने मुझे नहीं दिया या जो कुछ आपने मुझे देकर वापस ले लिया इन सब के लिए आपको धन्यवाद है। जो आपने मुझे दिया वो आपकी मुझ पर कृपा है और जो कुछ आपने मुझे नहीं दिया या देकर वापस ले लिया उसी में मेरी भलाई है।

सबक

✍ [illegible]
[illegible]

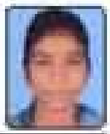

1. मुसीबत में अगर मदद मांगो तो सोचकर मांगना, क्योंकि मुसीबत थोड़ी देर की होती और एहसान जिन्दगी भर का।
2. जिस घाव से खून नहीं निकलता, समझ लेना वो किसी अपनों ने ही दिया है।
3. बचपन भी कमाल का था। खेलते-खेलते चाहें छत पर सोएं या ज़मीन पर, आँखें बिस्तर पर ही खुलती थी।
4. अहंकार दिखाकर किसी रिश्ते को तोड़ने से अच्छा है कि माफी मांगकर रिश्ता निभाया जाए।
5. जिन्दगी तेरी भी अजीब परिभाषा है, संवर गयी तो जन्नत, नहीं तो सिर्फ तमाशा है।
6. खुशियां तकदीर में होनी चाहिए, तस्वीर में तो हर कोई मुस्कुराता है।
7. इतनी चाहत तो लाखों रुपये पाने के बाद भी नहीं होती, जितनी कि बचपन की तस्वीर देखकर बचपन में जाने की होती है।
8. हमेशा छोटी-छोटी गलतियों से बचने की कोशिश करो, क्योंकि इंसान पहाड़ों से नहीं पत्थरों से चोट खाता है।
9. मनुष्य का अपना क्या है-

   अन्न- दूसरों ने दिया,
   नाम- दूसरों ने दिया,
   शिक्षा- दूसरों ने दिया,
   रोजगार- दूसरों ने दिया,
   श्मशान- दूसरों ने दिया,
   तो मनुष्य व्यर्थ में घमण्ड किस बात पर करते हैं।
10. किस्मत और सुबह की नींद कभी समय पर नहीं खुलती।
11. बहुत मजबूत हो जाते हैं, वो लोग जो अन्दर से टूट जाते हैं।
12. जिन्दगी का रास्ता बना बनाये नहीं मिलता, स्वयं को बनना पड़ता है, जिसने जैसा ही मार्ग बनाया, उसे वैसे ही मंजिल मिलती है।
13. अपना जीवन एक लक्ष्य पर निर्धारित करो, अपने पूरे शरीर को उस एक लक्ष्य से भर दो और हर दूसरे विचार को अपनी जिन्दगी से निकाल दो, यही सफलता की कुंजी है।

Poem
The true beauty
Thomas Carew (1595-1639)

✍ Vandana Prakash
B.B.Ed.4 Year

He that loves a rosy cheek;
or a coral lip admires;
or from star-like eyes doth seek;
fuel to maintain his fires;
As old time makes these decay.
So his flames must waste away.

But a smooth and sted fast mind.
Gentle thoughts, and calm desires,
Hearts with equal love combined.
Kindle never-dying fires;
Where these are not, I despise,
Lovely cheeks or lips or eyes.

भगत सिंह

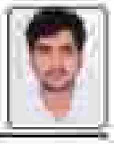

अनुराग प्रेम

तुम्हें डर नहीं लगता मौत से बाबू?

किस मिट्टी के बने हो?

बाबू! कुछ बोलो भी?

चलो ठीक है मैं मानती हूँ तुम एक क्रांति की राह पर चलने वाले संकल्पित इंसान हो लेकिन एक माँ कि क्या गलती है इसमें।

तुम कैसे इंसान हो?

तुमको दो दिन बाद फाँसी लगने वाली है और तुम हो कि हँस रहे हो।

इसे मैं क्या समझूं?
बोलोगे,
क्या हुआ?

देखो बेटा तुम्हारे लिए एक अच्छा सा रिश्ता आया था। बहुत सुन्दर और सुशील लड़की थी। तुमको बहुत मानती और हर एक कठिनाई में तुम्हारा साथ देती।

बेटा क्यूं तुम ऐसे राह पे चल पड़े, जिसमें मौत के अलावा कुछ भी हासिल नहीं होगा तुम्हें।

भगत! मैं कुछ पूछ रही हूँ तुमसे।
क्यों मेरी हर एक बात पे तुम हँस रहे हो?

माँ, मुझे मौत से डर नहीं लगता और इस देश के लिए मुझे बार-बार मरना पड़े तो मैं खुशी-खुशी स्वीकार करना चाहूँगा।

भगत सिंह हँसते हुए अपनी माँ को समझाने लगे।

माँ एक बात और, मैं शादी का सेहरा पहनूंगा तो सिर्फ मौत का और बाराती वो लोग होंगे जो मेरे साथ भारत माँ को बचाने में शहीद होंगे। वे मेरे साथी होंगे।

अपने देश को बचाने के लिए मैं किसी भी हद तक जा सकता हूँ माँ।

माँ आप कैसे भूल सकती हो, वो बेगुनाह इंसानों को, जो जलियाँवाला बाग हत्या कांड में उनके चिथड़े उड़ गए थे।

सब लोगों को गोलियों से छलनी किया जा रहा था, कई लोग तो ये भी न जान पाए कि उनकी गलती क्या है?

माँ आपको पता है जब गोलियाँ चल रही थी तो कई क्रांतिकारियों के मन में ये हुआ कि हम लोग अंग्रेजों की गोली खाने से बेहतर है कि हम इस कुँए में कूद के जान दे देंगे, लेकिन उनकी गोलियों का शिकार नहीं होंगे और कुछ लोगों के मन में तो ये था कि इसमें कूदेंगे तो बच जायेंगे।

वहाँ से जो लोग भागने में असमर्थ थे वो लोग तो वे कुँए में कूद गए, वे बेचारे सोच रहे थे कि वो लोग बच जाएंगे। अंग्रेजी हुकूमत की क्रूरता तो देखो,

जब सैकड़ों की भीड़ एकसाथ भाग रही थी, उस डर को देख के तो किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि कोई कहाँ बच के जाए?

कुछ लोग तो उस चहारदिवारी पे चढ़ रहे थे और कुछ लोग कहीं छुपने का जगह खोज रहे थे।

उस दीवार पे जाके देखो माँ, अभी भी वहाँ पे हमारे अपनों के लहू दिखेंगे।

जब मैं वहाँ गया था तो जैसे मानो रक्त की धारा उस दीवार की ईंटों से नीचे की तरफ धरती माँ को चूमने तथा उनको गले लगाने के लिए तेजी से आ रही हो।

वो सफेद वस्त्र जो रक्त से पूरा लाल हो गया था वो चिल्लाहट! जब मैं महसूस करता हूँ तो लगता है कि मैं पागल हो जाऊँगा।

- मैं कैसे आपको बताऊँ माँ कि जैसे ही वो लोग उस कूप के तरफ बढ़े वैसे ही उनके पीछे से गोलियां चलने लगी।
- पीठ पे गोली लगने के बाद मानो कोई रंगों की होली खेल रहा हो।
- वो खून मैंने देखा है माँ
- माँ, आप कैसे भूल सकती हो चाचा जी को जिन्होंने हँसते-हँसते अपने प्राणों की आहुति दे दी थी।
- माँ, मैं उस समय बहुत छोटा था लेकिन मैंने वो दर्द सुना है, मुझे बहुत तकलीफ भी हुई थी। मैं बहुत रोया भी था।
- माँ, वो जमीन मेरे अपनों के खून से लथपथ थी।
- माँ, मैं उस मिट्टी को हाथ से भी उठाया था लेकिन मेरे हाथों में मिट्टी के साथ-साथे मेरे अपनों के खून भी थे।
- माँ, मैंने उन कपड़ों को अपने हाथों से उठाया भी था, जो लहू से पूरा सने हुए थे और पहचान में भी नहीं आ रहे थे।
- क्या उनकी माँ नहीं थी? क्या उनकी पत्नियाँ नहीं थी?
- माँ- जब वो लोग गोलियों के शिकार हो रहे थे तो उन्हीं लोगों को उस चहारदिवारी के बाहर उनके अपने देख रहे थे और चिल्ला-चिल्ला कर रो रहे थे।
- किसी का सुहाग तो किसी का गोद सुना हो रहा था।
- उनकी आंखों के सामने उनके अपने उनको छोड़ कर जा रहे थे। अपने परिवार वालों से वे क्रांतिकारी बेचारे मिल भी नहीं पाए होंगे।
- क्या उनको पूछने वाला कोई नहीं था?
  क्या उनके अपने लोग नहीं थे?
  मैं कैसे शादी कर लूँ?
- अब तो बस मुझे इस मिट्टी के लिए कुछ करना है, जो लोग इस देश को बचाने में प्राण तक दे दिए, उन्हीं लोगों के सपनों को मुझे पूरा करना है।
- मुझे कुछ काम करने का मन नहीं करता है माँ, सिवाय इस धरती माँ की सेवा के।
- माँ- मेरी कलम मेरी जज्बातों से इस कदर वाकिफ हो गयी है कि मैं इश्क भी लिखना चाहूँ तो इन्कलाब लिखा जाता है।

और हाँ आप भगत सिंह की माँ हैं,
डर क्यूं रही हैं आप?

- आप ही बताइए कि मैं कैसे शादी कर सकता हूँ?
- अब मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूंगी मुझे माफ कर दो भगत।
- मैं अपनी ममता के आगे इतनी स्वार्थी हो गयी थी कि मुझे मेरे बेटे के अलावा और कुछ दिखा ही नहीं। माँ रोते हुए अपने बेटे से कह रही थी।
- अच्छा बेटा तुम ये बताओ कि तुम्हारी कुर्बानी से देश में कोई बदलाव आएगा?
- भगत सिंह- माँ मेरे जाने के बाद ही तो देश में क्रांति आएगी। पूरा देश मेरी मौत के बाद आग बबूला हो उठेगा।
- माँ- मैं कैसी अभागन हूँ जो कि अपने बेटे को अंतिम समय में गले से भी नहीं लगा सकती।
- बेटा, मन कर रहा है कि आज तुम्हें दिनभर देखती ही रहूं। यहाँ से जाने का मन ही नहीं कर रहा है।
- भगत एक बार मैं तुमसे इंकलाब जिंदाबाद सुनना चाहती हूँ, क्या सुना दोगे बेटा मुझे?

भगत सिंह-
इंकलाब जिन्दाबाद! इंकलाब जिन्दाबाद!

पुलवामा आतंकी हमला

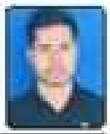

" माँ मुझे इंडियन आर्मी में जाना है"
माँ- सुन रही हो न मैं क्या कह रहा हूँ?

अमित कुमार अभी हाल ही में दसवीं बोर्ड परीक्षा को उत्तीर्ण किया था। अमित की जिद थी कि वो नौकरी करेगा तो आर्मी की, नहीं तो नहीं करेगा। अमित कुमार, रामपुर शामली उत्तर प्रदेश का रहने वाला था। वो चाहता था कि सैनिक मुझे किसी हालात में बनना है चाहें उसके लिए मुझे कितना भी मेहनत करना ही क्यों न पड़े।

अमित सुबह में तीन बजे उठ जाता और मेहनत (दौड़) करने के लिए सड़क पर चला जाता, सड़क पर इसलिए दौड़ रहा था कि उसके घर के आस-पास कोई बढ़िया मैदान नहीं था दौड़ने वाला। दौड़ते समय वह आगे-पीछे देखता भी रहता था कि किसी गाड़ी के चपेट में आ न जाये। वो दिन आ गया, अब अमित पूरा अपने आप को फीट कर लिया आर्मी के लिए।

जीवन का पहला दौड़ था अब वो घर से निकला था। उसको कुछ मालूम नहीं था कि कैसे होगा, क्या होगा। यही सब विचार करते हुए घर से निकल पड़ा और मंजिल पर पहुँच गया। ठीक है अमित तुम जाओ, मैं यहीं पर तुम्हारा इन्तजार कर रहा हूँ, अमित के बड़े भाई ने कहा अमित से। अच्छा ठीक है मैं आ रहा हूँ भैया।

चार घंटे के बाद जब अमित बाहर आया तो बहुत दुखित था और दस मिनट तक अपने भाई से कुछ बोल नहीं पाया। बड़े भाई ने जब पूछा कि क्या हुआ अमित, तब अमित बोलते-बोलते मायूस हो गया और कहा कि मैं दौड़ नहीं पाया भइया, वहीं पर इतने लड़के थे कि क्या कहूँ आपको? उस भीड़ में कैसे दौड़ पाता मैं?

अमित का बड़ा भाई-चलो कोई बात नहीं अगली बार तुम प्रयास करना, ये तो अभी पहला दौड़ था न तुम्हारे जीवन का, शायद अगला दौड़ तुम्हारा सफल हो जाए। आपस में बातें करते हुए अमित और उसका बड़ा भाई घर की तरफ चल पड़े। अमित आर्मी के लिए बहुत प्रयास किया और कई जगह गया लेकिन उसको निराशा के सिवाय कुछ हासिल नहीं हुआ। एकदिन अमित बिना बताए घर से चला गया दौड़ के लिए, वो घर पर इसलिए नहीं बताया कि शायद इस बार भी वो असफल हो न जाये। अब दौड़ के बाद अमित घर आया तो बहुत खुश था, लग रहा था कि उसको भगवान से मिलन हो गया हो।

अब माँ ने अमित से पूछा कि बेटा क्या हुआ, तो अमित ने माँ से बताया कि माँ मैं आर्मी के दौड़ और शारीरिक परीक्षा में सफल हो गया हूँ। ये खबर सुन सभी लोग खुशी से झूम उठे और अमित की ट्रेनिंग की खबर का इन्तजार करने लगे। वो दिन आ ही गया जब उसको ट्रेनिंग के लिए बुलाया गया।

अमित खुशी-खुशी घर से निकल गया ट्रेनिंग के लिए, ट्रेनिंग समाप्त होने के कुछ ही दिनों बाद उसकी पोस्टिंग जम्मू-कश्मीर में हो गया और मन से अपनी ड्यूटी निभाने लगा। कई दिन हो गये थे अमित को घर गये हुए तभी-

माँ का फोन अमित के पास आया,
माँ- हेलो बेटा, अमित- हाँ माँ बोलो
माँ- बेटा तुम कब घर आ रहे हो?
अमित- बहुत जल्दी माँ।
माँ-अमित तुमको देखे हुए बहुत दिन हो गये।

अमित- हाँ माँ आपको भी देखे हुए कई दिन हो गये। जल्द ही आ रहा हूँ। अपना ख्याल रखना। माँ-बेटा जल्दी आओ अगर छुट्टी मिले तो, क्योंकि घर की हालात बहुत खराब है, इसको बनवाना भी है तुम्हारी शादी से पहले। अमित- ठीक है माँ, मैं जल्दी आ जाऊँगा।

ठीक है माँ प्रणाम

कुछ दिनों बाद!

"जम्मू-कश्मीर के पुलवामा में सी.आर.पी.एफ. के काफिले पर हुए फिदायीन हमले में 39 से अधिक जवानों के शहीद तथा वहीं सी.आर.पी.एफ. सूत्रों की माने तो अब तक 39 जवानों के शव बरामद कर लिए गए थे। पाँच जवानों के शवों का पता नहीं लग सका था। धमाका इतना भीषण था कि कई जवानों के शरीर के अवशेष भी मिलना मुश्किल था। इस धमाके में 40 से अधिक जवान घायल बताए जा रहे थे।"

सूचना जब मिली तो पूरा देश हिल गया था। पूरा देश मानो शोक में डूब गया हो। अरे ये 2019 की घटना है जिसमें हमारे देश के कई जवान शहीद हो गए थे। 14 फरवरी को पूरा देश रो रहा था। 14 फरवरी को हमारे देश के होनहार सैनिक देश के लिए प्राण दे रहे थे। हम लोग अपने कामों में व्यस्त थे और उस दिन जम्मू श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर भारतीय सुरक्षा कर्मियों को ले जाने वाले सी.आर.पी.एफ. के वाहनों के काफिले पर आत्मघाती हमला हुआ था, जिसमें 39 से अधिक भारतीय सुरक्षा कर्मियों की जान गयी थी।

"विशेष बात ये है कि हमारे उत्तर प्रदेश ने 12 जवानों को खोया है।"

शहीदों की सूची में सबसे ज्यादा सैनिक उत्तर प्रदेश से हैं-

1- अवधेश कुमार यादव, बहादुरपुर मुगलसराय चंदौली, उत्तर प्रदेश।

2. पंकज कुमार त्रिपाठी, महराजगंज, उत्तर प्रदेश।

3. विजय कुमार मौर्य, छपिया जयदेव भटनी, देवरिया, उत्तर प्रदेश।

4. अमित कुमार, रायपुर शामली, उत्तर प्रदेश।

5. रामवकील, विनायकपुर मैनपुरी, उत्तर प्रदेश।

6. प्रदीप कुमार, बनत शामली, उत्तर प्रदेश।

7. रमेश यादव, तोफापुर वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

8. कौशल कुमार रावत, केहराई आगरा, उत्तर प्रदेश।

9. प्रदीप सिंह, 'अजान' कन्नौज, उत्तर प्रदेश।

10. श्याम बाबू, रायगवान कानपुर देहात, उत्तर प्रदेश।

11. अजीत कुमार आजाद, लोकनगर उन्नाव, उत्तर प्रदेश।

12. वीरेन्द्र सिंह, मोहम्मदपुर भूरिया, उधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड। और कुछ लोग बिहार तथा अन्य जिले के हैं, इन लोगों के अतिरिक्त 26 जवान ऐसे भी हैं जिन्होने अपने प्राणों की आहुति दी थी और कुछ जवान ऐसे हैं जिनकी पहचान अच्छे ढंग से नहीं हो पाई थी।

अरे इसमें अमित भी था-

ये वही अमित है जो आर्मी की नौकरी के लिए सुबह तीन बजे उठ जाया करता था।ये वही अमित है जिसको कई बार दौड़ से बाहर कर दिया गया था। ये वही अमित है जो आर्मी की वर्दी के लिए पागल हो गया था। ये वही अमित है जिसको खेलने-कूदने की उमर में आर्मी की वर्दी का चस्का लग गया था। ये वही अमित है जो उत्तर प्रदेश का है, जिसने वर्दी को अपनी पहचान बताया था।

ये वही अमित है जो अपनी माँ से वादा किया था कि मैं घर जरूर आऊँगा और घर को जल्दी बनवाने को कहा था।

अमित की मौत की खबर सुन उसके परिवार वालों की हालत खराब हो गयी थी, माँ का रो-रो के बुरा हाल हो गया था, लेकिन माँ से जब पूछा गया तो माँ ने कहा कि मेरे बेटे ने वीरता का परिचय दिया है, वो लोग पीठ पीछे वार किये थे। मेरा बेटा देश के लिए शहीद हुआ है।

पुलवामा आतंकी हमले में शहीद हुए वीर जवानों को शत्-शत् नमन।

एक बेटी की कहानी

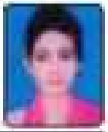

आओ सुनाती हूँ एक बेटी की कहानी
जो छोड़ कर अपने पिता का घर,
शुरू करती है नई जिन्दगानी।
इस नयी जिन्दगी में खुद को खोया सा पाती है
फिर भी अपने दर्द अन्दर ही छिपाये रह जाती है।

कहती नहीं किसी से क्या वे चाहती है,
न चाहते हुए भी सब कुछ सह जाती है।
बन्धनों में वो बंध जाती है, छोड़ बाबुल
की गलियां कैसे वो आ जाती है
आओ सुनाती हूँ बेटी की कहानी।

पली बढ़ी और पढ़ी जिन संग
उन भाई बहनों को छोड़ आती है।
साथी-सहेलियां सब उसकी
पीछे ही छूट जाती है,
याद उन सब की आती है, उसे बड़ा सताती है।
दिल मसोस कर भी रह जाता है।
बिना कुछ कहे चुप-चाप ही,
वो सब कुछ सह जाती है।
आओ सुनाती हूँ, बेटी की कहानी।

लगा अपना भविष्य दाँव पर
एक अनजान के लिए वो जी जाती है,
संग उसके वो जीने मरने की कसमें खा जाती है,
रस्मे-कसमें निभाती है।
बस ऐसे ही दूसरों के लिए वो जी जाती है,
कहती नहीं किसी से क्या वो चाहती है।
चाहती है बिन कुछ कहे, सब कुछ सह जाती है।
बस इतनी सी ही है उस बेटी की कहानी।

शब्दों का वजन

शब्दों का वजन
तो बोलने वाले के
भाव पर आधारित है।
एक शब्द मन्त्र हो जाता है,
एक शब्द गाली कहलाता है
वाणी ही व्यक्ति से
व्यक्ति का परिचय कराती है।

शब्द भी क्या चीज है?
महके तो लगाव,
बहके तो घाव।
मधुर वाणी बोलना
एक महंगा शौक है
जो हर किसी के बस की बात नहीं
अपने खराब मूड के समय बुरे शब्द न बोलें,
क्योंकि खराब मूड को बदलने के
बहुत मौके मिलेंगे
पर
शब्दों को बदलने के नहीं।

शब्द में वो धार हो,
जो जिगर के पार हो।
आँख का पानी रहे,
जीत हो या हार हो,
मंजिलों के वास्ते,
कोशिशें हर बार हो।
यूँ वरक़ों के लिए,
ठोस तो आधार हो।
बोलिए उस बात को,
जिसमें कुछ भी सार हो।

माँ

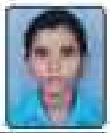

प्रियंका शर्मा
बी.एड.-द्वितीय वर्ष

"किसी भी मुश्किल का, अब किसी को हल नहीं मिलता,
शायद अब घर से, कोई माँ के पैर छूकर नहीं निकलता।
मेरे परवरिश की पहचान
अपने आँचल की वो छांव
ममता की वो लोरी गाती
मेरे सपनों को सहलाती
वो गाती रहती मुस्कराती जो
वो है मेरी प्यारी माँ।

प्यार समेटे जीवन में जो
सागर सारा अश्कों में जो
हर आहट पर मुड़ जाती जो
वो है मेरी प्यारी माँ...।
दुख मेरे जो समेटे जाती
सुख की खुशबू बिखेरे जाती
ममता की रस बरसाती जो
वो है मेरी प्यारी माँ.....
"हम खुशियों में माँ को भले भूल जाएं,
जब मुसीबत आ जाये तो याद आती है माँ।"

वो सुबह कभी तो आएगी?

शबनम खातून
बी.एड.-द्वितीय वर्ष

इन काली सदियों के सर से, जब रात का आंचल ढलकेगा।
जब दुख के बादल पिघलेंगे, जब सुख का सागर छलकेगा।।

जब अम्बर झूम के नाचेगा, जब धरती नगमें गाएगी।
वो सुबह कभी तो आएगी।।

जिस सुबह की खातिर जुग-जुग से, हम सब मर-मर के जीते हैं।
जिस सुबह के अमृत की धुन में, हम जहर के प्याले पीते हैं।।

इन भूखी प्यासी रूहों पर, एक दिन तो करम फरमाएगी।
वो सुबह कभी तो आएगी।।

माना कि अभी तेरे-मेरे अरमानों की कीमत कुछ भी नहीं।
मिट्टी का भी है कुछ मोल मगर, इन्सानों की कीमत कुछ भी नहीं।।

इंसानों की इज्जत जब, झूठे सिक्कों में न तोली जाएगी।
वो सुबह कभी तो आएगी।।

जिन्दगी

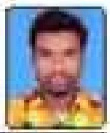

- [illegible]

Whatsapp के डीपी जैसी है, जिन्दगी
Last सबसे अपना छिपाना है।
दूसरों का देखना है,
जिन्दगी में एक बात
याद रखना।।

खुद टूट जाना मगर
कभी अपने माँ-बाप का
भरोसा मत तोड़ना।

भरोसा-

लाइफ में सबसे ज्यादा दर्द
दिल टूटने पर नहीं
बल्कि भरोसा टूटने पर होता है।

हर किसी पर भरोसा ना करना दोस्त!
क्योंकि नमक और चीनी का
रंग एक जैसा होता है,
पर स्वाद एक जैसा होता नहीं।

जिन्दगी

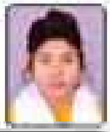

- [illegible]

1. जिन्दगी ने मुझे यही सिखाया है, कि मेहनत करो रुको मत। और हालात कैसे भी हो, कभी किसी के सामने झुको मत।।
2. इंसान बहुत खुदगर्ज होता है, पसंद करे तो बुराई नहीं देखता। और जब नफरत करे तो, अच्छाई नहीं देखता।।
3. उस इंसान से कभी झूठ मत बोलना, जो आपके झूठ को भी सच मानकर उस पर विश्वास कर लेता है। क्योंकि जिस दिन उसका विश्वास टूटेगा, दुनिया में कोई भी इंसान आप पर विश्वास नहीं करेगा।
4. इसीलिए अपने प्यार को संभाल के रखो जिससे पिछले जन्म का रिश्ता होता है।

प्यार उसी से होता है, वरना इस दुनिया की भीड़ में कौन किसे जानता है।इसीलिए अपने प्यार को संभाल के रखो।

चुटकुले

1. मोन्टू- तुम्हारी आँख क्यों सूजी हुई है।
बन्टू- कल मैं अपनी पत्नी के जन्मदिन पर केक लेकर गया था।
मोन्टू- लेकिन इसका आँख से क्या सम्बन्ध है।
बन्टू- मेरी पत्नी का नाम समस्या है, लेकिन केक वाले बेवकूफ दुकानदार ने लिख दिया हैप्पी बर्थ-डे, समस्या यही है।
2. दामाद अपनी सास से- आप की बेटी में कोई बात ढंग की नहीं है।
सास- हाँ बेटा मालूम है, तभी तो कोई ढंग का लड़का नहीं मिला।
3. एक बुढ़िया का दामाद बहुत काला था-
सास- दामाद जी आप एक महीना यहीं रुको। दूध, दही खाओ, मौज करो, आराम से रहो यहाँ।
दामाद- अरे वाह सासू माँ, आज बड़ा प्यार आ रहा है मुझपे।
सास- अरे प्यार-व्यार कुछ नहीं जलमुँहे, हमारी भैंस का बच्चा मर गया, कम से कम तुम्हें देखकर दूध तो देती रहेगी।

भारत-नेपाल सीमावर्ती क्षेत्रों में राष्ट्रीय सुरक्षा का खतरा (जनसांख्यिकीय संदर्भ)

-डॉ. राजन कुमार सिंह
असि. प्रोफेसर, [illegible]

भारत-नेपाल सीमा के खुले होने के कारण तथा भारत और नेपाल में सामाजिक और सांस्कृतिक समानता होने के कारण भारत तथा नेपाल में लोगों का आना जाना तथा वैवाहिक सम्बन्धों का स्थापित होना एक सामान्य सहज प्रक्रिया है। नेपाल पशुपति नाथ का घर है। सीता और बुद्ध का जन्म स्थान है। इस कारण से नेपाल हिन्दुओं और बौद्धों के लिए पवित्र स्थान है। नेपाल में लुम्बिनी, जनकपुर, काठमाण्डू घाटी, मुक्तिनाथ, स्वर्गद्वारी आदि स्थानों पर भारत से अनेक तीर्थ यात्री आते रहते हैं। उसी प्रकार नेपाल से तीर्थ यात्री भी भारत में केदारनाथ, काशी, गया, जगन्नाथपुरी, हरिद्वार, इलाहाबाद, वाराणसी, बोधगया, राजगीर, सारनाथ, नालन्दा, कुशीनगर, श्रावस्ती, सिद्धार्थनगर आदि स्थानों पर आते-जाते रहते हैं।

जब तक नेपाल में स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाएं कम थी तब तक नेपाल के तराई क्षेत्र के लोग भारत में आकर अपना ईलाज कराते रहते थे। पिछले कुछ वर्षों में नेपाल के तराई क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाओं का विकास हुआ जिससे भारत के सीमावर्ती जिलों से अब नेपाल के अस्पतालों में लोग अपना ईलाज कराने के लिए जाते हैं। विशेष रूप से आंखों का ऑपरेशन कराने के लिए। नेपाल के भरतपुर में आधुनिक कैंसर अस्पताल है और भारत से बड़ी संख्या में कैंसर रोगी वहां ईलाज कराने के लिए जाते हैं। नेपाल में अनेक मेडिकल कालेज भी स्थापित हैं। नेपाल में लगभग दस मेडिकल कालेज हैं। तीन मेडिकल कालेज काठमाण्डू में, एक पोखरा में और छ तराई क्षेत्र वीरगंज, धरान, भरतपुर, विराट, नेपालगंज और भैरहवा में हैं।

इसके अतिरिक्त भारत-नेपाल की पूरी सीमा पर प्राचीन सभ्यता के ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक अवशेष अवस्थित हैं। मिथिला, विराट, कौशल, शाक्य आदि प्राचीन सभ्यताओं के अवशेष तराई क्षेत्र से प्राप्त हुए हैं। पिछले वर्षों में इन प्राचीन शहरों एवं गांवों में पानी की निकासी की खराब व्यवस्था के कारण तथा इन क्षेत्रों में मलेरिया फैलने के कारण बहुत लोग यहां से पलायन कर गये। यह क्षेत्र वन क्षेत्र है। इस क्षेत्र में घने जंगलों में जंगली जानवर और मलेरिया के प्रकोप के कारण लोग इन स्थानों को छोड़ दिये। इस ऐतिहासिक तराई क्षेत्र में रहने वाली प्राचीन जातियों में थारू, धुनवार, धीमाल, राजवंशी, दोनवार आदि हैं। इनके सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि तराई के सुदूर क्षेत्रों में घने वनों में रहने वाली इन जातियों पर मलेरिया का असर नहीं होता। लेकिन भारत से पलायन करने वाले तथा नेपाल की पहाड़ियों से पलायन करने वाले लोगों ने धीरे-धीरे तराई क्षेत्र में बस कर इन पारम्परिक आदिवासियों को या तो इस क्षेत्र से हटा दिया या वे इस क्षेत्र में भूमिहीन अल्पसंख्यक किसान बन कर रह गये।

भारत-नेपाल की खुली सीमा होने के कारण दोनों क्षेत्र के लोगों को अधिक लाभ भी हुआ है। सीमा के दोनों तरफ विभिन्न स्थानों पर लगने वाले हाट-बाजारों में अनाज और सब्जी का बिक्री करके स्थानीय लोग अपनी जीविका चलाते रहे हैं। तराई क्षेत्र में नगरीकरण के बढ़ने और नगर केन्द्रों में विकास के कारण भारत से नेपाल से बड़ी संख्या में सामानों का आयात बढ़ी है। यातायात क्षेत्र में भी दोनों तरफ के लोगों को खुली सीमा होने के कारण रोजगार भी मिला है। 1860 से पहले तराई क्षेत्र में पलायन कम हुआ क्योंकि नेपाल में भारतीयों द्वारा जमीन खरीदने पर प्रतिबन्ध था लेकिन 1860 के बाद प्रधानमंत्री जंगबहादुर ने इस प्रतिबन्ध को हटा दिया। जिससे सीमा क्षेत्र के भारतीय बड़ी

संख्या में नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्र में बस गये। उसी प्रकार नेपाल के प्रधानमंत्री चन्द्र भामशेर ने भारत के वन अधिकारी जे0वी0ओलियर के परामर्श के आधार पर तराई में वन क्षेत्र को कृषि के उपयोग में लाने के लिए प्रयास प्रारम्भ किये। ओलियर स्वयं नेपाल के कैलाली जिले में जंगलों को साफ करने का कार्य करने लगे। जिससे कैलाली जिले में शिवालिक पहाड़ियों के पास गोदावरी तक रेलवे लाईन बिछाई गयी है। ओलियर ने इतनी तेजी से जंगल साफ कराये जिससे नेपाल की सरकार घबराने लगी और इस कार्य को बन्द करा दिया। यह भी उल्लेखनीय है कि भारतीय रेलवे के विस्तार के लिए उपयोग में आने वाले रेलवे के स्लीपर नेपाल तराई के साल (साखू) जंगलों की लकड़ी से प्राप्त होते थे। नेपाल में 1951 में लोकतन्त्र की स्थापना के बाद इन जंगलों से बड़े राजस्व की प्राप्ति होने लगी। इस प्रकार तराई के पुनर्विकास में भारत और नेपाल के पर्वतीय क्षेत्रों के लोगों को आकर्षित किया और वे बड़ी संख्या में तराई में सरकारी नौकरियां करने लगे। इन लोगों ने धीरे-धीरे तराई में जमीन खरीदी और बड़े जमीनदार बन गये।

1951 में लोकतंत्र की स्थापना के बाद तराई में मलेरिया उन्नमूलन कार्यक्रम भी चलाये गये। इस कार्यक्रम से इस क्षेत्र की जनसंख्या वितरण में प्रभावशाली परिवर्तन आया। मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के साथ-साथ अनेक भूमिहीनों, स्वतन्त्रता सेनानी भारत और नेपाल की सेना में काम करने वाले भूतपूर्व गोरखा सैनिक प्राकृतिक आपदाओं के शिकार हो गये। वर्मा से आये नेपाली शरणार्थियों, तिब्बती शरणार्थियों आदि लोगों को जमीन देकर इस क्षेत्र में बसाया गया। 1951 से 1954 के बीच नेपाल की कुल जनसंख्या का 35.2 प्रतिशत जनसंख्या तराई क्षेत्र में थी, जो 1961 में बढ़कर 46.7 हो गयी। 2001 की जनगणना के अनुसार नेपाल की कुल जनसंख्या का आधे से अधिक तराई क्षेत्र में निवास करती है।

उल्लेखनीय है कि भारत-नेपाल सीमा पर भारत के जिलों में जनसंख्या घनत्व नेपाल की सीमावर्ती जिलों की तुलना में अधिक है। यद्यपि नेपाल के तराई जिलों में विकास कार्यों के कारण बड़ी संख्या में भारतीयों का तराई में प्रवास हुआ है। बिहार राज्य में झारखण्ड राज्य बंटने के कारण तथा उत्तर प्रदेश में गंगा के उपजाऊ मैदान से अलग होकर उत्तराखण्ड बनने के बाद बिहार उत्तराखण्ड के सीमावर्ती जिलों तथा उत्तर प्रदेश के बलरामपुर, बहराइच और श्रावस्ती जैसे जिलों की निर्धनता बढ़ सकती है जिससे इन लोगों का नेपाल में पलायन बढ़ सकता है। नेपाल में विकास कार्यों के कुशल कारीगरों तथा मजदूरों की निरन्तर आवश्यकता है। जिसकी पूर्ति भारत से होती है। नेपाल में शिक्षा कार्यों की असफलता के कारण नेपाल में आर्थिक विकास के लिए तकनीकी प्रतिभाओं का अभाव रहा है। भारत से यह अभाव तो पूर्ण होता रहा है लेकिन नेपाल में बड़ी संख्या में शिक्षित बेरोजगारों की संख्या बढ़ती रही है जिससे परिवार, समाज और देश के लिए गम्भीर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। नेपाल में माओवादी आन्दोलन के विकास के पीछे यही वास्तविकता भी रही है। ऐसे वातावरण में पाकिस्तान की आई0एस0आई0 ने इस क्षेत्र में पूंजी निवेश कर इन बेरोजगार नवयुवकों को आतंकवादी, नसीले पदार्थों की तस्करी तथा जॉली नोटों के चलन में लगाकर इस पूरे क्षेत्र में अस्थिरता पैदा कर दिया है।

भारत और नेपाल के तराई क्षेत्र के सीमावर्ती जिलों में विवाह के कारण भी अत्यधिक प्रवास हुआ है। इस क्षेत्र में मुसलमान भी धन का लालच देकर हिन्दू परिवारों से विवाह कर रहे हैं। इस क्षेत्र में यह भी उल्लेखनीय है कि पुरूषों की तुलना में महिलाओं की संख्या अधिक है। 1991 में नेपाल की जनगणना के अनुसार तराई में भारत से पलायित लोगों की संख्या 378692 थीं, जिसमें केवल 93345 या 24.75 प्रतिशत लोग पुरूष थे जबकि 285347 या 75.3 प्रतिशत महिलाएं थी। भारत में बिहार, सिक्किम, उत्तर प्रदेश में

बसने वाली नेपाली महिलाओं की संख्या अधिक है। 1981 से 1991 के बीच नेपाल में भी मुस्लिम जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। 1981 में नेपाल में मुस्लिम जनसंख्या 399197 थीं जो बढ़कर 1991 में 653218 हो गई। अर्थात 10 वर्ष में इसमें 38.9 प्रतिशत वृद्धि हुई है। यह भी उल्लेखनीय है कि नेपाल में मुस्लिम जनसंख्या का 96.7 प्रतिशत लोग तराई क्षेत्र में ही निवास करते हैं। नेपाल के तराई क्षेत्र में बसने वाली कुल जनसंख्या में मुस्लिम जनसंख्या का प्रतिशत 7.32 है। यद्यपि नेपाल में मुस्लिम जनसंख्या में तीव्र वृद्धि का कारण नेपाल में कपड़ा उद्योग के विकास के कारण माना जाता है।

भारत-नेपाल सीमा के खुले होने का सबसे गम्भीर और प्रतिकूल प्रभाव गैर कानूनी और असामाजिक कार्यो का बढ़ना है। 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ से सीमा पर बढ़ते हुए अपराध दोनों सरकारों की चिन्ता का विषय रहे हैं। 1855 की भारत-नेपाल सन्धि इन्हीं समस्याओं को नियंत्रित करने के लिए की गयी थी। अबाध और खुली सीमा के कारण चोरी, डकैती, स्मगलिंग, नसीले पदार्थों की आवाजाही, वेश्यावृत्ति, हरियारों की स्मगलिंग, पुरातात्विक महत्व की मूर्तियों और पाण्डुलिपियों की स्मगलिंग, अपहरण आदि गैर कानूनी अपराध होते रहे हैं। 1980 के बाद आज तक भारत-नेपाल सीमा आतंकवादियों की आवाजाही का एक माध्यम हो गयी। कदाचित इसीलिए भारत-नेपाल की सीमा को सील करने की मांग होती रही है।

एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि भारत-नेपाल सीमावर्ती जिलों में ऐसे माफिया हैं जो भारत और नेपाल में होने वाले चुनावों में बुथ कैपचरिंग आदि कार्यों में अपनी शक्ति का प्रयोग करते हैं। सामान्यतः चुनावों से कुछ दिन पूर्व सीमा सील कर दी जाती है। लेकिन कुछ दिन पूर्व ऐसे कदम उठाने से कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अपराधियों को राजनीतिक नेता तथा प्रभावशाली लोग भारत और नेपाल दोनों उन्हें शरण देते हैं। भारत-नेपाल की उत्तर प्रदेश की सीमा का सर्वेक्षण करते हुए तथा लोगों से बात-चीत करते हुए जगजाहिर है कि भारत के अमरमणि त्रिपाठी जैसे नेता जो 2007 विधानसभा चुनाव में महाराजगंज जिले के लक्ष्मीपुर विधानसभा क्षेत्र से जेल में रहकर चुनाव जीत गये थे। सीमावर्ती तस्करी के बड़े माफिया हैं। सीमा पर कस्टम अधिकारियों से मिलकर विभिन्न प्रकार की तस्करियों में ये नेता संलग्न हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि तिब्बत के लोगों को पैसा देकर काठमाण्डु में बौद्ध मठों में स्मगलिंग से पहुँचाया जाता है।जो तिब्बती नेपाल, चीन की सीमा को पार करके काठमाण्डु में आ जाते हैं। उन्हें भारत के संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रतिनिधियों को सौंप दिया जाता है और वे इन तिब्बतियों को भारत में दलाईलामा के कार्यालय में पहुँचा देते हैं। उनके सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि तिब्बत के ग्रामीण क्षेत्रों में जो लोग अपने बच्चों को बौद्ध भिक्षु या नन्न है, अपनी सांस्कृतिक परम्परा से आर्थिक लाभ कमाना चाहते हैं। उन्हें नेपाल में शरणार्थी के रूप में पहुँचा दिया जाता है। भारत-चीन सीमा पर जो तिब्बती बौद्ध रहते हैं वे भी अपने बच्चों को काठमाण्डु में बौद्ध मठों में भेज देते हैं। मन्दिरों, बौद्ध मठों, चर्च, मस्जिदों आदि धार्मिक संस्थाओं में लोगों की कमी हो रही है क्योंकि नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के कारण पुरूष एवं महिलाएं शिक्षा एवं आधुनिक सुविधाओं की तरह अपने जीवन को प्रस्तुत कर रहे हैं। इसलिए ये धार्मिक संस्थाएं पिछड़े और गरीब ग्रामीण क्षेत्रों से लोगों को आकर्षित करते हैं। बौद्ध मठों जैसी स्थिति संस्कृत पाठशालाओं और सीमा पर स्थापित इस्लामिक मदरसों में भी हो रही है। ऐसे क्षेत्रों के बच्चों को सरलता से धन का लालच देकर तथा धार्मिक रूप से अन्धा बनाकर गैर-कानूनी एवं आतंकवादी जैसा कार्य कराया जा सकता है। यही कारण है कि पिछले वर्षों में भारत-नेपाल सीमा पर चोरी, डकैती, अपहरण के साथ-साथ आतंकवादी घटना भी बढ़ी है। अपराधियों की तलाश में यदि

भारतीय पुलिस तथा सुरक्षा एजेन्सियाँ नेपाल के अन्दर चली आती है तो नेपाली लोगों की भावनाएं आहत होती हैं और भारत के विरुद्ध उनकी घृणाएं बढ़ती है। प्रस्तुत अध्ययन के क्षेत्र में आने वाले नेपालगंज, भैरहवा, वीरगंज आदि स्थानों पर भारतीय पुलिस ने अनेक बार छापा डाला है लेकिन जब भी ऐसा कार्य होता है तो अन्तर्राष्ट्रीय कानून के उल्लंघन की आवाज उठती है। सीमा पर भारत-नेपाल संयुक्त सुरक्षा बल के गठन के बाद भी भारत नेपाल की पुलिस के बीच अपेक्षित सहयोग का अभाव है।

इस प्रकार अबाध और खुली सीमा के कारण भारत-नेपाल सीमा पर होने वाले आतंकवादी आवागमन तथा अन्य अपराधों पर नियंत्रण लगाने का प्रयास नहीं हुआ तो भारत की सुरक्षा को गम्भीर परिणाम भुगतने होंगे। भारत और नेपाल की सीमा पर जंगली क्षेत्र है जहाँ कोई निवास नहीं करता है। नदियाँ भी अपना रास्ता बदलती रहती है। इसलिए प्रत्येक पांच वर्षों के बाद सीमा स्तम्भियों के स्थानीय निरीक्षण के आधार पर स्तम्भनिर्धारण करना चाहिए।

भारत तथा नेपाल सीमा पर मानवता एवं मानवीय पहचान पत्र बनाने की भी आवश्यकता है। भारत तथा नेपाल के सीमावर्ती जिलों में ग्रामीण एवं आर्थिक विकास की आवश्यकता है। जिससे लोगों को रोजगार मिले और वे आतंकवादी गतिविधियों की तरफ न मुड़ें। नेपाल में माओवादी आन्दोलन, नक्सलवादी आन्दोलन तथा आतंकवादी गतिविधियों में वृद्धि का मुख्य कारण बेरोजगारी भी रहा है। उत्तर प्रदेश में भारत-नेपाल सीमावर्ती जिलों में यह सच्चाई और गम्भीर है क्योंकि इन जिलों में लगभग सभी जिले विशेषकर खीरी, बलरामपुर, बहराइच, श्रावस्ती, औद्योगिक दृष्टि से पूर्णतया अविकसित, साक्षरता की दृष्टि से अत्यधिक निम्न तथा मुख्यतया कृषि पर निर्भर रहते हुए भी निर्धन ग्रामीण परिवेश के क्षेत्र बने हुए हैं। ऐसे क्षेत्र में राष्ट्रविरोधी गतिविधियाँ, धार्मिक विद्वेष तथा राष्ट्रीय सुरक्षा के विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्रों का संवर्धन सरलता से हो जाता है। आने वाले समय में अगर सरकारें ध्यान नहीं देंगी तो निश्चित रूप से जनसांख्यिकीय आंकड़ों के आधार पर उत्तर प्रदेश के भारत-नेपाल सीमावर्ती क्षेत्रों में उभर रहे राष्ट्रीय सुरक्षा के खतरे भारत के लिए खतरा बन सकता है।

राधे-राधे

डॉ. अरविन्द सिंह
पैरा-मेडिकल

मेरी लगी श्याम संग प्रीत...
मेरी लगी श्याम संग प्रीत, ये दुनिया क्या जाने।
क्या जाने

मुझे मिल गया मन का मीत, ये दुनिया क्या जाने।
मेरी लगी श्याम संग प्रीत।।
छवि देखी मैंने श्याम की जबसे
भई बावरी मैं तो तबसे
बाँधी प्रेम की डोर मोहन से
नाता तोड़ा मैंने जग से
ये कैसी पागल प्रीत, ये दुनिया क्या जाने

मेरी लगी श्याम संग प्रीत ,ये दुनिया क्या जाने
क्या जाने

मोहन की सुन्दर सुरतिया
बस गई मन में, मोहन मुरलीया
लोग कहे मैं भई बावरिया
हो आऊं अब तेरी सांवरिया
ये कैसी निगोड़ी प्रीत, ये दुनिया क्या जाने
क्या जाने कोई क्या जाने?
मेरी लगी श्याम संग प्रीत, ये दुनिया क्या जाने।।

पर्यावरण संरक्षण

[illegible]
[illegible]

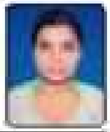

आज के युग में मानव अपने सुख के लिए धरती माता के साथ बहुत अन्याय कर रहा है। यदि भविष्य में ऐसा ही चलता रहा तो बहुत जल्द ही मानव का अस्तित्व इतिहास बन कर रह जायेगा। तो आइये समय की मांग को समझते हुए पर्यावरण संरक्षण की ओर कदम बढ़ायें। दूसरे लोगों को भी पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करें। पर्यावरण संरक्षण पर कविता के ज़रिए मैं भी सबको जागरूक करने का एक छोटा सा प्रयास कर रही हूँ -

बदले हम तस्वीर जहां की, सुन्दर सा एक दृश्य बनाएं,
संदेश ये हम सब तक फैलाएं, आओ पर्यावरण बचाएं।

फैल रहा है खूब प्रदूषण, काट रहा है मानव जंगल-वन,
हवा हो रही है जहरीली, कमजोर पड़ रहा है सबका तन,
समय आ गया है कि मिलकर, हम सब कोई कदम उठायें,
संदेश ये हम सब तक फैलायें, आओ पर्यावरण बचाएं।

प्रयोग करें गाड़ी का कम, चलने के पैदल पर जोर दें,
थैले रखें हम कपड़े के, प्लास्टिक को रखना छोड़ दें,
अहंकार को छोड़ कर बातें, ये अब हम सब को समझाएं,
संदेश ये हम सब तक फैलाएं, आओ पर्यावरण बचाएं।

हवा चाहिए शुद्ध ही सबको, पेड़ न कोई लगाता है,
अनजाने में सब रोगों को, पास में खुद ही बुलाता है,
हरियाली फैलाकर आओ, सबको अब हम स्वस्थ बनाएं,
संदेश ये हम सब तक फैलाएं, आओ पर्यावरण बचाएं।

मत व्यर्थ करो जल को, जल है तो अपना जीवन है,
प्रकृति ने है जो हमको दिया, सबसे अनमोल ये वो धन है,
सब जीवों को मिले बराबर, उद्देश्य निहित से अब हम जल बचाएं,
संदेश ये हम सब तक फैलाएं, आओ पर्यावरण बचाएं।

माता है ये धरा हमारी, हम सब इसका सम्मान करें,
क्यों बिगड़ रहे हालात हैं इसके, इस बात का हम सब ध्यान करें,
भला हो जिससे सभी जनों का, आदत हम सब वो अपनाएं,
संदेश ये हम सब तक फैलाएं, आओ पर्यावरण बचाएं।

सुविचार

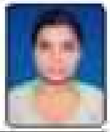

[illegible]

- "कोई अगर आपके अच्छे कार्य पर संदेह करता है तो करने देना चाहिए, क्योंकि शक् सदा सोने की शुद्धता पर किया जाता है, कोयले की कालिख पर नहीं।"
- "कौन से कपड़े पहनूं जिससे मैं अच्छा लगूं, ये हम हर रोज सोचते हैं पर कौन सा कर्म करूं जिससे मैं भगवान को अच्छा लगूं, ये कोई कभी नहीं सोचता।"
- "तन की खूबसूरती एक भ्रम है, सबसे खूबसूरत आपकी वाणी है, चाहे तो दिल जीत ले, चाहें तो दिल चीर दें।"
- इंसान सब कुछ कॉपी कर सकता है, लेकिन किस्मत और नसीब नहीं।
- बेटियाँ चीर की तरह होती है जो लेता है उसी का घर जगमगाता है।
- किसी ने गौतम बुद्ध से पूछा-"आप बड़े हैं फिर भी नीचे बैठते हैं?" बहुत ही खूबसूरत जवाब दिया-"नीचे बैठने वाला इंसान कभी गिरता नहीं।"
- संसार में सबसे बढ़िया दवा-हंसी, सबसे बड़ी सम्पत्ति-बुद्धि, सबसे अच्छा हथियार-धैर्य, सबसे अच्छी सुरक्षा विश्वास। ये सब निःशुल्क है।
- अकाल अगर अनाज का हो तो मानव मरता है, किन्तु अकाल अगर संस्कारों का हो तो मानवता मरती है।
- जो दूसरों के धन, सौन्दर्य, बल, कुल, सुख, सौभाग्य व सम्मान से ईर्ष्या करते हैं वे सदैव दुखी रहते हैं।
- कोई आपको बुरा कहे तो कहने दो क्योंकि 'आदमी अच्छा था' यह सुनने के लिए मरना पड़ता है।

अपनी जिन्दगी में तुमने क्या किया?
किसी से सच्चे दिल से प्यार किया?
किसी दोस्त को नेक सलाह दी?
किसी दुश्मन के बेटे को मोहब्बत की नजरों से देखा?
जहाँ अँधेरा था वहाँ रोशनी की किरण ले गये?
जितनी देर तक जिए
इस जीने का क्या मतलब था

-आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

इंतजार करने वाले को सिर्फ उतना ही मिलता है
जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।

-डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

माँ का प्यार

[illegible]

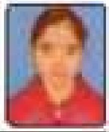

जब आँख खुली तो अम्मा की गोदी का सहारा था,
उसका नाजुक-सा आँचल, मुझको पुलकित से प्यारा था।

उसके चेहरे की झलक देख, चेहरा फूलों-सा खिलता था,
उसके स्तन की एक बूंद से, मुझको जीवन मिलता था।

हाथों से बालों को नोचा, पैरों से खूब प्रहार किया फिर भी,
उस माँ ने पुचकारा हमको, जी भर के प्यार किया।

मैं उसका राजा बेटा था, वो आँख का तारा कहती थी,
मैं बनूं बुढ़ापे में उसका, बस एक सहारा कहती थी।

उंगली को पकड़ चलाया था, पढ़ने विद्यालय भेजा था,
मेरी नादानी को भी निज अन्तर में सदा सहेजा था।

मेरे सारे प्रश्नों का वो, फौरन जवाब बन जाती थी,
मेरी राहों के काँटे चुन वो खुद गुलाब बन जाती थी।

मैं बड़ा हुआ तो कॉलेज से, इक रोग प्यार का ले आया,
जिस दिल में माँ की मूरत थी, वो रामकली को दे आया।

शादी की, पति से बाप बना, अपने रिश्तों में झूल गया,
अब करवाचौथ मनाता हूँ, माँ की ममता को भूल गया।

हम भूल गए उसकी ममता, मेरे जीवन की थाती थी,
हम भूल गए अपना जीवन, वो अमृत वाली छाती थी।

हम भूल गए वो खुद, भूखी रह करके हमें खिलाती थी,
हमको सूखा बिस्तर देकर, खुद गीले में सो जाती थी।

हम भूल गए उसने ही, होठों को भाषा सिखलाई थी,
मेरी नींदों के लिए रात भर, उसने लोरी गाई थी।

हम भूल गए हर गलती पर, उसने डाँटा-समझाया था,
बच जाऊँ बुरी नजर से, काला-टीका सदा लगाया था।

हम बड़े हुए तो ममता वाले, सारे बन्धन तोड़ आए,
उसके सपनों का महल गिरा कर, कंकड़-कंकड़ बीन लिए।

खुदगर्जी में उसके सुहाग के, आभूषण तक छीन लिए।
हम माँ को घर के बंटवारे की, अभिलाषा तक ले आए,

उसको पावन मंदिर से, गाली की भाषा तक ले आए।
माँ की ममता को देख मौत भी, आगे से हट जाती है,

अगर माँ अपमानित होती, धरती की छाती फट जाती है।

घर को पूरा जीवन देकर, बेचारी माँ क्या पाती है,
रूखा-सूखा खा लेती है, पानी पीकर सो जाती है।

जो माँ जैसी देवी घर के, मंदिर में नहीं रख सकते हैं,
वो लाखों पुण्य भले कर लें, इंसान नहीं बन सकते हैं।

माँ जिसको भी जल दे दे, वो पौधा संदल बन जाता है,
माँ के आँचल ने युगों-युगों से, भगवानों को पाला है।

माँ के चरणों में जन्नत है, गिरिजाघर और शिवाला है,
माँ कबीर की साखी जैसी, माँ तुलसी की चौपाई है।

मीराबाई की पदावली, खुसरो की अमर रुबाई है,
माँ आँगन की तुलसी जैसी, पावन बरगद की छाया है,
माँ वेद ऋचाओं की गरिमा, माँ महाकाव्य की काया है।

माँ परिवारों का संगम है, माँ रिश्तों की गहराई है,
माँ हरी दूब है धरती की, माँ केसर वाली क्यारी है।

माँ की उपमा केवल माँ है, माँ हर घर की फुलवारी है,
सातों सुर नर्तन करते जब, माँ हर घर की पुजारी है।

सारे तीर्थों के पुण्य जहाँ, मैं उन चरणों में लेटी हूँ,
जिनके कोई संतान नहीं, मैं उन माँओं की बेटी हूँ।

हर घर में माँ की पूजा हो, ऐसा संकल्प उठाती हूँ,
मैं दुनिया की हर माँ के, चरणों में ये शीश झुकाती हूँ।

डॉ० भीमराव अम्बेडकर
शिक्षा उस शेरनी का दूध है, जो पियेगा वही दहाड़ेगा

[illegible]
[illegible]

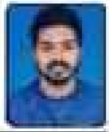

नीच समझ जिस भीम को, देते सब दुत्कार।
कलम उठाकर हाथ में, कर गये बेड़ा सुधार।।

जात-पांत की भेद की, तोड़ी हर दीवार।
बहुजन हित में भीम ने, दिया नया आधार।।

पानी-मन्दिर दूर थे, मुश्किल कलम-किताब।
डंका लगा जब भीम का, कर दिया सब हिसाब।।

ऊँचेपन की होड़ में, नीचे झुका पहाड़।
कदम पड़े जब भीम के, हो गया शुद्ध महाड़।।

पारस ढूँढे भीम को, आँख बहाये नीर।
पढ़े-लिखे हैं सैकड़ों, नहीं भीम-सा वीर।।

दिल में सब जिंदा रखो, बुद्ध, फुले व कबीर।
छोड़ वेद-पुराण सभी, भीम हुए बलवीर।।

झूठ और पाखंड की, चलती हर दुकान।
भेद-भाव से जो परे, रच दिया संविधान।।

कोविड-19 Stay home stay safe

तूफान के हालात है ना किसी सफर में रहो..
पंछियों से है गुजारिश अपने शहर में रहो ..

ईद के चाँद हो अपने ही घरवालों के लिए
ये उनकी खुशकिस्मती है उनकी नजर में रहो.

माना बंजारों की तरह घूमे हो दर-ब-दर..
वक्त का तकाजा है अपने ही शहर में रहो ..

तुमने खाक छानी है हर गली-चौबारे की..
थोड़े दिन की बात है अपने घर में रहो ...

गाँव में नीम के पेड़ कम हो रहे हैं,
घरों में कड़वाहट बढ़ती जा रही है,
जुबान में मिठास कम हो रही है
शरीर में शुगर बढ़ती जा रही है।

किसी महापुरुष ने सच ही कहा था कि जब किताबें सड़क किनारे रख कर बिकेंगी और जूते काँच के शोरूम में, तब समझ जाना कि लोगों को ज्ञान की नहीं जूते की जरूरत है।

1. इजाजत हो तो मैं भी आपके पास आ जाऊं, मेरे आदरणीय प्राचार्य, शिक्षक एवं शिक्षिका देखिए ना, चाँद के पास भी तो एक सितारा है।
2. ऐ कलम! जरा रुक-रुक के चल...
   यहां गजब का मुकाम आया है ...
   बैठी है यहां आ उनकी भावनाओं का असर कम ...

   तेरी नोक के नीचे मेरे आदरणीय प्राचार्य, शिक्षक एवं शिक्षिका का नाम आया है ...
3. एक दिन जब हुआ शिक्षा का एहसास हमें, हम प्राचार्य, शिक्षक एवं शिक्षिका के पास जा कर सारा दिन रोते रहे।

   प्राचार्य, शिक्षक एवं शिक्षिका भी इतने खुदगर्ज निकले यारों कि आँखें बंद करके प्रैक्टिकल मार्क देते रहे।
4. औलिया गम की चलेगी तो संवर जाऊंगा,
   मैं तो दरिया हूं समन्दर में उतर जाऊँगा।
   मुझको सूली पे चढ़ाने की जरूरत क्या है,
   मेरे हाथों से कलम छीन लो, मैं मर जाऊँगा।

नवम् दीक्षान्त समारोह - 01 मार्च, 2020

एक परिदृश्य

मंचासीन बायें से क्रमशः मुख्य अतिथि- श्री वीरेन्द्र सिंह 'मस्त' माननीय सांसद, बलिया, **अध्यक्ष- प्रो0 कल्पलता पाण्डेय,** कुलपति, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया **विशिष्ट अतिथि- श्री राजधारी जी,** पूर्व मंत्री, उ0प्र0 सरकार **एवं** महाविद्यालय के प्राचार्य **डॉ0 अशोक कुमार सिंह**

माँ सरस्वती के छायाचित्र के सम्मुख महाविद्यालय का सद्भावना द्वीप प्रज्ज्वलित करते हुए
श्री वीरेन्द्र सिंह 'मस्त' माननीय सांसद, बलिया

समावर्तन संस्कार के निमित्त उपाधिधारकों को दीक्षित्त करती हुई
प्रो0 कल्पलता पाण्डेय, कुलपति, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

दीक्षा, आत्मसात करते हुए स्नातक एवं परास्नातक उपाधिधारक

मुख्य अतिथि- श्री वीरेन्द्र सिंह 'मस्त', माननीय सांसद, बलिया **द्वारा स्नातक स्तर पर स्वर्ण पदक प्राप्त करती हुई छात्रा कु0 रिशु सिंह**

अध्यक्ष- प्रो0 कल्पलता पाण्डेय, कुलपति, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया **एवं विशिष्ट अतिथि- श्री राजधारी जी** पूर्व मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार **द्वारा परास्नातक स्तर पर स्वर्णपदक प्राप्त करते हुए छात्र रामानन्द यादव**

डॉ0 अनिल कुमार पाण्डेय, विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग **द्वारा लिखित पुस्तक 'आदिवासी समाज एवं नक्सलवाद' का विमोचन करते हुए अतिथिगण**

महाविद्यालय में संचालित 'कन्या अभिरक्षा योजना' के अन्तर्गत श्री अर्सलान अहमद, प्रवक्ता, डी0एल0एड्0 (बी0टी0सी0) **को रू0- 30,000/- (तीस हजार रूपये) का चेक प्रदान करते हुए मुख्य अतिथि-श्री वीरेन्द्र सिंह 'मस्त',** माननीय सांसद, बलिया

दीक्षान्त उद्बोधन परिव्यक्त करते हुए मुख्य अतिथि श्री वीरेन्द्र सिंह 'मस्त', माननीय सांसद, बलिया

अध्यक्षीय उद्बोधन परिव्यक्त करती हुई प्रो0 कल्पलता पाण्डेय, कुलपति, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

श्री राजधारी जी, पूर्व मंत्री, उ0प्र0 सरकार को स्मृति चिह्न से सम्मानित करते हुए श्री खालिक खाँ, मंत्री महाविद्यालय प्रबन्ध समिति

अध्यक्ष- प्रो0 कल्पलता पाण्डेय, कुलपति, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, **बलिया को स्मृति चिह्न से सम्मानित करते हुए महाविद्यालय के** संस्थापक व प्रबन्धक **श्री लल्लन सिंह**

जनपदीय अवकाश प्राप्त शिक्षक सम्मान समारोह एवं
महाविद्यालयीय विशिष्टता अर्जित पुरातन छात्र उत्प्रेरक समारोह- 16 फरवरी, 2021

एक परिदृश्य

मंचासीन बायें से क्रमशः महाविद्यालय के प्राचार्य, **डॉ0 अशोक कुमार सिंह, विशिष्ट अतिथि- श्री भुवनेश्वर चौधरी,** पूर्व अध्यक्ष, जिला पंचायत, बलिया, **विशिष्ट अतिथि- श्री संजय यादव,** माननीय विधायक, सिकन्दरपुर-बलिया, **मुख्य अतिथि- श्री रवीन्द्र कुशवाहा,** माननीय सांसद, सलेमपुर, **अध्यक्ष-प्रो0 के0एन0 सिंह** कुलपति, रा0ट0मु0वि0 प्रयागराज, **एवं** प्रो0 राजेन्द्र सिंह 'रज्जू भैया' विश्वविद्यालय, प्रयागराज **तथा विशिष्ट अतिथि श्री राजधारी जी,** पूर्व मंत्री, उ0प्र0 सरकार

अवकाश प्राप्त एक शिक्षिका को को स्मृति चिह्न एवं अंगवस्त्र से सम्मानित करते हुए
मुख्य अतिथि- श्री रवीन्द्र कुशवाहा जी, माननीय सांसद, सलेमपुर

अवकाश प्राप्त एक शिक्षक को अंगवस्त्र एवं स्मृति चिह्न से सम्मानित करते हुए
विशिष्ट अतिथि- श्री राजधारी जी, पूर्व मंत्री, उ0प्र0 सरकार

महाविद्यालय विशिष्टता अर्जित पुरातन छात्र उत्प्रेरक समारोह-2021 में एक पुरातन छात्रा को स्मृति चिह्न
व अंगवस्त्र से सम्मानित करते हुए श्री संजय यादव, माननीय विधायक, सिकन्दरपुर, बलिया

महाविद्यालय के असि0 प्रोफेसर-हिन्दी डॉ0 अभयनाथ सिंह द्वारा लिखित पुस्तक 'भारतीय संस्कृति में भोजपुरी लोकगीत' का विमोचन करते हुए मंचस्थ अतिथिगण

अपना उद्‌गार परिव्यक्त करते हुए विशिष्ट अतिथि- श्री संजय यादव, माननीय विधायक, सिकन्दरपुर, बलिया

अध्यक्षीय उद्‌बोधन परिव्यक्त करते हुए प्रो0 के0एन0 सिंह, कुलपति
राजर्षि टण्डान मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

मुख्य अतिथि- श्री रवीन्द्र कुशवाहा, माननीय सांसद, सलेमपुर **को महाविद्यालय का स्मृति चिह्न भेंट करते हुए महाविद्यालयीय प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री मुनीर अहमद**

अन्तरमहाविद्यालयीय कबड्डी प्रतियोगिता- 02 एवं 03 फरवरी, 2021

एक परिदृश्य

मंचासीन बायें से क्रमशः डॉ0 धन्नजय सिंह, सदस्य क्रीड़ा परिषद, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया, **डॉ0 फूल बदन सिंह,** संयोजक, क्रीड़ा परिषद, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया, **महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 अशोक कुमार सिंह एवं डॉ0 विवेक सिंह,** सचिव, क्रीड़ा परिषद, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया,

अन्तरमहाविद्यालयीय कबड्डी प्रतियोगिता का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए
डॉ0 फूलबदन सिंह, संयोजक, क्रीड़ा परिषद, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

अन्तरमहाविद्यालयीय कबड्डी प्रतियोगिता में अपने खेल कौशल का प्रदर्शन करती हुई बालिकाएँ

अन्तरमहाविद्यालयीय कबड्डी प्रतियोगिता की उपविजेता किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय रकसा रतसर-बलिया **की बालिका टीम को शील्ड प्रदान करते हुए डॉ0 विवेक सिंह,** सचिव, क्रीड़ा परिषद, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

विश्वविद्यालयीय रोवर्स/रेंजर्स समागम-27 एवं 28 फरवरी, 2021

एक परिदृश्य

मंचासीन बायें से क्रमशः डॉ0 शैलजा राय, मुख्यायुक्त, उत्तर प्रदेश स्काउट एवं गाइड **एवं प्रो0 कल्पलता पाण्डेय,** कुलपति, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

विश्वविद्यालयीय रोवर्स/रेंजर्स समागम में रोवर्स क्र्यू एवं रेंजर्स दल की सलामी लेती हुई प्रो0 कल्पलता पाण्डेय, कुलपति, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

अपना उद्‌गार परिव्यक्त करती हुई प्रो0 कल्पलता पाण्डेय, कुलपति, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

विश्वविद्यालयीय रोवर्स/रेंजर्स समागम में सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत झाँकी का प्रदर्शन प्रस्तुत करती हुई
किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय रकसा **की रेंजर्स टीम**

विश्वविद्यालयीय रोवर्स/रेंजर्स समागम में नाट्य अभिनय प्रस्तुत करती हुई
गोपाल जी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रेवती **की रेंजर्स**

रोवर्स दल विजेता-किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय रकसा **के टीम नायक को ट्राफी प्रदान करते हुए**
श्री उपेन्द्र तिवारी, माननीय मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार

रेंजर्स दल, उपविजेता- किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रकसा **की टीम नायिका को ट्राफी प्रदान करते हुए**
श्री उपेन्द्र तिवारी, माननीय मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार

विश्वविद्यालयीय रोवर्स/रेंजर्स समागम में अपना उद्गार परिव्यक्त करते हुए
श्री उपेन्द्र तिवारी, माननीय मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार

कम्बल वितरण समारोह- 24 दिसम्बर, 2020

एक परिदृश्य

ग्राम सभा- उसरैला में आयोजित कम्बल वितरण कार्यक्रम, में सम्मिलित स्थानीय, निराश्रित असहाय एवं निस्सहाय विधवा महिलाएं

एक निस्सहाय विधवा को कम्बल प्रदान करते हुए श्री रामनाथ यादव, समाज सेवी, ग्राम-उसरैला, बलिया

असहाय विकलांग/दिव्यांग एवं निस्सहाय विधवाओं को कम्बल प्रदान करती हुई
राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयंसेविकाएं

कम्बल ग्रहण की हुई निराश्रित, असहाय एवं निस्सहाय महिलाएं

अन्तरमहाविद्यालयीय सांस्कृतिक प्रतियोगिता 'सृजन' 2020 के अन्तर्गत 'निबन्ध लेखन एवं मौलिक कविता लेखन' प्रतियोगिता- 14 दिसम्बर, 2020

एक परिदृश्य

अन्तरमहाविद्यालयीय सांस्कृतिक प्रतियोगिता 'सृजन' 2020 के अन्तर्गत महाविद्यालय में आयोजित 'निबन्ध लेखन एवं मौलिक कविता लेखन प्रतियोगिता' में सम्मिलित विभिन्न महाविद्यालयों के प्रतियोगीगण

निबन्ध लेखन एवं मौलिक कविता लेखन प्रतियागिता में पुरस्कार अर्जित करने वाले प्रतियोगीगण

राष्ट्रीय सेवा योजना- सप्त दिवसीय विशेष शिविर (10 फरवरी से 16 फरवरी, 2021)

एक परिदृश्य

राष्ट्रीय सेवा योजना 'सप्त दिवसीय विशेष शिविर' के अन्तर्गत चयनित ग्राम- सरभारी कला में 'स्वच्छता जागरूकता रैली' निकालते हुए स्वयंसेवक एवं स्वयंसेविकाएं

वैश्विक महामारी 'कोविड-19' संक्रमण से बचाव हेतु 'जागरूकता अभियान' के अन्तर्गत ग्रामवासियों को मास्क का वितरण करते हुए राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक

मासूम सी परी

एक आठ साल की मासूम सी गरीब लड़की बुक स्टोर पर जाती है और एक पैंसिल और 10 रुपये वाली कॉपी खरीदती है और फिर वहीं खड़े होकर कहती है-

अंकल जी एक बात कहूँ करोगे, दुकानदार- जी बेटा बोलो क्या काम है? अंकल वे कलर पैंसिल का पैकेट कितने का है, मुझे चाहिए। ड्राइंग टीचर बहुत मारती है, मगर मेरे पास इतने पैसे नहीं है, ना ही मम्मी-पापा के पास है। दुकानदार की आँखें नम हो गयी और बोला, बेटा कोई बात नहीं है, ये कलर पैंसिल का पैकेट ले जाओ और आइन्दा किसी दुकानदार से इस तरह कोई चीज मत माँगना। लोग बहुत बुरे हैं किसी पर भरोसा मत किया करो। बच्ची चली जाती है, इधर दुकानदार ये सोच रहा था कि भगवान न करे ऐसी बच्चियाँ किसी वहशी (दरिंदा) दुकानदार के हत्थे चढ़ गयी तो क्या होगा। "शिक्षकों से गुजारिश है अगर कोई बच्चा कॉपी, पैंसिल, कलर पैंसिल वगैर नहीं ला पाता है तो जानने की कोशिश कीजिए कि कहीं उसकी गरीबी उसके आड़े तो नहीं आ रही है।

स्वप्नदास- मिटा दो जमाने से दुखदा परिस्थिति,
मिटा दो लुटेरों की शोषण की हस्ती,
मिटा दो जाति अवाम वाली बस्ती,
मिटा दो गरीबों की चांडाल परिस्थिति
रहो जिहाद है सबेरा का नहीं,
वो खून का कतरा किसी के अरमान का नहीं
बुलाया सरफरोशों को हुआ आज फिर,
है मैदान जाँबाज़ों का,
गरीब हक का नहीं।

जिन्दगी की सच्चाई

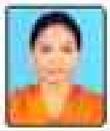

[illegible]

जब आप खुद को तराशते है,
तब दुनिया आपको तलाशती है।

जिस दिन आपने ये परवाह करना छोड़ दी कि लोग आपके बारे में क्या सोचते हैं, समझो उस दिन से आपने जिन्दगी का आनन्द लेना शुरू कर दिया। ना तो इतने कड़वे बनो कि कोई थूक दे, ना तो इतने मीठे बनो की कोई निगल जाए।

रब से जब भी मांगो तो रब को ही मांगो क्योंकि जब रब तुम्हारा होगा, तो सब तुम्हारा होगा। कोई फर्क नहीं पड़ता कि लोग आपके बारे में क्या सोचते हैं। फर्क तो इससे पड़ता है कि आप अपने बारे में क्या सोचते हैं। अगर आप कमाई से ज्यादा मेहनत करते हो तो बहुत जल्द मेहनत से ज्यादा कमाई करोगे। जो बदलता है वो आगे बढ़ता है, मैं झुक के जाऊँ मसला आसान हो जाता है। लेकिन इससे मेरे किरदार का बड़ा नुकसान हो जाता है।

दुनिया पल-पल रंग बदलती है, और लोग पूछते है कि होली कब है। जो दूसरों के चेहरे पर मुस्कुराहट देखना चाहता है, उसे शायद अपनी मुस्कुराहट कभी नहीं छिनता। हार एक सबक है, जो खुद को सुधारने का मौका देती है। अच्छा इंसान मतलबी नहीं होता बस दूर हो जाता है उन लोगों से, जिन्हें उसकी कदर नहीं होती।

सब कुछ Easy होता है, जब आप Busy होते हैं।
कुछ भी Easy नहीं होता है, जब आप Lazy होते हैं।

जिन्दगी में जो भी हम चाहते हैं वो आसानी से नहीं मिलता, लेकिन जिन्दगी का एक सच ये भी है जो हम चाहते हैं वो आसान नहीं होता। कुछ ऐसा काम करो कि आपके माता-पिता अपनी प्रार्थना में कहें-हे प्रभु हमें हर जनम में ऐसी ही संतान देना। कभी भी किसी का दिल न दुखाएं, क्योंकि ऐसा ही एक दिल आपके पास भी है।

"इतना बदल जाना है कि लोग तरस जाएं पहले जैसा देखने के लिए।"

बुद्धिमान चुप रहते हैं, समझदार बोलते हैं, मूर्ख बहस करते हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लैंगिक समानता

डॉ. [illegible]
[illegible]

समाज में लैंगिक समानता एक सकारात्मक दृष्टिकोण को व्यक्त करता है। लैंगिकता अपने आन्तरिक रूप में विस्तृत अर्थ को समाहित किया हुआ है। शिक्षा के द्वारा लैंगिकता को महत्व दिया गया है जिससे फलस्वरूप समाज का नजरिया भी प्राचीन समय की अपेक्षा अब्बी बदला है।

हालांकि यह कहना बिल्कुल गलत नहीं होगा कि अभी-भी भारत पूर्ण रूप से लैंगिक असमानता से मुक्त है, इसलिए विश्व एवं भारत सरकार द्वारा अनेक प्रयत्न किये जा रहे हैं ताकि स्त्री और पुरुष को समानता की राह पर लाया जा सके।

लैंगिक समानता का अर्थ :-

लैंगिक समानता से तात्पर्य समाज में महिला तथा पुरुष के समान अधिकार, दायित्व तथा रोजगार के अवसरों के परिप्रेक्ष्य में है।

जिस तरह तराजू में दोनों तरफ बराबर भार रखने पर वह संतुलित होता है ठीक उसी प्रकार किसी भी समाज व राष्ट्र में संतुलन बनाने के लिए आवश्यक है कि वहाँ पर पुरुषों व स्त्रियों के मध्य लैंगिक समानता स्थापित की जाए।

समाज की भूमिका :-

आज आधुनिकता की जीवन शैली को अपनाने के बावजूद भारतीय समाज लैंगिक समानता के मामले में इतना पिछड़ा हुआ है कि सही मायने में देखा जाए तो लैंगिक समानता का न होना ही समाज में असंतुलन और अपराध को जन्म देता है।

यह बहुत ही आवश्यक है कि हर क्षेत्र में चाहे वह शिक्षा हो, राजनीति हो, रोजगार हो, अवसर या अधिकार हो हर क्षेत्र में लैंगिक समानता को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

शिक्षा की भूमिका :-

शिक्षा में लैंगिक समानता का अर्थ सहित विधायों से ऊपर उठकर बालकों एवं बालिकाओं को समान शैक्षिक व्यवस्थाएं व अवसर उपलब्ध कराये, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर लिंग-भेद के कारण प्रभाव न पड़ सके।

लैंगिक समानता के मुख्य कारक :-

1. **शैक्षणिक स्तर** - एक विकसित राष्ट्र का सबसे महत्वपूर्ण अंग होता है वहाँ की जनता। जो व्यक्ति साक्षर होते हैं, वही उज्ज्वल भविष्य के सपने को हकीकत में जी सकते हैं। यदि समाज में लैंगिक समानता को बनाये रखना है तो हमारा सबसे महत्वपूर्ण कदम होना चाहिए स्त्री पुरुष के शैक्षणिक स्तर को समान करना, स्त्री शिक्षा पर अधिक जोर देना ताकि वह भी पुरुषों की बराबरी कर सके।

2. **रोजगार के समान अवसर** - यह आवश्यक है कि रोजगार के अवसर लिंग के आधार पर न निर्धारित हों। ऐसा करने से महिलाओं का न केवल जीवन स्तर बेहतर होगा बल्कि साथ ही साथ राष्ट्र के नव-निर्माण में पुरुष के समान ही अपनी भूमिका निभा सकेंगी।

लैंगिक समानता के राह में अवरोधक/चुनौतियाँ :-

1. **पितृसत्तात्मक समाज :-** भारतीय समाज आज भी अपनी सदियों पुरानी अवधारणा को अपना रहा है, जिसके चलते आज समाज की मानसिकता केवल इस बात मात्र तक सीमित हो चुकी है कि हमारा समाज पृिसत्तात्मक है अर्थात् 'पुरूष की प्रधानता' है।

2. **सामाजिक परम्परा एवं कुरीतियाँ :-** समाज के कई हिस्से में पुरानी परम्परा सदियों से चली आ रही है एवं कुरीतियाँ जो प्रायः अंधविश्वास व वहम् पर आधारित होती हैं। उन्हें समाज द्वारा मान्यता भी दी जा रही है।

सरकार के कार्यक्रम एवं पहल :-

सरकार द्वारा लैंगिक समानता के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए कई योजनाएं लागू की जा रही है। उन्हीं योजनाओं में से एक है- 'बेटी बचाओ, बेटी बढ़ाओ'। इए योजना के अन्तर्गत भ्रूण हत्या की रूढ़ियों को दूर कर बेटियों को बेटों के समान शिक्षित व आत्मनिर्भर बनाने पर जोर दिया गया है। तो वही 'नारी सशक्तिकरण योजना' के अन्तर्गत महिलाओं के साथ हो रहे शोषण के विरूद्ध उनमें आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कौशल के विकास पर ध्यान दिया जा रहा है।

इसी प्रकार के कई सारे पहल भारत सरकार द्वारा लाया जा रहा है ताकि लैंगिक असमानता की रूढ़ि को जड़ से खत्म किया जा सके।

विश्व में भारत की स्थिति :-

WIF की नवीनतम रिर्पोट के मुताबिक भारत लैंगिक समानता के क्षेत्र में विश्व के 108वें स्थान पर है, रिपोर्ट के मुताबिक यह बात सामने आती है कि पिछले वर्ष के मुताबिक भारत लैंगिक भेद-भाव को 67 प्रतिशत तक कम करने में सफल रहा है।

उपसंहार :-

भारत में पूर्ण लैंगिक समानता की राह कठिन है परन्तु असम्भव नहीं। हमें अपने प्रयासों के प्रति ईमानदार होना चाहिए और महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण बदलने पर काम करना चाहिए।

शायद, हम भविष्य में कम से कम ऐसे समाज का सपना देख सकते हैं जो अलग-अलग लिंग के लोगों के साथ अलग-अलग व्यवहार न करता हो।

स्पष्ट है कि स्त्री और पुरूष समाज के मूल आधार हैं और समानता एक सुन्दर और सुरक्षित समाज की वह नींव है जिसपर विकासरूपी ईमारत बनायी जा सकती है।

ऐसा कोई भी व्यक्ति संसार में नहीं है
जिसके पास एक बार भाग्योदय का अवसर
न आता हो, परन्तु जब वह देखता है
कि वह व्यक्ति उसका स्वागत
करने के लिए तैयार नहीं है
तो वह
उलटे पैरों लौट जाता है।

-कार्डिनल

परिपक्वता

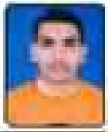

[illegible]

"हम अपने आप को एक अच्छा इंसान
बना लें तो निश्चित तौर पर
विश्व से एक बुरा इंसान कम हो जायेगा।"

- अरस्तू

अपने जीवन को बचकाने रूप में कोई नहीं जीना चाहता। हर आदमी, जीवन में स्थिरता और परिपक्वता यानी कि एक Maturity की चाहता है। इंसान उन्हीं लोगों को पसंद करता है जो लोग उसे Mature या परिपक्व लगते हैं।

असल में परिपक्वता है क्या? परिपक्वता है किसी इंसान की खुद को समझ लेने की काबिलियत, खुद को आत्म निर्भर बना लेने की काबिलियत, ऐसा इंसान जो खुद के सम्बन्ध में सभी निर्णय लेने में सक्षम है, वह आदमी परिपक्व है, जो इंसान अपने पैरों पर खड़ा होने में सक्षम है।

ऐसा होना चाहिए, लेकिन बड़े दुःख की बात है कि अक्सर ऐसा होता नहीं। सभी माँ-बाप अपने बच्चों को पूरी तरह नियंत्रण में रखना चाहते हैं सभी शिक्षण संस्थाएं छात्रों को वही सिखाना चाहते हैं जितना उन्हें खुद ज्ञात होता है। वह आपको सारे रास्ते पर पहरे बिठा देते हैं, वह यही चाहते हैं कि जैसा वह चाहते हैं आप वैसा ही करो। तभी हम लोग परिपक्व कहलायेंगे, पर इन व्यवस्थाओं में रहकर कभी कोई आदमी परिपक्व नहीं हो सकता है। आज समाज खुद इन परिपक्व लोगों से भयभीत रहता है। क्योंकि एक परिपक्व आदमी अपने बलबूते पर खड़ा रह सकता है। उन्हें समाज की कोई आवश्यकता नहीं होती है और वे चाहें तो वह अपने बलबूते पर समाज में बदलाव कर सकता है।

इसके कई उदाहरण देखने को मिलते हैं, जैसे भगत सिंह, स्वामी विवेकानन्द, नरेन्द्र मोदी, अमन सिंह जैसे महान व्यक्ति। समाज के लिए इस सच्ची और दर्द पूर्ण बातों को झेल पाना बड़ा ही मुश्किल हो जाता है।

याद रखो, दोस्तों! उस इंसान को झुकाना बड़ा ही मुश्किल है जिसको झुकने से फर्क नहीं पड़ता हो। उस इंसान को नीचे गिराना बड़ा कठिन होता है जिसको ऊँचाई से नीचे गिरने का कोई डर नहीं होता है। जिस इंसान को लड़ने का तरीका मालूम हो, उस इंसान को कभी हराया नहीं जा सकता, जिसके अन्दर का भय खत्म हो चुका हो।

क्योंकि ये लोग समाज के झूठे सम्मान, उसके आदर-सत्कार या फिर दुनिया से कुछ मिलने की परवाह नहीं करते हैं। हाँ, ये वही करते हैं जो ये करना चाहते हैं, इसलिए समाज ऐसे लोगों से जीते-जी हमेशा डरता आया है। इनके रास्ते रोकता है परन्तु इनके गुजर जाने के बाद इनके सूत्रों को समाज बड़े ही शौक से अपना लेता है।

यह है हमारे समाज की परिपक्वता और ऐसी ही परिपक्वता वह हर इंसान से चाहता है। यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि आदमी की मानसिक उम्र की परिपक्वता को मापने की जरूरत भी आज से 130 साल पहले ही शुरू हुई। उस समय आश्चर्यजनक परिणाम सामने आये कि एक 50 वर्ष के आदमी की बौद्धिक समझ मात्र 16 वर्ष के किशोर के बराबर ही थी। यानी कि वह व्यक्ति जो 50 वर्ष का था जो अपने 50 साल जीवन का अनुभव ले चुका था, वह 50 साल का व्यक्ति भी उतना ही सोच रहा था जितना कि एक 16 साल का किशोर।

क्या फर्क इस बात का है कि क्या वह 16 साल का किशोर, जो अपने जीवन का अनुभव ले पाया है, क्या वह निर्णय ले सकेगा और क्या वह 50 साल का व्यक्ति या आदमी जिसके अन्दर 16 साल के किशोर का काम चल रहा है। क्या वह निर्णय लेने में सक्षम है। वह भी तब, जब वह अपने 50 वर्ष के होने के बाद, यह भी बड़ी सोचने की बात है।

अगर इंसान को परिपक्वता चाहिए तो उसे बचपन से ही स्वतंत्रता परम आवश्यक है। आपको

महसूस करने की चेतना को जागृत करना होगा। बचपन से ही उसके अन्दर सही अन्वेषण की शक्ति को जगाना होगा। जब ये शक्ति मनुष्य में जागृत होगी, तभी इंसान में परिपक्वता के लक्षण दिखाई पड़ेंगे और तभी वह किशोर अपने और अपने इस राष्ट्र की एकता, अखण्डता, संप्रभुता तथा देश के विकास के बारे में अपना भरपूर सहयोग देगा।

"पुस्तकें वे साधन हैं जिनके माध्यम से हम विभिन्न संस्कृतियों के बीच पुल का निर्माण कर सकते हैं।"

- डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

"मनुष्य के अन्दर अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।"

- स्वामी विवेकानन्द

आखिर बहू भी बेटी होती है

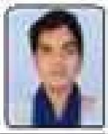

मधुर शर्मा
बी.एड.-प्रथम वर्ष

नहीं करनी मुझे शादी, न होना मुझे पराई है,
कैसे मैं तुमसे दूर रहूँगी माँ, जब सोच आँख भर आयी है।

सुनकर बेटी की बात, माँ धीरे से मुस्काती है,
पास बुला बैठा प्यार से, उसको कुछ समझाती है।

ये रीति पुरानी है, बिटिया जिसे हम सबको निभाना पड़ता है,
आज नहीं तो कल, बेटी को अपने घर जाना ही पड़ता है।

ये सिर्फ तुम्हारी नहीं, यही ये सबकी यही कहानी है।
जिसे बड़ा किया अरमानों से, वो बेटी एक दिन ब्याहनी है।

अपनी क्षमता से ज्यादा हम, वर तुम्हारा ढूँढेंगे,
कह रही हो जिन्हें पराया, हमसे ज्यादा खुश रखेंगे।

इस घर से जितना स्नेह मिला, उस घर को भी उतना देना,
कोई गुस्से में कुछ कह भी देगा, तो दिल पर मत लेना।

जो आभूषण जहाँ के लिए बना हो, वहीं जगह पे सजता है,
और नये लोगों के बीच जगह बनाने में, बिटिया थोड़ा तो वक्त लगता है।

डोली में कर रहे विदा, बस अर्थी में वापस आना,
कभी हृदय आहत भी हो तो, तुम खुद ही खुद को सम्भालना।

धीरे-धीरे तुम एक दिन, उस घर के रंग में रंग जाओगी,
इस घर के लिए परायी, उस घर का हिस्सा बन जाओगी।

सारी बातों की गांठ बांध माँ, मैं अपने संग ले आयी थी,
पर न जाने क्यों इस घर में भी और उस घर में भी, मैं ही परायी थी।

हर काम मैं करना चाहती हूँ, जो मुझे नहीं भी आता,
पर थोड़ी भी गलती हो ही, यहाँ गुनाह हो जाता।

क्या यही सिखाया माँ ने तुम्हारी, हर रोज मुझसे सब कहते हैं,
सब छोड़ आयी जिनकी खातिर, वो भी अक्सर चुप रहते हैं।

सुबह-सबेरे जल्दी उठ, हर काम मैं अपना निपटाती हूँ,
कोशिश करके हार गयी माँ, पर मन जीत न पाती हूँ।

अपने सारे अरमानों की फिर, एक चादर ओढ़ सो जाती हूँ,
समझाया था तुमने जैसा, वैसा तो कुछ भी नहीं पाती हूँ।

हर रोज आँख नम होती है, हर रोज हृदय भर आता है,
बहू भी बेटी होती है, कोई क्यों समझ न पाता है।

कहने को हर रिश्ता अपना, पर अपनेपन से कोसों दूरी है,
ये कैसी रीति है दुनिया की माँ, कैसी मेरी मजबूरी है।

न जाने कब ये घर मुझे, पूरे मन से अपनायेगा,
जो प्यार मिला माँ पापा से, क्या यहाँ कभी मिल पायेगा?

मिट्टी के दीये जलाएं

राष्ट्रीय हित का गला घोटकर, छेद न करना थाली में।
मिट्टी वाले दीये जलाना, अबकी बार दीवाली में।
देश के धन को देश में रखना, नहीं बहाना नाली में।
मिट्टी वाले दीये जलाये, अबकी बार दीवाली में।
बने जो अपनी मिट्टी से, वो दीये बिके बजारों में।
छुपी है वैज्ञानिकता अपनी, सभी तीज त्यौहारों में।
चाईनीज झालर से आकर्षित, सब कीट पतंगे आते हैं।
जबकि दीये में जलकर सब, बरसाती कीड़े मर जाते हैं।
कार्तिक दीपदान से बदले, मित्र दोस्त खुशहाली में।
मिट्टी वाले दीये जलाना, अबकी बार दीवाली में।
आओ इस बार दीवाली कुछ खास मनाये, सबके साथ मनाये,
कुछ तो उस गरीब से खरीदे, जिसने भी इस दीवाली अरमान सजाये।
मिट्टी वाले दीये जलाना अबकी बार दीवाली में।

न गीता बुरी है ना कुरान बुरा है, न हिन्दू बुरा है ना मुसलमान बुरा है।
न खुदा बुरा है न भगवान बुरा है, भेजे में जो घुसा है वो शैतान बुरा है।

जहाँ सूर्य की किरण हो, वहीं प्रकाश होता है,
और जहाँ प्रेम की भाषा हो, वहीं परिवार होता है।

परिवार और माँ

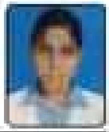

[illegible]

एक गाँव में एक सुखी परिवार रहता था। उस परिवार में तीन भाई और एक बहन थी। उनके माँ-बाप उन चारों को बेहद प्यार करते थे, मगर बीच वाले बेटे से थोड़ा परेशान थे। क्योंकि बड़ा बेटा पढ़ कर डाक्टर बन गया और छोटा बेटा पढ़ लिख कर इंजीनियर बन गया था। मगर बीच वाला बेटा बिल्कुल गंवार और अनपढ़ ही बनकर रह गया। अब उसके दो बेटे डाक्टर और इंजीनियर ने शादी कर ली थी और कुछ महीनों बाद ही उनके बेटों की भी अच्छे घराने में शादी हो गयी थी। मगर बीच वाला बेटा अभी भी कुँवारा था। वह बिल्कुल अनपढ़ था और कहीं पर मजदूरी का छोटा सा काम कर रहा था, इसलिए उससे शादी के लिए कोई भी लड़की नहीं मिल रही थी और उसके माँ-बाप उससे बहुत परेशान थे। जब भी उसकी बहन मायके आती तो पहले वो अपने भाई डाक्टर और इंजीनियर से मिलती थी, मगर वो बीच वाले भाई से बहुत कम मिलती थी क्योंकि वो उसे ज्यादा पैसा नहीं दे पाता था लेकिन फिर भी वो अपने बहन से बहुत प्यार करता था। अब उसके पिता की मृत्यु हो गयी। उसकी माँ ने सोचा, कहीं अब किसी के मुँह से बंटवारे की बात ना निकले, इसलिये अपने ही गाँव की सीधी-सादी लड़की से अपने गंवार बेटे की शादी कर दी। शादी होते ही न जाने क्या हुआ, उसका अनपढ़ बेटा पूरा मन लगाकर काम करने लगा और पहले से कहीं ज्यादा मेहनत करने लगा। जब कोई दोस्त उसे बुलाने आता, तो उससे यही कहता था, भाई मैं तो पहले जैसे-तैसे कमाकर खा लेता था, मगर अब मेरी शादी हो गयी है, तो मुझे अपनी पत्नी के लिए कमाना पड़ता है और कल तो मेरे बच्चे को भी जोड़ना पड़ेगा। इसलिए दोस्त अब मैं तेरे संग नहीं घूम सकता। यह कह कर उसका गंवार लड़का सीधा काम पर निकल जाता। अब उसके दोनों भाई डाक्टर और इंजीनियर आपस में बात करते हैं कि हम दोनों तो उस गंवार से कहीं ज्यादा पैसा कमाते हैं, इसलिए हम घर का बंटवारा कर लेते हैं। और उस गंवार से अलग हो जाते हैं। इसलिए उन दोनों भाईयों ने अपनी माँ के लाख मना करने के बावजूद बंटवारे की तारीख तय कर दी और उन्होंने अपनी बहन को भी बुलवा लिया और अपने गंवार भाई से भी कह दिया, आज काम पर मत जाना क्योंकि हम आज घर और जमीन का बंटवारा करेंगे। उसी वक्त उसकी बहन भी आ जाती है। तभी उसका गंवार भाई कहता है कि तुम लोग बंटवारा कर लो मुझे जो भी देना हो, दे देना, मैं शाम को आकर अंगूठा लगा दूंगा। तभी उसकी बहन कहती है अरे बेवकूफ तू अनपढ़ ही रहेगा, जमीन का हिस्सा तो आमने-सामने बैठ कर ही होता है। तभी उसके दोनों भाई भी बीच वाले गंवार भाई को उल्टा-सीधा कहने लगे। उसकी माँ भी उससे कहती है कि बेटा आज तू काम पर मत जा, बंटवारा तेरे सामने ही होगा तो ही अच्छा है। उसी वक्त वकील भी आ जाता है, तभी वकील कहता है कि आप का सारा हिस्सा मिलाकर 10 बीघा जमीन है और आप का घर है। अब ये बताओ कि किसको कितना हिस्सा देना है। मैं उसी हिसाब से बंटवारे का कागज बना दूंगा। उसी वक्त उसका गंवार भाई कहता है कि वकील साहब 5-5 बीघा मेरे दोनों भाईयों के नाम लिख दो और ये जो हमारा मकान है, ये मेरी प्यारी बहन के नाम लिख दो। तभी उसके दोनों भाई-बहन पूछते हैं और तू हिस्से में क्या लेगा, उसका गंवार भाई कहता है कि मेरे हिस्से में मेरी प्यारी माँ है ना। और तभी वो अपनी पत्नी की तरफ मुस्कुराते हुए कहता है कि क्यों मेरी प्यारी पत्नी, क्या मैंने गलत कहा क्या? उस गंवार

की पत्नी अपनी सास से लिपटकर कहती है कि माँ से बड़ी वसीयत क्या होगी मेरे लिए। और उसी वक्त उसका गंवार पति अपनी माँ से लिपट जाता है। गंवार बेटे के इसी प्यार ने जायदाद के बंटवारे को एक सन्नाटे में बदल दिया। तभी बहन अपने गंवार भाई के गले लिपटकर रोते हुए कहती है। माफ कर दो भईया मैं आप को समझ नहीं सकी। तभी उसका भाई कहता है कि मेरी प्यारी बहन, इस घर में जितना अधिकार हमारा है, उतना ही अधिकार तेरा भी है। और रही बात बंटवारे की, तो बंटवारा नहीं करने से हमारा जीवन रुक तो नहीं जाएगा। क्यूं करते हैं बंटवारा, क्या हम एक साथ मिलकर नहीं रह सकते। जैसे हम बचपन में रहते थे। एक साथ मिलकर रहने को ही तो कहते हैं अच्छा परिवार। और उस अच्छे परिवार को सम्भालती है एक माँ, तभी उसके दोनों भाई भी बहुत शर्मिंदा होते हैं और वो बंटवारे के सभी कागज फाड़कर फेंक देते हैं और उसी दिन के बाद से ही उनका पूरा परिवार खुशी-खुशी एक साथ ही रहने लगा।

साइबर अपराध

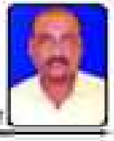

डॉ. अश्विनी कुमार [illegible]
[illegible]

विश्व स्तर पर संगठित अपराध मार्ग कम्प्यूटर नेटवर्क द्वारा प्रशस्त हुआ है क्योंकि, इसके माध्यम से अपराधी बिना कहीं आए-जाए ही दुनिया के एक कोने में बैठकर दूसरे कोने में अपराध संचालित कर रहे हैं। दरअसल अभी तक कम्प्यूटर नेटवर्क प्रणाली में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं खोजी जा सकी है जो इस पूरी प्रणाली को सुरक्षित रख सके। हैकर्स इसी बात का लाभ उठाकर वायरस के माध्यम से सुरक्षा और संचार व्यवस्था को न केवल नुकसान पहुँचाते हुए बल्कि खुफिया सूचनाओं, आंकड़ों आदि में छेड़छाड़ कर सूचना में ही बदलाव कर देते हैं। इन्हीं घटनाओं को साइबर अपराध या साइबर आतंकवाद या साइबर युद्ध के नाम से जाना जाता है। कम्प्यूटर नेटवर्कों के विभिन्न निर्माणों द्वारा सस्ती प्रतिद्वंदिता के परिणाम स्वरूप एक-दूसरे साइट में वायरस डालकर उसे नष्ट करने का प्रयास प्रतिदिन किया जा रहा है। दूसरे की साइट अथवा ईमेल खोलकर उसकी गोपनीयता को जानने की साजिश रोज हो रही है। यह एक सामान्य किन्तु महत्वपूर्ण साइबर अपराध का रूप ले चुका है।

साइबर अपराध एक बेहद जटिल और व्यापक विषय बन गया है जो तकनीक के साथ विकसित, परिवर्तित हो रहा है। कम्प्यूटर नेटवर्क को नुकसान पहुँचाने के लिए वायरस का इस्तेमाल, अश्लील सामग्री उपलब्ध कराने, कम्प्यूटर नेटवर्क में उपलब्ध जानकारियों की चोरी, क्रेडिट कार्ड के प्रयोग के समय उपलब्ध जानकारी के आधार पर जालसाजी और हेरा-फेरी आदि को इसी साइबर अपराध के अन्तर्गत रखा जाता है। किसी देश की सामान्य प्रशासनिक अथवा वित्तीय व्यवस्था को हानि पहुँचाने के प्रयास को भी इसी के श्रेणी में रखा जाता है।

साफ्टवेयर पायरेसी यानी साफ्टवेयर बनाने वाली कम्पनियों को भुगतान किये बिना उनके द्वारा भारी रकम खर्च करके तैयार किये गये साफ्टवेयर की नकली कापियां बनाना व उनका प्रयोग करना एक प्रमुख अपराध है। एक अनुमान के अनुसार साफ्टवेयर पायरेसी के कारण भारतीय साफ्टवेयर कम्पनियों को सालाना 900 करोड़ रुपये का नुकसान होता है। भारत में आज कुल इस्तेमाल किये जाने वाले का 60 प्रतिशत से अधिक डेटा पायरेटेड होता है। इस प्रकार का साइबर क्राईम एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बन चुकी है।

वर्तमान में भूमण्डलीकरण विश्व व्यवस्था में अधिकांश देश साइबर अपराध के प्रति गम्भीर नहीं

है। जहाँ तक भारत का सवाल है, उसकी शीर्ष खुफिया एजेंसी केन्द्रीय जाँच ब्यूरो ने नौ देशों के साथ सहयोग समझौता कर रखा है। यह समझौता फरवरी 2003 में हुआ था, जिसमें भारत, चीन, जापान, इण्डोनेशिया, दक्षिण कोरिया, फिलीपींस, मलेशिया व थाईलैण्ड शामिल थे। इस समझौते के अन्तर्गत साइबर अपराधियों तक पहुंचने के लिए सम्बद्ध देशों के मध्य सूचनाओं के आदान-प्रदान हेतु 'बर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क (VPN) नामक प्रणाली को विकसित करने तथा साइबर क्राईम टेक्नोलॉजी इन्फारमेशन नेटवर्क सिस्टम (CTNIS) से आपस में जुड़ने की बात निश्चित हुई थी, परन्तु भारत में नित नये हो रहे साइबर हमले यह दर्शा रहे हैं, केन्द्रिय गृह मंत्रालय के एकत्र किये गये आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2002-2005 तक की अवधि में साइबर अपराध के तहत 11175 मामले दर्ज किये गये। वर्तमान में लड़ा जाने वाला साइबर युद्ध सम्पूर्ण विश्व के लिए एक नई सामरिक चुनौती के रूप में उभरा है। भविष्य में साइबर युद्ध किन्हीं दो देशों के लिए निर्णायक हथियार साबित हुआ है, क्योंकि इस क्षेत्र में परमाणु हथियारों या पारस्परिक हथियारों के प्रयोग पर प्रतिबंधित सन्धि जैसी कोई व्यवस्था लागू नहीं है जो विश्व के सभी राष्ट्रों के लिए सर्वमान्य हो। अतः कहा जा सकता है कि विश्व में अगला निर्णायक युद्ध साइबर युद्ध होगा।

बीसवीं शताब्दी विश्व की भयावह संघर्षों की गवाह रही है। आज साइबर अपराध पर प्रभावी नियंत्रण हेतु आवश्यक है कि सभी राष्ट्र अपने पड़ोसियों के प्रति सद्भाव तथा मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करे। ऐसी परिस्थिति में साइबर अपराध को जड़ से रोकथाम हेतु चिन्तन एवं शोध की अत्यन्त आवश्यकता है।

उल्लेखनीय है कि साइबर क्राइम करने वाले व्यक्ति अथवा संस्था पर कानूनी कार्यवाही उस देश के कानून के मुताबिक ही की जाती है, जहाँ पर एक संस्था स्थित है अथवा जिस देश में बैठकर यह काम किया जा सकता है। अभी तक साइबर अपराधों को रोकने के लिए सर्वस्वीकृत अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों का अभाव है। इसी कारण आज भूमण्डलीकरण के युग में मजबूत राष्ट्रीय साइबर स्पेस नियमन-कानूनों की भी जरूरत है, जिसके लिए त्वरित गति से काम करने की आवश्यकता है। हालांकि Anti-Corruption Law title III on preventing and fighting cyber crime ds Article 34-67 तक साइबर अपराध की रोकथाम हेतु अन्तर्राष्ट्रीय प्रावधान व नियम बनाये गये हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर साइबर अपराध नियंत्रित करने हेतु सहयोगात्मक प्रयास अभी भी प्राथमिक दौर में है। वास्तव में इण्टरनेट पर किये जा रहे किसी तरह के अपराध से सुरक्षित रहने के लिए वैयक्तिक प्रयत्नों का अपना महत्व है, लेकिन भूमण्डलीकरण के इस युग में राष्ट्रीय नहीं अन्तर्राष्ट्रीय कानून की जरूरत है, क्योंकि अब यह स्थानीय नहीं बल्कि वैश्विक समस्या बन गयी है। इस दिशा में अभी और प्रयास किये जाने की आवश्यकता है, जिससे दुनिया के किसी कोने में बैठे अपराधी को दण्ड दिया जा सके। साइबर अपराध के विधिक नियंत्रण प्रयास पर्याप्त नहीं है, इसके लिए विश्व समुदाय में जनचेतना की आवश्यकता है।

आज बिना अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के साइबर अपराध को नियंत्रित करना असंभव है।

"पढ़ो ऐसे कि जैसे तुम्हें सदा जीना है
जियो ऐसे कि जैसे कल ही दुनिया से चले जाना है।"

–आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान

देश के सपूत हैं, देश की शान हैं, देश का मान है।
शक्ति ही जवान है, पेट ही किसान है,
विकास ही विज्ञान है।।

दुर्गम प्रदेशों में, रखवाली करते हुए,
रौद्र प्रकृति को, प्रत्यक्ष पाते हुए।
न भय होता न काल से,
न सुख होता न भाग्य से।
जाति-धर्म बेड़ियों का हनन करते हुए,
दूर-सुदूर होते भी, शुभेच्छा करते हैं।
एक साथ मिलकर, रहना हमें सिखाते हैं,
हर घड़ी, हर क्षण राष्ट्र एकता सुनाते हैं।
देश का तिरंगा हर भारत दिल की शान है,
देश पर मिटने वाले, ऐसा ही जवान है।

देश के सपूत हैं, देश की शान हैं, देश का मान है,
शक्ति ही जवान है, पेट ही किसान है,
विकास ही विज्ञान है।

गर्मी हो या सर्दी हो, ये रुकते नहीं,
तूफान हो या आँधी, ये झुकते नहीं।
देश पेट-भरण हेतु, भूमि का सीना चिरते हैं,
भूखा हो जाए देश जब, भूखे मारे-मारे फिरते हैं।

बंजर को उर्वर बना, असाध्य को साध्यकर,
तन स्वास्थ्य बना, धरा को अन्नाकर,
देश भूखा ना रहे, ये अन्न बोते हैं,
कल के भविष्य हेतु भूखे ये सोते हैं।
गन्दे चाहे वेश हो, फटे चाहे वस्त्र हो,
खेती अभिमान है,
खून-पसीना एक समझे,
वह देश का किसान है।

देश के सपूत हैं, देश की शान हैं, देश का मान है,
शक्ति ही जवान है, पेट ही किसान है,
विकास ही विज्ञान है।

रक्षा हो या ऊर्जा हो, या हो शिक्षा का मोल,
अन्तरिक्ष हो या नभ हो, बजता है इसका ढोल।
इसके दम पर बढ़ रहा, देश का हर जवान,
आत्मनिर्भर बन रहा, देश का हर किसान।
शहर हो, ग्राम हो, है यहाँ इसका प्रचार,
विकास ही विज्ञान हो, है यही अपना सार।
नभ में या चन्द्र पर, विश्व या मंगल पर,
है अपना ज्ञान,
ढूंढ निकाले पानी चन्द्र पर ऐसा है अपना विज्ञान।

क्या बनना है?

एक बार एक साधु जंगल से होकर गुजर रहा था। वह जा ही रहा था कि उसके हाथ पर जल की कुछ बूंदे टपकीं। वह ऊपर की ओर आश्चर्य से देखा। उसने देखा कि एक कौआ रो रहा था। सन्त ने कौए की ओर देखते हुए पूछा-

साधु- क्यों रोता है, क्या तकलीफ है तुमको?

कौआ- (रोते हुए उत्तर दिया) रोऊँ नहीं तो क्या करूं? ये कोई जीवन दिया, काला बनाया कोई पूछता ही नहीं है मुझे। किसी छत पर बैठ जाऊँ तो भगाकर उड़ा देते हैं। लोगों के श्राद्ध में, मैं उन्हें याद आता हूँ, बुला-बुलाकर अपना जूठा खिलाते हैं मुझे। ये भी कोई जीवन है छी...

साधू- तो तुम इस जीवन से खुश नहीं हो?

कौआ- नहीं।

साधू - अच्छा चलो, यदि तुम्हें इस जीवन में दोबारा कुछ बनने का अवसर मिले तो क्या बनना चाहोगे?

कौआ- (प्रसन्नता से) हंस बनना चाहूंगा।

साधू- अच्छा हंस ठीक है मैं बना दूंगा, लेकिन एक शर्त है।

कौआ- (आश्चर्य से) क्या?

साधू- एक बार जाकर हंस से मिल आओ।

कौआ तुरंत ही उड़कर एक सरोवर के पास पहुँचा, वहाँ उसने एक हंस को देखा, देखते ही वह हंस से जाकर तुरन्त बोला।

कौआ- हे हंस भाई! कितना आराम का जीवन है तुम्हारा, श्वेत रंग, बिल्कुल शान्ति का प्रतीक, जल में पैडल मारते हो, पता ही नहीं चलता कि साइकिल चला रहे हो। बिल्कुल राजा की भाँति तालाब में रहते हो, कितना आराम का जीवन है तुम्हारा, कितने खुश होगे तुम।

हंस ने कौए को जवाब देते हुए कहा-

हंस- तुम्हें किसने बोला मैं खुश हूँ?

कौआ- **(आश्चर्य से)** तुम भी खुश नहीं हो?

हंस- नहीं, ये सफेद रंग दिया, लोगों को मरने के बाद ऐसा वस्त्र मिलता है और मैं भी सफेद, पानी भी सफेद पता ही नहीं चलता कि मैं पानी में हूँ या पानी मुझमें। कभी-कभी लोगों के तश्वीरों में इतना सफेद हो जाता हूँ कि पता ही नहीं चलता कि लोग मेरी तस्वीर खींच रहे हैं कि पानी की, पूरे पानी में ही यह रंग मिला है ये भी कोई जीवन है।

पुनः दोनों उड़कर साधू के पास आये। साधू ने हंस से पूछा कि तुम भी खुश नहीं हो।- हंस का जवाब

हंस- नहीं।

साधू- फिर तुम क्या बनना चाहोगे, यदि अवसर मिले तो।

हंस- तोता बनना चाहता हूँ।

साधू- तब दोनों जाओ, एक बार तोते से मिल आओ। दोनों उड़कर गये जहाँ पेड़ पर तोते रहते थे, उन्होंने पेड़ के तीन-चार चक्कर लगाये और अन्ततः उन्हें एक तोता दिखा, उसे देखते ही हंस तपाक से बोला-

हंस- हे तोता भाई! कितना सुन्दर जीवन है तुम्हारा। लोग तुम्हें पालते हैं, मिट्ठू-मिट्ठू बुलाते हैं तुम्हें, न जाने क्या-क्या खिलाते हैं, बादाम, काजू, मिर्च न जाने क्या-क्या। कितना सुन्दर रंग है तुम्हारा, एक दम हरियाली का प्रतीक, ऊपर से लाल चोंच। आहा! कितना सुन्दर है तू।

तोते ने दोनों की तरफ देखते हुए बोला-

तोता- तुम्हें किसेने कहा कि मैं खुश हूँ?

हंस- **(कौए के साथ) तुम भी खुश नहीं हो।**

तोता- नहीं। अच्छा ये बताओ तुम मुझे खोजने आये, तीन-चार चक्कर लगाये, मैं यहीं बैठा तुम लोगों को चार बार देखा और तुम लोग पाँचवी बार में मुझे देखा। हट... ये भी कोई रंग है, किसी को दिखाई ही नहीं देता हूँ, हरे में हरा मिल जाता हूँ, ये भी कोई रंग है छी... और रही बात लोगों के पालने की, पिंजरे में रखते हैं मुझे, उसमें कौन-सी खुशी, हमेशा जेल में रहो। बड़े आये खुश देखने वाले।

तीनों पुनः उड़कर साधू के पास आये।

साधू- तुम भी खुश नहीं हो?

तोता- नहीं।

साधू- तो तुम क्या बनना बसन्द करोगे?

तोता- (झट से) मोर बनना चाहूँगा।

साधू- **(फिर वहीं बात)** जाकर मोर से मिल आओ।

तीनों उड़ते हुए जंगल में गये, वहाँ उन्होंने एक मोर को देखा, तोता तुरन्त ही मोर के पास जाकर बोला-

तोता- हे मोर भाई! कितना मस्त जीवन है तुम्हारा। सावन के मौसम में जब तुम अपने पंखों को फैलाकर नाचते हो, कितने सुन्दर लगते हो। हमारे देश के राष्ट्रीय पक्षी हो। तुम्हारे पंखों को फैलाते देखने के लिए कहां-कहां से लोग आते हैं। कितना सुन्दर जीवन है तुम्हारा। कितने खुश होगे तुम।

मोर- तुम्हें किसने बताया कि मैं खुश हूँ?

तोता- **(साथ में कौआ व हंस आश्चर्य से)** तुम भी खुश नहीं हो?

मोर- अभी चुप हो जाओ, एक आवाज सुनो और छिप जाओ।

(टक-टक-टक-टक की आवाज आती है)

हंस- ये क्या था?

मोर- शिकारी थे। माँ को मार दिया। अब उसका पंख सारे देश में बेचा जायेगा। लोग दुकानों में सजाएंगे, सुन्दरता का सामान बनेगा, बस यही है जीवन हमारा। यहाँ हमको पता ही नहीं कि अगले घंटे में जीयेंगे या नहीं। कैसे कोई खुश रहे। ये भी कोई जिन्दगी है, डर-डर के जीना।

इस पर सभी चुप हो गये, फिर वहां बाहर आये, तभी कौआ मोर से बोला-

कौआ- इसका मतलब कोई खुश नहीं और सब अपने-अपने जगह पर सही हैं। और मोर भाई हम चारों में कौन खुश है?

मोर- **(तुरन्त जवाब देते हुए)** तुम।

कौआ- (आश्चर्य से) मैं कैसे?

मोर- मेरी बात सुनो, तुमने चिकन बिरियानी सुनी है?

कौआ- हाँ

मोर- मटन बिरियानी सुनी है?

कौआ- हाँ

मोर- कौआ बिरयानी सुनी है?

कौआ- नहीं।

मोर- तुमको किसी से तकलीफ?

कौआ- नहीं।

मोर- तो फिर सबसे ज्यादा खुश तुम हुए न भाई, कितना सुन्दर जीवन है तुम्हारा, किसी से न लेना न देना, बस कॉव-कॉव करना, हमें क्या अगले घण्टे का पता ही नहीं, हंस भाई को किसी और तालाब में, तोता भाई को पिंजरे और मुझे, जैसा तुमको शिकारी के बारे में बताया। इसलिए तुम जैसे थे वैसे सबसे खुश हो।

अतः हमें इस कहानी से यह शिक्षा लेनी चाहिए कि हम जैसे हैं, जिस अवस्था में हैं, जिस रंग में हैं, हम सबसे अलग हैं, हमें बदलने की कोई जरूरत नहीं है। क्यों बदलना है? बस यही समझ लो कि ईश्वर ने हम सबको अद्वितीय बनाया है।

गजल

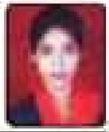

– [illegible]
[illegible]

वे लोग बस्तियों को जलाने में रह गए,
हम देख-देख अश्क, बहाने में रह गए।

आरज़ू, सलाम, प्रार्थना बहुत लिख दिए थी,
वे बेवजह का हाथ चलाने में रह गए।

हम ईद, क्रिसमस, दीवाली साथ मनाए,
वे हिन्दू, मुस्लिम को लड़ाने में रह गए।

मेरी कलम देखकर खफा हो गए वे,
हम घूम-घूम उनको मनाने में रह गए।

वे नाका बंद कर लिए, लाशों को देखकर,
हम एक-एक कर, पहचानने में रह गए।

अफवाह, गिला, शिकवा, बदनाम हो जाते,
हम गीत और गजल सुनाने में रह गए।

अनमोल वचन

अर्जित करना चाहते हो तो — ज्ञान को अर्जित करो।
सुखी होना चाहते हो तो — सुख देना सीखो।
जोड़ना चाहते हो तो — अहंकार को छोड़ो।
बढ़ाना चाहते हो तो — ज्ञान के भण्डार को बढ़ाओ।
सेवा करना चाहते हो तो — माता-पिता की सेवा करो।
करना चाहते हो तो — परोपकार करो।
कमाना चाहते हो तो — पुण्य कमाओ।
बचना चाहते हो तो — कुसंग व पाप से बचो।
वश में करना चाहते हो तो — इच्छाओं को वश में करो।
कुछ बनना चाहते हो तो — बहादुर बनो।
रोकना चाहते हो तो — मन को गलत रास्ते पर चलने से रोको।
महान बनना चाहते हो तो — सदाचारी बनो।

चुटकुले

1. अध्यापक छात्र शिक्षक के हरकतों को देखकर कहा-तुम बड़े ही नालायक हो, तब एक छात्र उठकर कहा- श्रीमान् मैं नालायक को लायक बना सकता हूँ।
अध्यापक- वह कैसे?
छात्र- नालायक में से ना को हटा दूँगा।

2. पत्नी- सुनो जी, आप बहुत फिजूल खर्च करते हैं। यदि यही हाल रहा तो एक दिन भीख मांगने की नौबत आ जायेगी।
पति- तुम चिन्ता मत करो, मुझको तो तुमसे मांगते-मांगते भीख मांगने का अनुभव हो गया है।

3. सिपाही चोर से- तुमने इसकी जेब कैसे काटी?
चोर- वाह, बहुत खूब, वर्षों की मेहनत मैं आपको मिनटों में कैसे सिखा दूँ।

4. **राम श्याम से-** पहले मच्छर सिर्फ रात को ही काटते थे, लेकिन अब दिन में भी काट रहे हैं।
श्याम- हाँ भाई, महंगाई बढ़ गयी है इसलिए उन बेचारों को दिन-रात मेहनत करना पड़ता है।

5. **पति-** मैंने शादी से पहले 10 अफेयर किये।
पत्नी- मुझे पता था कि जब कुण्डली में 36 गुण मिल रहे हैं, तो हमारी आदतें भी मिलती होंगी।

6. **सरदार-** भगवान 100 साल आपके लिए कितने हैं?
भगवान- 1 सकेण्ड
सरदार- और 100 करोड़ रुपये?
भगवान- 1 सिक्का
सरदार- मुझे एक सिक्का दे दो।
भगवान- एक सेकेण्ड रूक।

7. शहर के बड़े पोस्ट ऑफिस पर एक ओर यह लिखा कि, जो कुछ भी पूछना है कृपया यहाँ पर पूछिये। एक व्यक्ति यह पढ़कर वहाँ जाकर पूछा, जलेबी कितने रुपये किलो है।

8. जब सेब पेड़ से नीचे गिरा तो न्यूटन को बहुत आश्चर्य हुआ था। आश्चर्य की बात तो तब होती जब सेब नीचे से ऊपर जाता।

9. **बेटा-** मम्मी तेरे लिए मेरी क्या कीमत है?
माँ- बेटा तू तो लाखों का नहीं बल्कि करोड़ों का है।
बेटा- तो करोड़ो में से पाँच रुपया देना, आइस्क्रीम खानी है।

चुगलखोरी सबसे बड़ा पाप है।
सत्य सबसे बड़ा तप है।
मन की पवित्रता सभी तीर्थों के सेवन से उत्तम है।
सज्जनता सबसे बड़ा गुण है।
यश सर्वोत्तम आभूषण है।
विद्या सर्वश्रेष्ठ धन है।
सारी बुराई की जड़ बेकारी है।

–चाणक्य

हार्दिक प्रार्थना निश्चित ही ऐसा सर्वोच्च शक्तिशाली साधन है
जिसकी सहायता से मनुष्य अपनी कायरता और दूसरी
पुरानी बुरी आदतों पर विजय पा सकता है।
अपने भीतर विराजमान ईश्वर में जीवित
श्र(ा के बिना प्रार्थना असम्भव है।

–महात्मा गांधी

दोस्ती

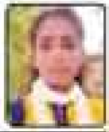

दोस्ती वो नहीं जो जान देती है,
दोस्ती वो भी नहीं, जो मुस्कान देती है,
अरे सच्ची दोस्ती तो वो है,

जो पानी में गिरा हुआ,
आंसू भी पहचान लेती है।

लोग कहते हैं कि इतनी दोस्ती,
मत करो कि दोस्ती दिल पर
सवार हो जाए,

हम कहते हैं कि दोस्ती इतनी करो कि
दुश्मन को भी तुम से प्यार हो जाए।

हर दूरी मिटानी पड़ती है,
हर बात बतानी पड़ती है,
लगता है दोस्तों के पास
वक्त ही नहीं है,
आजकल खुद अपनी याद
दिलानी पड़ती है।

जब कोई ख्याल दिल से टकराता है
दिल न चाहकर भी खामोश रह जाता,

कोई सब कुछ कहकर दोस्ती जताता है,
कोई कुछ न कहकर दोस्ती निभाता है।

कुछ रिश्ते खून के होते हैं,
कुछ रिश्ते पैसे के होते हैं।
जो लोग बिना रिश्ते के ही
रिश्ते निभाते हैं।
शायद वही "दोस्त" कहलाते हैं।

जिन्दगी में कुछ दोस्त करीब बन गए,
कोई दिल में तो कोई आंखों में बस गए,
कुछ दोस्त आहिस्ता से बिछड़ते चले गए,
पर जो दिल से ना गए, वो आप बन गए।

आपकी दोस्ती हमारी सुकून का राज है।
आप जैसे दोस्त पे हमें नाज है,
चाहे कुछ भी हो जाए, दोस्ती
वैसे ही रहेगी, जैसे आज है।

तेरे हर एक दर्द का एहसास है मुझे,
तेरी मेरी दोस्ती पर बहुत नाज है मुझे,
कयामत तक न बिछड़ेंगे हम दो दोस्त,
खुद से भी ज्यादा भरोसा आज है मुझे।

ऋतु गीत

सावन में सूखे रह गए, बिरहन बिन भाग नहाये।
श्याम घटा घन गहर-सी आवै।
देख लहर पै लहर-सी आवै।
हमें कृष्ण बिन कहर-सी आवै।
आये फिर सलोनी आती।
हमें श्याम बिन वृथा लगाती।
गंगादास चैन न पाती।
हम मोह सिंधु में बह गए,
कहाँ धोवैं दाग हमारे।।

विदाई गीत

काहे को ब्याही बिदेस रे, लखी बाबुल मेरे।
हम हैं रे बाबुल खूंटे की चिड़िया,
कंकरी मारे उड़ जाये रे, लखी बाबुल मेरे।
हम हैं रे बाबुल खूंटे की गउएं,
जिधर हांके हांक जायें रे, लखी बाबुल मेरे।
घर भी सूना आंगन भी सूना
लाडो चली पिया घर त्याग।
घर में तो उस के बाबुल रोवैं, अम्मा बहिन उदास।
कोठे के नीचे से निकली पालकिया-निकली पालकिया,
आज नीचे से निकली है डोला,
भइया ने चाही है पाखड़।

यह क्यों?

हर आती सांस मापने का अभ्यास,
कदम कदम नाप चलने का अभ्यास,
छाया में थमने की आदत, यह क्यों?

जब देखो दिल में उफान
अटे-अटे से चाल-चलन
सिर से पांवों तक आत्म-विश्वास, यह क्यों?

जीवन के दर्शन पर दिन-रात
पण्डित विद्वानों जैसी बात
लेकिन मूर्खों जैसी हरकत, यह क्यों?

- बिना ऑक्सीजन के इंसान का जीना मुमकिन नहीं, इस अनमोल गैस की खोज सन् 1773 में हुई थी।
- तब सन् 1773 से पहले लोग कैसे जीते थे?

- पापा! टेलिफोन के ये तार इतने ऊँचे क्यों लगाये जाते हैं? इतना भी नहीं जानते?
- ये लोग फोन पर बतिया रहे हो तब कोई और न सुन सके इसलिए।

Great Success Quotes for Student

✍ Km. Kashika Gupta
B.A.-II Year

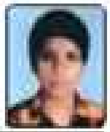

1- Success is not the key to happiness. Happiness is the key to success. If you love what you are doing, you will be successful.
2- Success does not come to you, You've got to go to it.
3- Success is not about how much money you make. It's about the difference you make in people's lives.
4- Success comes from going from failure to failure without loss of enthusiasm.
5- The difference between a successful person and others is not a lack of strength, not a lack of knowledge but rather a lack in will.
6- If your really want to do something, you'll find an excuse.
7- There are no secrets to success; It is the result of preperation, hard work, and learning. From failure.
8- The starting point of all achievement is desire.
9- Don't let yesterday take up too much of today.
10- You learn more from failure than from success. Don't let it stop you failure builds character.
11- Knowing is not enough. We must apply wishing is not enough. We must do?
12- People who are crazy enough to think. They can change the world, are the ones who do.

जो शक्तिशाली होकर भी क्षमाशील है,
जो धनिक होकर भी दानी है,
ऐसा व्यक्ति स्वर्ग से भी ऊपर रहता है।

-भगवान महावीर

हिन्दी

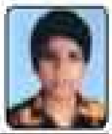

कु. [illegible]

संस्कृत की एक लाड़ली बेटी है ये हिन्दी,
बहनों को साथ लेकर चलती है ये हिन्दी।
सुन्दर है, मनोरम है, मीठी है, सरल है,
ओजस्विनी है और अनूठी है ये हिन्दी।
पाथेय है, प्रवास में, परिचय का सूत्र है,
मैत्री को जोड़ने की सांकल है ये हिन्दी।
पढ़ने व पढ़ाने में सहज है, ये सुगम है,
साहित्य का असीम सागर है ये हिन्दी।

तुलसी, कबीर, मीरा ने इसमें ही लिखा है,
कवि सूर के सागर की गागर है ये हिन्दी।
वागेश्वरी की माथे पर वरदहस्त है,
निश्चय ही वंदनीय माँ-सम है ये हिन्दी।
अंग्रेजी से भी इसका कोई बैर नहीं है,
उसको भी अपनेपन से लुभाती है ये हिन्दी।
यूं तो देश में कई भाषाएं और हैं,
पर राष्ट्र के माथे की बिंदी है ये हिन्दी।

गीत नया गाता हूँ

गीत नया गाता हूँ, गीत नया गाता हूँ,
टूटे हुए तारों से फूटे, बासंती स्वर,
पत्थर की छाती में, उग आया नव अंकुर,
झरे सब पीले पात, कोयल की कुहुक रात,
प्राची में, अरुणिमा की रेख देख पाता हूँ,
गीत नया गाता हूँ, गीत नया गाता हूँ,

टूटे हुए सपने की सुने कौन- सिसकी?
अंतर को चीर व्यथा, पलकों पर ठिठकी,
हार नहीं मानूंगा, रार नई ठानूंगा,
काल के कपाल पर, लिखता-मिटाता हूँ,
गीत नया गाता हूँ, गीत नया गाता हूँ,

कहीं खो गई हूँ

कहीं खो गई हूँ
इसलिए खुद को ढूंढने लगी हूँ....
बहुत दर्द मिला है सबसे
इसलिए अपने काम से काम रखने लगी हूँ ......
बहुत चुभती थी मेरी शिकायतें
इसलिए अपनी जुबान पर लगाम रखने लगी हूँ....
बहुत बार भरोसा टूटा है
इसलिए अब विश्वास के नाम से डरने लगी हूँ ....
कहीं खो गई हूँ
इसलिए खुद को ढूंढने लगी हूँ।

जो अपने लक्ष्य के प्रति पागल हो गया है
उसे ही प्रकाश का दर्शन होता है।
जो थोड़ा इधर, थोड़ा उधर हाथ मारते हैं,
वे कोई लक्ष्य पूर्ण नहीं कर पाते।

-स्वामी विवेकानन्द

दो शब्द

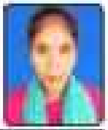

✍ [illegible]
[illegible]

1. त्याग की बगिया में ही प्रशंसा के फूल खिलते हैं।
2. मेरी हंसी का हिसाब कौन करेगा।
मेरी गलती को माफ कौन करेगा।
ऐ खुदा मेरे भइया को सलामत रखना,
वरना रक्षाबन्धन के दिन मुझसे राखी कौन बँधवाएगा।
3. जिन्दगी अगर अपने हिसाब से जीना है तो किसी से दोस्ती मत करो।
4. हुनर तो सब में होता है। फर्क बस इतना है कि किसी का छिप जाता है किसी का छप जाता है।
5. आपका खुश रहना ही आपके दुश्मन के लिए सबसे बड़ी सजा है।
6. कोई ऐसी घड़ी नहीं बना सका जो मेरे गुजरे हुए घण्टों को फिर से बजा सके।

कड़वा सच

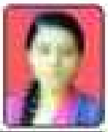

✍ [illegible]
[illegible]

1. हर सपनों को अपनी आँखों में रखो,
मंजिल को अपने बाँहों में रखो।
हर जीत है आपकी बस लक्ष्य को,
अपने निगाहों में रखो।
2. नाखून बढ़ने पर नाखून ही काटे जाते हैं, अंगुलियाँ नहीं। इसी तरह रिश्ते में दरार आये तो दरार को मिटाये जाते हैं, रिश्ते को नहीं।
3. माँ की ज्योति से नूर मिलता है,
सबके दिलों को सुकून मिलता है।
जो भक्त आता है माँ के दरबार में,
कुछ न कुछ जरूर मिलता है।
4. तकदीर इंसान की, उसकी मेहनत से संवरता है,
खुदा चाहे न चाहे, अगर बंदा चाहे तो हर कुछ कर सकता है।
5. आँखों में झूमता सावन, कलियों से खिलता फूल।
मरते दम तक ए मेरे दोस्त! इण्डिया को मत भूल।

Honesty is the best policy

प्रेरणादायक विचार

✍ [illegible]
[illegible]

मौन किसी मानव की कमजोरी नहीं,
उसका बड़प्पन होता है....
वरना जिसको सहना आता है,
उसको कहना भी आता है।

एक मिनट में जिन्दगी नहीं बदलती,
पर एक मिनट सोच कर लिया हुआ फैसला,
पूरी जिन्दगी बदल देता है।

हर बात को हृदय से लगाओगे,
तो रोते रह जाओगे।
इसलिए जो जैसा है, उसके साथ वैसा ही बनो।

जो दूसरों को इज्जत देता है,
असल में वो खुद इज्जतदार होता है।
क्योंकि इंसान दूसरों को वही दे पाता है,
जो उसके पास होता है।

अनमोल विचार

जिन्दगी बहुत कुछ सिखाती है,
कभी हँसाती है तो कभी रुलाती है।
पर जो हर हाल में खुश रहते हैं,
जिन्दगी उनके आगे सर झुकाती है।

जिन्दगी बड़ी अजीब होती है,
कभी हार तो कभी जीत होती है।
तमन्ना रखो समन्दर की गहराई को छूने की,
किनारों पर तो बस जिन्दगी की शुरुआत होती है।

अगर भरोसा ऊपर वाले पर है तो,
जो लिखा है तकदीर में वही पाओगे।
मगर भरोसा खुद पर है तो,
वो वही लिखेगा जो आप चाहोगे।

न चादर बड़ा कीजिए,
न ख्वाहिशें दफन कीजिए।
चार दिन की जिन्दगी है,
बस चैन से बसर कीजिए।

एक सैनिक का जीवन

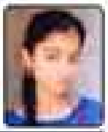

[illegible]

सैनिक एक राष्ट्र का गौरव होते हैं। वे अनुशासित, साहसी और निस्वार्थ होते हैं। उनका जीवन चुनौतियों से भरा है और वे प्रत्येक चुनौती का सामना अपने चेहरे पर मुस्कान के साथ करते हैं।

सैनिक पूरे देश को अपना परिवार समझते हैं और सीमा पर डट कर सबकी रक्षा करते हैं। हमें शान्तिपूर्ण वातावरण में रहने और अपने व्यक्तिगत जीवन पर ध्यान केन्द्रित करने का विशेषाधिकार केवल इसलिए मिलता है क्योंकि सैनिक चौबीसों घण्टे हमारे देश की रखवाली कर रहे हैं। वे देश में हर समय एक शान्तिपूर्ण वातावरण सुनिश्चित करते हैं। वे अनुशासित हैं और जिम्मेदारी से कार्य करते हैं।

मैं अपने भारतीय सैनिकों को दिल से सलाम करती हूँ।

स्वच्छता अभियान

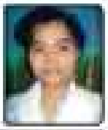

[illegible]

1. मैं नहीं तू, तू नहीं मैं
सदा ही करते, तू-तू मैं-मैं
करो कभी कोई अच्छा काम
बढ़ाये जो भारत देश का नाम।
देश की धरोहर पर है, सबका अधिकार,
फिर क्यूँ है इसकी सफाई से इन्कार।
नहीं है कोई बहुत बड़ा उपकार,
बस करना है जीवन में बदलाव।
शहर को मानकर घर अपना
निर्मल स्वच्छ है उसे भी रखना।
डस्टबिन में फेंको कूड़ा
हर जगह ना फेंको कूड़ा।
थूकने को नहीं है धरती मैया,
बदलो अपनी आदत भैया।
न करो किसी पड़ोसी का इंतजार,
देश है सबका बढ़ाओ स्वच्छता अभियान।

2. परिन्दे सोच में हैं....
परिन्दे सोच में हैं शहरों पर क्यूँ सन्नाटा छाया है,
जैसे सभी नदियों में अब स्वच्छ पानी आया है।
हर जगह भीड़ होती थी, हर जगह शोर होता था,
पर शांत-शांत है सब कुछ ये कैसा मौसम आया है।

चुटकुला

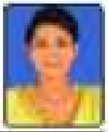

[illegible]

1. नाम और बदनाम में क्या फर्क है, नाम खुद कमाना पड़ता है, और बदनामी लोग देते हैं। जरूरत नहीं कि जिनमें सांसें नहीं वो ही मुर्दा हैं। जिसमें इंसानियत नहीं वो भी मुर्दा ही न हैं। देश कुछ इस तरह बदलने लगा है कि लोग गाय चराने में शर्म और कुत्ता घुमाने में गर्व करने लगे हैं।

2. अपना लक्ष्य हासिल करते वक्त सिर्फ यही दो सोच रखनी चाहिए। अगर रास्ता मिल गया तो ठीक, नहीं तो खुद बना लेना।

3. चूहा पार्टी में चार पैग लगाकर मस्त था। बिल्ली बोली- आज पार्टी ना होती तो मैं तुझे खा जाती।
चूहा बोला- चली जा वरना लोग कहेंगे नशे में औकात पे हाथ उठा दिया।

4. कल जो मैंने एक बच्चे से पूछा, पढ़ाई कैसी चल रही है।
उसका जवाब आया-भाई, समन्दर जितना सिलेबस है, नदी जितना पढ़ पाते हैं, बाल्टी जितना याद होती है। गिलास भर लिख पाते हैं, चुल्लू भर नम्बर आते हैं। उसी में डूब कर मर जाते हैं।

5. चूहों की गैंग तलवार लेकर भाग रही थी-
शेर ने पूछा- क्या हुआ, तुम लोग इतना गुस्से में क्यों भाग रहे हो?
चूहा- हाथी की बेटी को किसी ने प्रपोज किया है और साला नाम हमारा आ रहा है, लाशें बिछा देंगे..... लाशें।

लड़की हूँ बस इतनी सी गलती है मेरी!

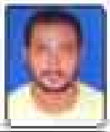

[illegible]

पिता के घर जन्मी हूँ, माँ की गलती कहते हो,
लड़की हूँ बस इतनी सी गलती है मेरी।
बेटों से घर समाज चलता है यह कहकर तुम,
स्त्रियों को अधिकारों से वंचित रखते हो।

क्यों नही स्त्रियों के बिना ये समाज चला लेते हो।
लड़की हूँ बस इतनी सी गलती है मेरी।
नवरात्रि में, मैं दुर्गा हूँ, काली हूँ, नौ देवी का रूप हूँ,
तो फिर मुझे ही क्यों गर्भ में मार देते हो।

लड़की हूँ .... गलती है मेरी।

खुद के लिए नहीं हम अपनों के लिए जीते हैं।
खुद से पहले हम, दूसरों के लिए सोचते हैं।।

अपना सब छोड़ एक अजनबी के साथ इक भरोसे पर,
हम एक नई दुनिया बसा जाते हैं।
फिर कैसे हम ही कमज़ोर कहलाते हैं।

लड़की हूँ .... गलती है मेरी।

राखी भी, माँ भी, भाई को भी रक्षाबंधन
पर बहन ही चाहिए,
नौ महीने कष्ट सहकर एक स्त्री जब बेटे को जन्म
देती है, तो बेटा बाहुबली कहलाता है,
परन्तु बेटियाँ क्यों नहीं?

लड़की हूँ .... इतनी सी गलती है मेरी।
लड़की हूँ .... गलती है मेरी।।

कामयाबी

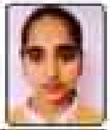

जितना बड़ा सपना होगा,
उतनी बड़ी तकलीफें होंगी।
और जितनी बड़ी,
तकलीफें होंगी, उतनी बड़ी कामयाबी होगी।

हर दो आगे जीत

सिर्फ एक वादा अपने आप से जिन्दगी भर निभाना।
जहाँ आप गलत न हो, वहाँ सिर मत झुकाना।

बेटियां

पापा की परी से जिम्मेदार बहू बन जाती हैं बेटियाँ
'तेरा-मेरा' करते-करते 'हमारा'
कहना सीख जाती हैं बेटियाँ।
थोड़ा काम में थकने वाली से पूरे घर को
संभालने वाली हो जाती हैं बेटियाँ।
हर बात में लड़ने वाली

आज चुपचाप सुन लेती हैं बेटियाँ।
पापा की हर बात में खर्च कराने वाली, एक-एक
पैसा जोड़ने वाली बन जाती हैं बेटियाँ।
सच ही कहा है किसी ने, बेटी से बहू तक बहुत
बदल जाती हैं बेटियाँ।।

काला कौआ

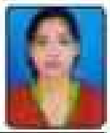

उजला-उजला हंस एक दिन,
उड़ते-उड़ते आया।
हंस देखकर काला कौआ,
मन ही मन शरमाया।

लगा सोचने उजला-उजला
मैं कैसे हो पाऊँ।
उजला हो सकता हूँ,
साबुन से मैं अगर नहाऊँ।

यही सोचता मेरे घर पर,
आया काला कागा।
और मुसकाने से मेरा,
साबुन लेकर भागा।

फिर जाकर गड्ढी पर उसने,
साबुन खूब लगाया।
खूब नहाया, मगर न अपना,
कालापन धो पाया।

मिटा न उसका कालापन तो,
मन ही मन पछताया।
पास हंस के कभी न फिर,
वह काला कौआ आया।

सकारात्मक सोच

सकारात्मक सोच से आपका
आत्मविश्वास दृढ़ होगा।
परीक्षा में मुझे सफल होना ही है।

इस सोच से अपना आत्मबल,
शतप्रतिशत सफलता प्रदान करेगा।

कर्म

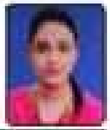

[illegible]

एक ऐसा रेस्टोरेंट है
जहाँ आर्डर देने की
जरूरत नहीं है।
हमें वही मिलता है
जो हमने पकाया है।

"यदि आप उड़ नहीं सकते तो दौड़ें,
अगर आप दौड़ नहीं सकते तो चलिए,
यदि आप नहीं चल सकते हैं तो रेंगें,
लेकिन आप जो भी करें, आगे बढ़ते रहें।"

"रास्ते पर कंकड़ ही कंकड़ हों,
तो भी एक अच्छा जूता पहनकर
उस पर चला जा सकता है....

लेकिन यदि एक अच्छे जूते के अंदर
एक भी कंकड़ हो तो
एक अच्छी सड़क पर भी
कुछ कदम तक चलना मुश्किल है।"

अर्थात्-बाहर की चुनौतियों से नहीं, हम अपनी अन्दर की कमजोरियों से हारते हैं।

कविता

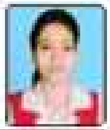

[illegible]

आज तू बिखरा है
एक रोज तू निखरेगा ही,
एक रोज तू निखरेगा ही।
ढला है जो आज सूरज

कल सुबह फिर निकलेगा ही।
माना तेरी मंजिलें, इन लोहों की जंजीरों में है।
पर तू सोच, जब तेरी लगन से
वो लोहा भी पिघलेगा ही।
मंजिलों के रास्ते में काँटे तो सभी के हैं,

पर तेरे अंदर जुनून है तो, तू काँटों पे चलेगा ही।
माना आज तू बिखरा है
एक रोज तू निखरेगा ही,

ढला है जो आज सूरज,

कल सुबह फिर निकलेगा ही।
हवाएँ विपरीत ही, क्यों न चले
तू कदम-कदम बढ़ेगा ही,

तुझे कल के लिए तैयार होना है
फिर आज तो गिरेगा ही।
तेरी कोशिश देख हवाओं का रुख
एक रोज तो बदलेगा ही,

माना आज तू बिखरा है।
एक रोज तू निखरेगा ही,
ढला है जो आज सूरज,
कल सुबह फिर निकलेगा ही।

प्रेरक शब्द

कश्तियाँ कहाँ मना करती हैं, तूफानों से टकराने को,
वो मांझी ही डर जाता है अपने आप को आजमाने को।
उम्र हमें भला कहाँ बूढ़ा करती है।
ये तो हम ही छोड़ देते हैं सां, उत्साह और जवानी का।

मंजिलों की क्या हैसियत जो हमें न मिलें
हौसला हमारा जरूरी है, उन तक पहुँच जाने को।
कोई मुसीबत भला इतनी बड़ी कैसे हो सकती है
ये हम है जो मान बैठे है, खुद को तसल्ली दिलाने को।

गलती यह नहीं कि गलती हो गयी,
गलती तो यह है कि गलतियाँ करें
ही नहीं, खुद को आजमाने को।
माना सपनों के आकाश की कोई सीमा नहीं होती,
पर पंख तो हमें ही चाहिए, आसमां में उड़ जाने को
उम्मीद भला कब टूटती है खुद,

यह तो हमारा ही डर है जो लगा है इसे मिटाने को।
असफलता का कोई हक नहीं हमारी जिन्दगी में
पर हिम्मत भी तो नहीं जुटा पाते
हम असफलता को गले लगाने को।
कुछ भी असम्भव नहीं इस जहां में,
बस ठान लें हम, असम्भव से सम्भव की दूरी मिटाने को।

अजन्मी बेटी की पुकार

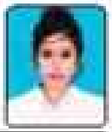

[illegible]

पूजे कई देवता मैंने, तब तुमको था पाया।
क्यों समझते हो बेटी को, धन है पराया।।
यह तो है माँ की, ममता की है छाया।
जो नारी के मन, आत्मा व शरीर में है समाया।।

मैं पूछती हूँ, उन हत्यारे लोगों से।
क्यों तुम्हारे मन में यह जहर है समाया।।

बेटी तो है माँ का ही साया।
क्यों अब तक कोई समझ न पाया।।

क्या नहीं सुनाई देती? तुम्हें उस अजन्मी बेटी की आवाज।
जो कराह रही तुम्हारे ही अंदर बार-बार।।
मत छीनो उसके जीने का अधिकार।
आने दो उसको भी जग में लेने दो आकार।।

दयानन्द सरस्वती का जीवन दर्शन

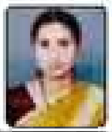

[illegible]

महर्षि जी में अद्भुत शान्ति और दृढ़ता थी वे बड़ी से बड़ी आपत्ति में तनिक घबराते नहीं थे, वे निश्चल व शान्त रहते थे। वे धर्म को कर्तव्य और उत्तरदायित्व मानते थे तथा सत्य को निष्ठा से ओढ़ते थे। महर्षि जी कहते थे कि धर्म आन्तरिक सुख है, इसको भय या लोभ से ग्रहण या छोड़ना नहीं चाहिए, सत्य से बड़ा कोई ज्ञान भी नहीं है। इसलिए सर्वदा सत्य पर चलना चाहिए। वे कहते हैं कि ईश्वर के अनेक नाम हैं जैसे-ब्रह्म, सरस्वती, राम, महादेव, शिव आदि।

वे ईश्वर, आत्मा तथा प्रकृति तीनों की सत्ता स्वीकार करते हैं तथा तीनों अपने-अपने क्षेत्र में स्वतंत्र हैं, केवल कर्म कर लेने के बाद जीवात्मा उसकी न्याय व्यवस्था में ईश्वर के अधीन है। ईश्वर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की रचना करने वाला है, उसकी निरपेक्ष न्याय व्यवस्था है। वह हर जगह उपस्थित रहता है। अजन्मा, अनन्त व सर्वशक्तिमान है, चार वेद, धर्म और सत्य की संहिता है वे अपने में पूर्ण हैं, किसी अन्य पुस्तक की सहायता की आवश्यकता नहीं है। धर्म के दस लक्षण हैं (धृति, क्षमा, दया, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध)। ईश्वर तथा आत्मा की अलग-अलग पहचान है तथा अलग-अलग विशेषताएं हैं।

आत्मा की शुद्धता के द्वारा ही ईश्वर की प्राप्ति होती है। भक्त और भगवान के बीच पिता-पुत्र का सम्बन्ध है। वही सम्बन्ध आत्मा और परमात्मा का है। महर्षि द्वारा प्रतिपादित 32 ग्रन्थ हैं। महर्षि जी अपने जीवन में अनेक वैदिक पाठशालाओं की स्थापना किये तथा समाज के चारों वर्णों को समान शिक्षा देने का कार्य किया। उन्होंने 1875 में आर्य समाज की स्थापना किया जिसका मुख्य कार्य मानव जीवन के सर्वाधिक कल्याण तथा उत्थान का प्रतिपादन करना था।

जीवन की सच्चाई

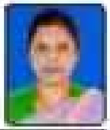

कुसुमलता
प्रवर-श्रेणी लिपिक

आँसू जता देते हैं,
दर्द कैसा है।
बेरुखी बता देती है
हमदर्द कैसा है।
घमण्ड बता देता है
पैसा कितना है।

संस्कार बता देते हैं,
परिवार कैसा है।
बोली बता देती है,
इंसान कैसा है।
बहस बता देती है,
ज्ञान कैसा है।

ठोकर बता देती है,
ध्यान कैसा है।
नज़रें बता देती हैं,
सूरत कैसी है।

स्पर्श बता देता है,
नीयत कैसी है।
और वक्त बता देता है,
रिश्ता कैसा है।

समाज में बदलाव क्यों, नहीं आता।
क्योंकि गरीब में हिम्मत नहीं,
मध्यम को फुर्सत नहीं और
अमीर को ज़रूरत नहीं।

सुबह की चाय और बड़ों की राय,
समय-समय पर लेते रहना चाहिए।
पानी के बिना नदी बेकार है,
अतिथि के बिना आँगन बेकार है।
प्रेम न हो तो सगे-सम्बन्धी बेकार है।

पैसा न हो तो पॉकेट बेकार है,
और जीवन में गुरु न हो तो जीवन बेकार है।
इसलिए जीवन में गुरु जरूरी है, गुरूर नहीं।

पीड़ाकारी आँकड़े

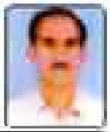

संजय कुमार सिंह
सुरक्षा

1. धूम्रपान करने वालों की संख्या 1.10 करोड़ है, इनमें से 80 करोड़ विकासशील देश के हैं और 30 करोड़ विकसित देश के।
2. ये लोग लगभग 600 करोड़ सिगरेट एक वर्ष में पी जाते हैं। भारत में रोज 55 करोड़ लोग और पूरे वर्ष में 2000 करोड़ लोग सिगरेट पी जाते हैं।
3. विकसित देशों में 41 प्रतिशत पुरुष एवं 21 प्रतिशत महिलाएं नियमित रूप से धूम्रपान करती हैं। विकासशील देशों में 50 प्रतिशत पुरुष और 8 प्रतिशत महिलाएं धूम्रपान करती हैं।
4. तम्बाकू से मरने वालों की संख्या तीन मिलियन है, इनमें से एक तिहाई विकासशील देश के होते हैं।
5. भारत में दिल के दौरे, कैंसर, अंगघात, ब्रोंकाइटिस आदि रोगों से लगभग 13 लाख लोग प्रतिवर्ष मृत्यु को प्राप्त करते हैं।
6. केन्द्रिय स्वास्थ्य ब्यूरो के अनुसार प्रतिवर्ष लगभग 2200 करोड़ रुपये तम्बाकू जनित बीमारियों के इलाज पर खर्च हो जाता है।

7. भारत में कैंसर से 10 प्रतिशत, सांस की बीमारी से 70 प्रतिशत, दिल की बीमारी से 25 प्रतिशत मृत्यु का कारण धूम्रपान है।

8. भारत में तम्बाकू से होने वाली बीमारियों के इलाज में औद्योगिक इकाइयाँ अपने कर्मचारियों के इलाज हेतु तीन हजार करोड़ रुपये प्रतिवर्ष का नुकसान उठाती है।

9. भारत में लगभग साढ़े चार लाख हेक्टेयर भूमि में तम्बाकू की खेती की जाती है।

10. भारत में पचालीस करोड़ किलो तम्बाकू उत्पादन के लिहाज से वह विश्व में तीसरे स्थान पर है।

11. तम्बाकू के इस्तेमाल से सन् 2020 के बाद हर वर्ष एक करोड़ व्यक्ति मरेंगे।

मित्रता

यूँ तो आज के जमाने में दोस्ती-यारी ज्यादातर अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए ही की जाती है, पर जरा गहराई से विचार किया जाए तो अच्छी और सच्ची मित्रता बहुत बड़ी चीज होती है और सही मायने में सत्संग का ही एक रूप होती है। जिस व्यक्ति को घर में अच्छी गुणवती पत्नी और बाहर अच्छा स्नेही और गुणवान मित्र मिल जाए, उसका घर और बाहर, दोनों ही सुधर जाते हैं, कल्याणकारी एवं मंगलकारी हो जाते हैं। जैसे धर्म का पालन करने वाले के लोक-परलोक दोनों ही सुधर जाते हैं। शास्त्र ने ठीक ही कहा है-"यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धि सधर्मः" अर्थात् जो आचरण इस जीवन और आगामी जन्म के लिए शुभ और कल्याणकारी हो, वैसा आचरण करना धर्म है। मित्रता भी ऐसा ही एक धर्म है जिसे धारण करके ही मित्रता का निर्वाह किया जा सकता है। इसका एक उत्तम उदाहरण है-दूध और पानी की मित्रता। पानी दूध के प्रेम में ऐसा समर्पित हो जाता है कि अपना अहंकार यानी निज स्वरूप को छोड़ दूध में समा जाता है।

शुभ विचार

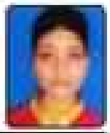

- [illegible]

1. जिन्दगी में हमेशा सबकी कमी बनो, पर कभी किसी की जरूरत नहीं। क्योंकि जरूरत तो हर कोई पूरी कर सकता है। पर किसी की कमी कोई पूरी नहीं कर सकता है।

2. जिसका जैसा चरित्र होता है, उसका वैसा ही मित्र होता है। शुद्धता होती है विचारों में, आदमी कब पवित्र होता है। फूलों में भी कीड़े पाए जाते हैं, पत्थरों में भी हीरे पाए जाते हैं, बुराई को छोड़ कर देखिए तो सही, नर में भी नारायण पाए जाते हैं।

3. अच्छे इंसान सिर्फ और सिर्फ अपने कर्म द्वारा ही पहचाने जाते हैं। क्योंकि अच्छी बातें तो बुरे लोग भी करते हैं।

औरत की सच्चाई

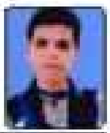

[illegible]

कभी-कभी लगता है, औरत होना एक सजा है, न पढ़े तो अनपढ़ जाहिल, पढ़ ले तो पढ़ाई का घमण्ड है। शादी ना करे तो बदचलन, नकचढ़ी है और कर ले तो अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे, सज के निकल कर पड़े तो चालाक है, निकल कर न पड़े तो घमण्डी। पढ़ लिखकर घर रहे तो क्यों इतने सारे पैसे खोए, नौकरी करे तो 'पर' निकल आये, नौकरी का घमण्ड है। सहकर्मियों से बात करे तो चलता पुर्जा, ना करे तो छोटी सोच वाली, इस तरह औरत का बड़ा लम्बा चिट्ठा है, साहब क्या कहूँ, अच्छा है कि चुप ही रहूँ।

सफलता

[illegible]

सफलता कौन नहीं पाना चाहता, हर एक व्यक्ति चाहता है कि सफलता स्वयं चलकर उसके पास आये और उसके कदम चूमें........

अब सफलता कदम केवल उनकी चूमती है जिनके पैर धरातल पर होते हैं.......

सफलता उनको नहीं मिलती जो घर पर बैठे-बैठे स्वप्न देखते हैं, सफलता स्वयं चलकर उनके पास आती है जो निरन्तर प्रयास करते हैं.... और अपने इस जीवन में दूसरों के लिए स्वप्न बनाकर दिखाते हैं..... स्वप्न भी साकार करना चाहते हैं, स्वप्न तभी साकार होंगे जब परिश्रम करोगे। और सफलता तभी तक आपके साथ रहेगी जब तक आप विनम्र रहोगे।

तो प्रेम से बोलिए- राधे-राधे।

मंजिल

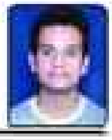

[illegible] कुमार सिंह

पा ही लेंगे आखिर मंजिल, राहों के मोहताज नहीं।
साथ हो उम्मीदों का, कल होगा वही जो आज नहीं।।

तट पर बैठे-बैठे ख्वाब, वो ख्वाब ही रह जाना है।
गहराई तक जाना होगा, मोती जो हमें पाना है।।

उड़ना है और भी ऊपर, ऊँचाइयां हैं पुकारती।
है अपार क्षमताएं हममें, आशाएं हमें निहारती।।

मुश्किलें कब ठहरीं जब हो चट्टानी इरादा।
छू के ही दम रखा है, जब हमने ऊँचाइयों का वादा।।

क्या हुआ जो साथी छूट गया, क्या हुआ जो फासला छूट गया।
हमें रुकना नहीं है, बस निरन्तर चलते रहना होगा।।

माना कि जीवन के हर पथ
पर माली पुष्प नहीं बिखेरता है,
प्रगति का पथ अक्सर पथरीला होता है।

लेकिन उन्नत शिखर से गिरकर जो भी हंसते हैं,
नए शिखर की तलाश में, कदम उन्हीं के बढ़ते हैं।
कदम उन्हीं के बढ़ते हैं।।

सच्चाई

प्रिया यादव
बी.एड.-द्वितीय वर्ष

1. अगर सपने सच ना हो तो तरीका बदलो, सिद्धान्त नहीं। क्योंकि पेड़ हमेशा पत्तियां बदलता है, जड़ें नहीं।
2. सफलता तभी मिलती है जब आपके सपने आपके डर से बड़े हो जाए।
3. सपने वे नहीं होते जो सोते समय आते हैं, सपने वे होते हैं, जो सोने नहीं देते हैं।
4. जिन्दगी को "आसान" नहीं, खुद को "मजबूत" बनाना पड़ता है।
5. समस्या के बारे में सोचने से बहाने मिलते हैं, लेकिन समाधान के बारे में सोचने पर रास्ते मिलते हैं।
6. अनुभव की पाठशाला में जो पाठ सीखे जाते हैं, वे विश्वविद्यालयों और पुस्तकों में नहीं मिलते हैं।
7. "मौन और मुस्कान दोनों का इस्तेमाल कीजिए, मौन रक्षा कवच है तो मुस्कान स्वागत और आकर्षण है।
8. वक्त कब क्या रंग दिखाए, हम नहीं जानते वरना, जिस 'राम' को शाम को राज्य मिलना था, उसे सुबह वनवास नहीं मिलता।

गम

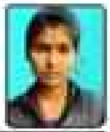

अंकिता झा
बी.एड.-द्वितीय वर्ष

दिल टूट जाए हमारा फिर भी मुस्कुराना पड़ता है...
घुट-घुट के रोते हैं,
सबसे आँसू छिपाना पड़ता है।
जिम्मेदारियों के पीछे हमारा इश्क
भी मुकम्मल नहीं होता
वैसे तो आजाद घूमते हैं
मगर वह भी कोई पिंजरे से कम नहीं होता......

जिम्मेदारियाँ निभाते-निभाते हमारे
खुद का कोई अरमान नहीं बचते,
अपना तो हम सब चाहते हैं मगर,
हमारे लिए आसमान नहीं बचते।
हम हर किसी का घाव भरते हैं मगर,
हमारा कोई मरहम नहीं होता।
अजी! कौन कहता है जनाब
हम लड़कियों के जीवन में कोई गम नहीं होता।

जिन्दगी

जो लम्हा साथ है
उसे जी भर के जी लेना।
ये कम्बख्त जिन्दगी
भरोसे के काबिल नहीं।
जिन्दगी में कोई टूटे तो
उसे सम्भालना सीखो।
जिन्दगी में अगर कोई रूठे
तो उसे मनाना सीखो।
ये रिश्ते बड़े किस्मत

वालों को मिलते हैं,
जिन्दगी में रिश्तों को
निभाना सीखो।
जिन्दगी उसी को आजमाती है,
जो हर मोड़ पर चलना जानता है।
कुछ पाकर तो हर कोई मुस्कुराता है
जिन्दगी शायद उसकी ही होती है
जो बहुत कुछ खोकर भी
मुस्कुराना जानता है।

The Road Not Taken

Nitu Yadav
[illegible]

Two roads diverged in a yellow wood,
And sorry I could not travel both
And be one traveler, long I stood
And looked down one as far as I could
To where it bent in the undergrowth;
Then took the other, as just as fair,
And having perhaps the better claim,
Because it was grassy and wanted wear;

Though as for that the passing there
Had worn them really about the same,
And both that morning equally lay
In leaves no step had trodden black
oh, I kept the first for another day
yet knowing how way leads on the way
I doubted if I should ever came back
shall be telling this with a sigh.

बेटियाँ

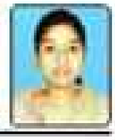

[illegible]
[illegible]

हर परिवार के कुल को बढ़ाती हैं बेटियाँ,
फिर भी पैरों तले कुचल दी जाती हैं बेटियाँ।

कैसा है ये अजीब बर्ताव,
बेटे और बेटी के बीच ये।
कैसा है भेदभाव।
जब पालन-पोषण से पनपते हैं,
विचार तो बेटी भी बन सकती है,
माता-पिता का आधार।

खिलती हुई कलियाँ हैं, बेटियाँ
माँ-बाप का दर्द समझती हैं बेटियाँ,
घर को रोशन करती हैं बेटियाँ।
लड़के आज हैं तो आने वाला,
कल हैं बेटियाँ।

बेटी बिना नहीं सजता घरौंदा,
बेटी ही है संस्कारों का परिंदा
अगर दोगे उसे भी छूना आसमान
तो बेटी भी,
बढ़ायेगी परिवार का नाम।

शुभ विचार

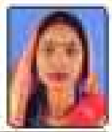

[illegible]
[illegible]

1. किसी को दुख मत देना, किसी को आहत करो तो क्या करो, किसी को स्वीकार हंसे भी तो क्या हंसे।
2. सोना रखने के लिए लॉकर मिल जाएगा, रुपये रखने के लिए बैंक मिल जाएगा, पर दिल की बात कहने के लिए सही इंसान बड़ी मुश्किल से मिलता है जनाब।
3. "कदर" और "वक्त" भी कमाल के होते हैं जिसकी "कदर" करो वो वक्त नहीं देता और जिसको "वक्त" दो वो कदर नहीं करता।
4. जीवन में यदि कोई आपके किये गये कार्य की तारीफ न करे, तो चिन्ता मत करना, क्योंकि आप उसी दुनिया में रहते हैं, जहाँ तेल एवं बाती जलती है मगर लोग कहते हैं कि दीपक जल रहा है।
5. विचार अच्छे हैं तो अपना मन ही मंदिर है,

आचरण अच्छा है तो अपना तन ही मंदिर है।
व्यवहार अगर अच्छा है तो अपना मन ही मंदिर है,
यह तीनों अच्छे हों तो अपना जीवन ही मंदिर है।

6. कभी भी उनसे मत डरो,
जो बहस करते हैं।
पर उनसे जरूर डरो,
जो छल करते हैं।

7. खुद अगर मान चाहो तो,
औरों का भी मान रखो।
कहने को अगर जीभ मिली है तो,
सुनने को भी कान रखो।

किताब

[illegible]
[illegible]

सही किताब वह नहीं है जिसे हम पढ़ते हैं,
सही किताब वह है जो हमें पढ़ाता है।

पुस्तकों का मूल्य रत्नों से अधिक है,
क्योंकि पुस्तकें अन्तःकरण को उज्ज्वल करती हैं।

आज के लिए और सदा के लिए,
सबसे बड़ा मित्र है अच्छी पुस्तक।

बोलने से पहले सोचो, सोचने से पहले पढ़ो।

बिना शब्दों की किताब बिना चुम्बन के
प्रेम के समान है, वो खाली है।

किताबों में इतना खजाना छुपा है, जितना
कोई लुटेरा कभी लूट नहीं सकता।

पुस्तक एक बगीचा है जिसे जेब में रखा जा सकता है।

बनें हम!

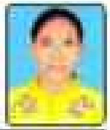

[illegible]
[illegible]

बने अगर तो फूल बनें हम, आकर्षक तन पाएं।
अच्छे कार्यों की सुवास से, वसुन्धरा महकाएं।

जलें अगर तो दीपक बनकर, तम को दूर भगाएं।
ज्योतिर्मय करके जीवन हम, सुषमा जग में पाएं।

सरिता बनकर बहें सतत, जन-जन की तृषा बुझाएं।
आजीवन करके परहित, सागर में पुनः मिल जाएं।

बनें दयालु मेघों जैसे, त्याग अमर कर जाएं।
हिमगिरी जैसे अटल बनें, हर बाधा से लड़ जाएं।

चाहे जितना कष्ट मिले, हम कभी नहीं घबराएं।
सत्पथ पर चलकर आजीवन, जन्म सफल कर पाएं।

माँ-बाप

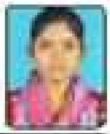

[illegible]
[illegible]

माँ-बाप की एक दुआ
जिन्दगी बना देगी...
खुद रोयेगी मगर आपको हँसा देगी।
कभी भूल कर भी
माँ-बाप को ना रुलाना

अपना एक छोटी सी बूँद
पूरी धरती हिला देगी।

जो मस्ती आँखों में है
मदिरालय में नहीं,
अमीरी दिल की कोई
महालय में नहीं।
शीतलता पाने के लिए
कहाँ भटकता है मानव!
जो माँ-बाप की गोद में है,
वह हिमालय में नहीं।

नया साल

[illegible]

नया साल लेकर आया है, खुशियों की सौगात,
तुम्हें सुनाऊँ दुनिया वालों, जियो हजारों साल।
जनवरी ओस को भर देती है
फरवरी है बहार,
मार्च महीना रंगों का है, फागुन माह बहार।
अप्रैल की तो बात न पूछो,
मई में ढोल बाजा

जून जल्दी सी जल्दी बीते, गर्मी से परेशान।
जुलाई बरसाई सावन,
अगस्त हुई न शान्त।
आई उमड़क नवम्बर में, दीप सजे हजार।
दिसम्बर है अंत महीना, भूलें गलती हजार,
नया साल लेकर आया है, खुशियों की सौगात
तुम्हें सुनाऊँ दुनिया वालों, जियो हजारों साल।

वक्त की पुकार

[illegible]

गुजरने दे इस वक्त को,
वक्त का क्या, फिर आएगा?
बस जी लें, हर एक पल,
ये पल, ना फिर तू पाएगा।।

जो बुरी यादें घटी, उसे छोड़ दें,
जो अच्छी यादें जुड़ी, उसे जोड़ लें।
एक ही उम्र है, पास अपने
ये उम्र, ना फिर तू पाएगा।।

गर्मी से वो तपता यौवन,
जाड़े में वो ठिठुरता मन,
हर मौसम का बदलता रंग,
ये मौसम, ना फिर तू पाएगा।।

ये जिन्दगी, तो एक धोखा है,
जिन्दगी का क्या भरोसा है?
जो मुस्कान है, उसे थाम ले,
आँखों से मुख का काम ले,
चली गई अगर मुस्कान,
ये मुस्कान, फिर ना तू पाएगा।।

जिन्दगी

[illegible]

जिन्दगी पहेलियों का एक अनोखा तूफान है,
और अच्छी चल रही है जिन्दगी, ये बस कहना ही आसान है।

जिन्दगी काटने वाले तो बहुत हैं पर जीते कुछ ही इंसान हैं,
दुखी हर कोई, बस खुश वही जिसके हाथ में इसकी कमान है।

गलत निर्णय के लिए, लम्बी सी जिन्दगी एक बोझ के समान है,
और जिन्हें मौकों की तलाश है, उनकी जिन्दगी एक खुला आसमान है।

जिन्दगी कोई हाथों की लकीरें नहीं शायद, किन्तु हर रास्ते का ज्ञान है,
और जिसे जिन्दगी का असली ज्ञान है, वही इसमें महान है।

सुविचार

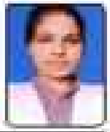

– अंकिता गुप्ता
[illegible]

1. अपने हिसाब से जियो.....
   लोगों की सोच का क्या?
   वो तो कंडीशन के हिसाब से बदलती रहती है।
   अगर चाय में मक्खी गिरे,
   तो चाय को फेंक देते हैं....
   और अगर ....
   देसी घी में गिरे, तो मक्खी को फेंक देते हैं।

2. दो अक्षर का होता है "लक"
   ढाई अक्षर का होता है "भाग्य"
   तीन अक्षर का होता है "नसीब"
   साढ़े तीन अक्षर का होता है "किस्मत"
   पर चारों के चारों चार अक्षर ...
   "मेहनत" से छोटे होते हैं।

3. कभी भी आप ऐसा न सोचें कि आप क्या कर सकते हैं, बल्कि आप हमेशा ऐसा सोचे की हम क्या नहीं कर सकते।

4. यदि आप वही करते हैं, जो आप हमेशा से करते आये हैं तो आपको वही मिलेगा जो हमेशा से मिलता आया है।

5. किसी भी मनुष्य की इच्छाशक्ति अगर उसके साथ हो तो वह कोई भी काम बड़े आसानी से कर सकता है। इच्छाशक्ति और दृढ़संकल्प मनुष्य को रंक से राजा बना सकता है।

6. लोहे के गर्म होने का इन्तजार मत करो, बल्कि अपनी लगन द्वारा इसे गर्म बनाओ यानी समय का इन्तजार मत करो बल्कि ऐसी कोशिश करो कि समय आपके अनुकूल हो जाये।

2020 की यादें

[illegible]

– [illegible]
[illegible]

इसमें संतुष्टि और असंतुष्टि का बसेरा पाया जायेगा,
कइयों के परिवार अंत हो गये, इस साल के अंत होते ही,
कइयों को असली मित्र मिल गया, नकली मित्र खोते-खोते।

कुछ महान हस्तियों से नाता टूट गया इस साल में,
कुछ ऐसा हुआ मानो अपनों का ही ये हाल हुआ हो।
कुछ नये तरीके सीखें, कुछ नई रीति अपनाई,
मजा आने लगा लूडो के खेल में, भूल गये थे 'वाई-फाई'।

रामायण और महाभारत को देख, बचपन की धड़कन वापस आ गयी,
अश्लीलताओं को अपनी जगह और औकात सही से पता चल गयी।
जो सालों से फंसी रही और टली रही पहलें,
आखिरकार बंद हुई 'निर्भया' के दोषियों की अटकलें।

कोरोना का कहर तो शायद याद रहे अगर,
ऐसी चीजें घटी जो शायद कभी न घटी हो जीवन भर।
'सोनूसूद' की अविस्मरणीय कर्मठ भावना को सलाम,
उनके कामों को देख खुदा ने भी, भेजा होगा खुशियों का पैगाम।

आईपीएल को देखने, पूरा परिवार एक जुट हो जाता,
पता नहीं चलता, मस्ती में एक मैच कब खत्म हो जाता।
साल का आज आखिरी दिन, अपने गलतियों के पिटारे खोलें,
साल के आने से पहले, लोगों से 'माफी' के शब्द अपने मुँह से बोलें।

खुश हूँ

ज़िन्दगी है छोटी, हर पल में खुश हूँ,
काम में खुश हूँ, आराम में खुश हूँ।

आज पनीर नहीं, दाल में ही खुश हूँ,
आज गाड़ी नहीं, पैदल ही खुश हूँ।

आज कोई नाराज है,
इसके इस अंदाज से ही खुश हूँ।

जिसको देख नहीं सकती,
उसकी आवाज से ही खुश हूँ,
जिसको पा नहीं सकती,
उसको सोच कर ही खुश हूँ।

बीता हुआ कल जा चुका है,
उसकी मीठी याद में ही खुश हूँ।
आने वाले कल का पता नहीं,
इंतजार में ही खुश हूँ।

हँसता हुआ बीत रहा है पल,
आज में ही खुश हूँ।
ज़िन्दगी है छोटी, हर पल में खुश हूँ।
अगर दिल को छुआ, तो जवाब देना?
वरना बिना जवाब के ही खुश हूँ।

बचपन

एक बचपन का जमाना था,
जिसमें खुशियों का खजाना था...
चाहत चाँद को पाने की थी,
पर दिल तितली का दीवाना था।
खबर ना थी कुछ सुबह की,
ना शाम का ठिकाना था ...

थक कर आना स्कूल से,
पर खेलने भी जाना था।
माँ की कहानी थी,
परियों का फँसाना था ....
बारिश में कागज की नाव थी,
हर मौसम सुहाना था ....।

सच

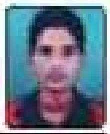

[illegible]

क- सफलता हमसे छः चीजें माँगती है-

1. हद से ज्यादा मेहनत।
2. बुरी आदतों का त्याग।
3. संघर्ष करने की हिम्मत रखना।
4. अपने कार्य पर विश्वास रखना।
5. धैर्य रखने की काबिलियत।
6. अपने कार्य के प्रति जुनून।

ख- हमारा जीवन भी वृक्ष के समान है।

हम जन्म लेते हैं, बढ़ते हैं, फलते हैं।
और एक दिन नष्ट हो जाते हैं।
जरूरी यह नहीं है कि हम कितने
दिन जिए, अपितु हमें यह देखना
है कि हमने कितनी शीतलता दी,
और कितनों को फल दिए,
कितनी सुगन्धें दी, नहीं हमारे
वश में हमारा जन्म लेना और
नष्ट होना,
यह प्रकृति के वश में है।

ग- अनपढ़ होना कोई बुरी बात नहीं है।

लेकिन पढ़ा-लिखा होकर अन्ध-
विश्वासी, पाखण्डी और मूर्ख होना
चिन्ता का विषय है।

घ- अज्ञानता से भय पैदा होता है। भय से अंधविश्वास पैदा होता है। अन्धविश्वास से व्यक्ति का विवेक शून्य हो जाता है और जिसका विवेक शून्य हो जाता है वह इंसान मानसिक गुलाम हो जाता है। इसलिए अज्ञानी नहीं ज्ञानी बनो।

सुविचार

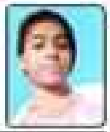

कु. [illegible] ठाकुर

लोग कहते हैं दुःख बुरा होता है,
जब आता है, रुलाता है।
मगर हम कहते हैं, दुःख अच्छा होता है,
जब भी आता है कुछ न कुछ सिखा देता है।

जिन्दगी में अच्छे लोगों की तलाश मत करो,
खुद अच्छे बन जाओ, आपसे मिलकर,
शायद किसी की तलाश पूरी हो जाये।

वक्त भी सिखाता है और गुरु भी,
पर अन्तर सिर्फ इतना है,
गुरु सिखाकर इम्तिहान लेता है,
और वक्त इम्तिहान लेकर सिखाता है।

ये जरूरी तो नहीं कि इंसान
हर रोज मन्दिर जाए, बल्कि
कर्म ऐसे होने चाहिए कि,
इंसान जहाँ भी जाए,
मन्दिर वहीं बन जाए।

विश्वास एक छोटा सा शब्द है, पढ़ो तो एक सेकेण्ड लगता है, सोचो तो मिनट लगता है, समझो तो दिन लगता है, पर साबित करने में जिन्दगी लग जाती है।

मैं भारत भाग्य विधाता हूँ

– अतुल प्रेम
[illegible]

मैं भारत भाग्य विधाता हूँ,
भारत की बात बताता हूँ।
संपूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न बनाने में
हमने तो जी-जान लगा दिया,
नियम कानून बनाने में
हमने तो संविधान लगा दिया,
सभ्यता और संस्कृति की
शाश्वत परिभाषा हूँ।
हिन्दू-मुस्लिम छोड़ो तुम
आसान सनातनी भाषा हूँ,
मैं भारत भाग्य विधाता हूँ।
जहाँ राम सिखाते
पीड़ा, संघर्ष जीवन का,
जहाँ कृष्ण सिखाते अर्थ
जन्म, मरण का
दोनों के पद चिह्नों पर
चलने की राह दिखाता हूँ,
मैं भारत भाग्य विधाता हूँ,
भारत की बात बताता हूँ।।
जहाँ देशभक्ति की बात पर
छोटी हो जाती बेईमानी,
जहाँ दीन रंगों की बात पर
लोग हो जाते हैं दीवाने
अधर्मी के आगे जब
धर्म की जीत होती है।
कुरीतियों के आगे जब
सत्कर्म की जीत होती है,
यहाँ लोगों को तो छोड़ो तुम
पत्थर को पूज्य समझता हूँ,
मैं भारत भाग्य विधाता हूँ,
भारत की बात बताता हूँ।।
दे दिया है मैंने राम तो
पैगम्बर को भी तो दिया हूँ,
दे दिया है विक्रमादित्य को मैंने
शून्य से अम्बर दिया हूँ।
दे दिया है मैंने वेदव्यास को
कालिदास जी को दिया हूँ,
दे दिया है मैंने तुलसी को
कबीरदास को भी तो दिया हूँ।
आर्यभट्ट के शून्य की खोज से
धरती का रूप समझाता हूँ,
मैं भारत भाग्य विधाता हूँ,
भारत की बात बताता हूँ।।
जब मन हो जाए अशांत प्रिये
जीवन हो जाए शमशान प्रिये,
अपनों से नाता टूटेगा
ये संसार जब तुमसे रूठेगा।
जब अकेला तुम हो जाओगे,
जब कुछ भी ना तुम पाओगे।
तो देख लेना राम को
तो देख लेना श्याम को
देखना तब तुम एक बार पुराण को
देख लेना गीता और कुरान को।
अपनी ही पहचान करना तुम।
जीवन को यूँ दान मत करना तुम,
आगे की लड़ाई अभी बाकी है
जीवन की पढ़ाई अभी बाकी है,
उठना और चलना,
चल के फिर संभलना,
गिरना और फिर उठना,
दुख और सुख के मतलब को
बारम्बार दोहराता हूँ,
मैं भारत भाग्य विधाता हूँ,
भारत की बात बताता हूँ।।

सिक्किम राज्य के फूल

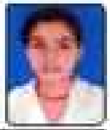

[illegible]

हिम पर्वत पर मिलने वाले,
फूल बड़े मतवाले हैं।
छोटी झाड़ी से पौधे तक,
इसके रूप निराले हैं।
छह हजार मीटर ऊँचाई,
तक पाया जाता है।

धीमी गति बढ़कर अपना
सुन्दर रूप सजाता है।
फूल रूप से सिक्किम,
सर्दी सहने वाला है।
मोटे डंठल, चौड़ी पत्ती,
चौड़े-पेड़ निराले हैं।

आते ही गर्मी का मौसम,
फूल अनोखे आते हैं।
पहले होते ये कली से,
फिर गुलाब सा हो जाते हैं।
अंग सभी उपयोगी इसके,
औषधि खूब बनाते हैं।

रोग भयानक लगने वाले,
छूमंतर हो जाते हैं।
हिम पर्वत पर मिलने वाले,
फूल बड़े मतवाले हैं।

बेटी होना आसान नहीं

[illegible]

बेटी होना आसान नहीं होता .....
माँ का सपना और पिता का है अभिमान,
पर नन्ही-सी इन परियों को एक दायरे से
बाहर कभी उड़ान नहीं होता।
और जितना सोचते हैं हम, लड़कियों की
जिन्दगी उतना आसान नहीं होती।

जमाने के साथ चलना
इन्हें बेशक सिखाया जाता है,
पर साथ ही एक दायरा भी समझाया जाता है।
खुद की दुनिया में, ये खुद महफूज नहीं होती।
और जितना सोचते हैं हम,
लड़कियों की जिन्दगी, उतना आसान नहीं होती।

कहने को बेशक लड़कों के बराबर है,
पर जन्म से इनमें कमियाँ निकाली जाती है,
गलतियाँ सबकी नजर अंदाज करती है बेशक,
पर नजरिये से किसी की अंजान नहीं होती
और जितना सोचते हैं हम,
लड़कियों की जिन्दगी उतना आसान नहीं होती।

नकारात्मक सोच

[illegible]

एक चील का अण्डा किसी तरह एक जंगली मुर्गी के घोंसले में चला गया और बाकी के अण्डों के साथ मिल गया। समय आने पर अण्डा फूटा। चील का बच्चा अण्डे से बाहर निकलने के बाद यह सोचता हुआ बड़ा हुआ कि वह मुर्गी है। वह उन्हीं कामों को करता, जिन्हें मुर्गी करती थी। वह जमीन खोदकर दाने चुगता, और मुर्गी की तरह कुड़कुड़ाता। वह कुछ ही फीट तक उड़ान ही भरता था क्योंकि मुर्गी ऐसी ही करती थी। एक दिन आकाश में चील को शान से उड़ते हुए देखा। उसने मुर्गी से पूछा-"उस सुन्दर चिड़िया का क्या नाम है?" मुर्गी ने जवाब दिया-"वह चील है। वह एक शानदार चिड़िया है, लेकिन तुम उसकी तरह उड़ान नहीं भर सकते, क्योंकि तुम तो मुर्गी हो।" चील के बच्चे ने बिना सोचे-विचारे मुर्गी की बात को मान लिया। वह मुर्गी की जिन्दगी जीता हुआ मर गया। सोचने की क्षमता न होने के कारण वह अपनी विरासत खो बैठा। उसका कितना बड़ा नुकसान हुआ, वह जीतने के लिए पैदा हुआ था पर वह दिमागी रूप से हार के लिए तैयार हुआ।

माँ-बाप

महेन्द्र कुमार झा
[illegible]

कद किस्मत के लिये कोई ताली नहीं होती,
सूखी उम्मीदों की कोई डाली नहीं होती।
जो झुक जाए माँ-बाप की चरणों में,
उसकी झोली कभी खाली नहीं होती।

फूल कभी दो बार नहीं खिलते,
जन्म कभी दो बार नहीं मिलते
मिलने को तो हजारों लोग मिल जाते हैं,
लेकिन हजारों गलतियाँ माफ करने वाले
माँ-बाप नहीं मिलते।

मेरी तकदीर में कभी कोई गम नहीं होता,
अगर तकदीर लिखने का हक मेरी माँ को होता।
बिना बताये वो हर बात जान लेती है,
माँ तो माँ है, मुस्कुराहटों में गम पहचान लेती है।

कुछ बातें

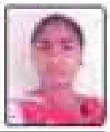

दुर्गा [illegible]
[illegible]

1. दिन हुआ है तो रात भी होगी,
हो मत उदास कभी बात भी होगी,
इतने प्यार से की है दोस्ती, जिन्दगी
रही तो मुलाकात भी होगी।
न तेरे याद में रोना चाहती हूँ,
जब तक जिन्दगी है
हम तुम्हारे साथ रहना चाहती हूँ।

2. हम वो नहीं
जो मतलब से याद करते हैं,
जो किसी से प्यार करते हैं,
आप का पैगाम आये या न आये
हम रोज आपको दिल से याद करते हैं।

3. जिन्दगी अभिलाषा है
गजब इसकी परिभाषा है
जिन्दगी क्या है यारों मत पूछो-
संवर गई तो जन्नत है,
बिखर गई तो तमाशा है।

हम पूर्ण आर्य मानव बने रहें

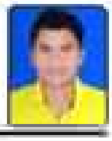

[illegible]
[illegible]

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तो अराव्णः।।
(ऋग्वेद 9/63/5)

अनन्त, अनादि, परम् पराक्रमी परमेश्वर की
वाणी हम भी सुनते रहे पूरी श्रद्धा से।
सदा स्वस्थ रहे, सबल रहें,
सत्कर्म परायण, सदाचरण तत्पर रहें।
वेदोपदेशानुकूल सतोगुणी दिनचर्या
अपनाकर श्रेय पथ पर बढ़ते रहें।।

कृपणों, पापियों और दुष्टों से सर्वथा
दूर रह हम सज्जनों का साथ करें।।

सदाचारी, ज्ञानी, अनुभवी और परोपकारी
गुरुजनों की ससम्मान सेवा किया करें।
उनके ही अनुशासन और आज्ञापालन में
सहर्ष रहकर हम पूर्ण आर्य मानव बने रहें।
हम पूर्ण आर्य मानव बने रहें।।

हम बेटियाँ

– ज्योति शर्मा
[illegible]

अक्सर एक याद आँखों से बह निकलती है।
मैं समझती बहुत हूँ, पर ये ना समझती है।
याद उस वक्त की, जब मैं छोटी थी।
याद उस वक्त की, जब मैं अपने पापा की बेटी थी।

जिनके लिए मेरी हर बड़ी सी
ख्वाहिश भी बस इतनी सी होती थी।
याद उस वक्त की, जब मेरी हर ख्वाहिश पूरी होती थी।
बहुत ढूंढती हूँ वो वक्त, पर न जाने कहाँ खो गया।

बड़े होने पर मुझसे, मानों जैसा सब कुछ ही बदल गया।
मेरा बचपन एक दिन में छिन गया। जब अब तुम इनकी
अमानत हो कह कर मुझे एक नये घर भेज दिया गया।
फिर वो घर और उसका हर रिश्ता ही बदल गया।

कल तक जो अपने थे, वो पराये हो गये
कुछ लोग नये, कुछ नये रिश्ते, जिन्दगी में शामिल हो गये।
अब ना पहले सी वो मस्ती है, और न
वो शरारतों भरा वो जीना है।

बेइन्तहा मुझ पर अब सिर्फ
जिम्मेदारियों का बोझ है।
कल तक जो एक बेटी थी, आज माँ बन गई।
और नयी परिभाषा से, जीवन की हर
भाषा ही बदल गई।

प्यार मिलता बहुत है,
अब भी, फिर भी एक कमी सी लगती है।
मुझे आज भी उस घर की, याद बहुत खलती है।
बेटियाँ पराया धन है,
ये नियम जिसने भी बनाया होगा,

एक पल को लिए भी शायद
रोना तो उसे भी आया होगा।
समझ ही न पायी कि आज तक,
कौन सा घर मेरा है

वो जिसकी मैं रौनक थी या
ये अब जिसमें मेरा बसेरा है।

घायल पंख हुए हैं, हौसला नहीं

जो खामोशी को चीर के न निकले, वो तूफान कैसा,
वो जो गिर के फिर से ना सम्भले, वो इंसान कैसा।

एक पिंजरे में बंद एक चिड़िया
आसमान को बस देखती रहती है,
बाकी चिड़ियों को उड़ते देख
अपने पंख न होने पर रोती रहती है।

सोचती हूँ मैं क्यों नहीं औरों जैसी
क्या मुझमें कमी है,
ऐसी बेबस लाचार पिंजरे में पड़ी
अपनी बेबसी पर वो कोसती है।

हालांकि पंख थे उसके पास बताई नहीं थी,
जो कोई ये बात पिंजरे में कभी पंखों को खोल न पाई
वो भी उड़ सकती है, खुद से कभी ये बोल न पायी।
आसमान उसे अच्छा लगता था
मन ही मन प्यार करती थी उसे, पर
कभी छू नहीं पायेगी उसको
इस लिए कुछ कहने से डरती थी।
सोचती काश अपने भी दो पर होते
आसमान की बाँहों में उड़ते
अपना भी वो यार होते
तभी अचानक एक दिन पिंजरा किसी ने खोल दिया
पर वो उड़ ना पायी।

पंख होते हुए भी उसके पास खुद से वो लड़ न पायी।
सोचती मैं लाचार पंखों से बेजान हूँ,

उड़े कैसे इस आसमान में
मैं तो हर तरह से बेकार हूँ।

किस्मत को भी उस पर तरस न आया।
अचानक कहीं से एक उड़ता हुआ बाज आया।

चिड़िया पर झपटा, पंजो में पकड़ा
और आकाश में उड़ा लाया।

नोच के खाने को चिड़िया को
बाज ने था शिकार बनाया।

पर अगले ही पल भगवान को
उस पर उपकार आया।

यकीन न हुआ, चिड़िया को ऐसा चमत्कार हुआ।

एकदम बाज की नियती उससे रूठ गयी
पकड़ ढीली पड़ी हुई और चिड़िया उससे छूट गई।
खुद को जब चिड़िया ने गिरता पाया,
तब उसे अपने पंख होने का एहसास आया।

खोल के पंखों को
हवा में उसने यूं फैलाया।

आजादी का ना रहा ठिकाना उसे
खुशी ने कर दिया दिवाना उसे,

फिर जो उसने उड़ान भरी, अपने सपनों को पूरा
करने उड़ी, भूल के अपने पिछली जिन्दगी को,
पहली बार हुई अपने पैरों पे खड़ी।

कल तक किस्मत को कोसने वाली

आज अपने तकदीर पर इतराने लगी
कल तक आंसू बहाने वाली,
आज अपनी मुस्कान की मोती गिराने लगी।
देखते-देखते आसमान से
उसका प्यार परवाना हो गया।
आसमान की गहरी बांहो में बस उसका कहीं दिल
खो गया।

अभी तो लेकिन रास्ते की शुरूआत थी
मंजिल मिलने तक न जाने कितने मुश्किलों
से मुलाकात थी

कि अभी कुछ ही वक्त गुजरा था उसे मुस्कुराते हुए,
इतने में एक शिकारी आया कहीं से इतराते हुए।
चिड़िया का उड़ना उसे रास न आया।
फिर से नीचे गिराने को उसने निशाना लगाया।
पंखों पर निशाना लगाया, जो तीर निशाने पर लगा
वो घायल जमीन पर गिरी।
इस तरह फिर कभी न हो पायी अपने पैरों पे खड़ी
वो हमेशा के लिए बिछड़ गयी,
सब सपने क्यों दिखाये,
खुदा ने उसे फिर आजादी के वो सपने,
हौसला दिखा के हिम्मत छिन ली
उड़ना सिखा के उड़ना छिन ली।
न मिलती कभी आसमान से
न होती प्यार की कोई बात
मिल के न मिलना तो ऐसे है,
जैसे बिना लकीरों वाला हाथ,
पर तभी चिड़िया ने गर्दन उठाई
हालातों से लड़ने की हिम्मत जुटाई।
घायल पंखों को फैलाके ऊपर पेड़
की डाल तक उड़ायी।
बोली, जितने भी इम्तिहान लेगा अब,
वो करेगी हर इम्तिहान को पास,
सोच से बड़ा कुछ भी नहीं घायल पंख
हुए हैं हौसले नहीं।
हर बार लड़ेगी चाहे जितने भी आए तूफान
और हिम्मत नहीं हारेगी अब
तो खुद पर है उसे पूरा विश्वास।
फिर से होगी अपने पैरों पे
खड़ी पंख फिर हिलायेगी
अपने उड़ानों से पूरा आकाश देखना,
फिर आसमान से उसका मिलन होगा
फिर से सुनहरा हर कल होगा।
फिर लौटेगी उसकी जिन्दगी में भी खुशियां
फिर से खड़ा उसके सपनों का महल होगा।
मंजिल उन्हीं को मिलती है,
जिनके सपनों में जान होती है।
पंखों से कुछ नहीं होता हौसलों से उड़ान होती है।

बेटियाँ

ज्योति

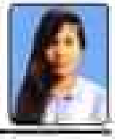

1. खिलती हुई कलियाँ है बेटियां,
माँ-बाप का दर्द समझती है बेटियां।
घर को रोशन करती है बेटियां,
लड़के आज है तो आने वाला
कल है बेटियां।

2. बेटे भाग्य से होते है,
पर बेटियां सौभाग्य से होती है,
जरूरी नहीं रौशनी चिरागों से ही हो,
बेटियां भी घर में उजाला करती हैं।

3. जिस घर में होती है बेटियां,
रौशनी हर पल रहती है वहां।
हरदम सुख ही बरसे उस घर,
मुस्कान बिखरे बेटिया जहाँ।

4. बता नहीं सकते,
इन बेटियों के कितने रूप है,
बस ये समझ लो
सर्द मौसम में सुहानी सी धूप है बेटियां।

5. बेटे माँ-बाप को
स्वर्ग तक ले जाते हैं,
पर जो स्वर्ग को
जमीन पे ले आये,
वो होती है बेटियां।

6. वो बागां बेकार, जहां तितलियां नहीं,
वो कश्ती है खाक, जहां मस्तियां न हो,
वह घर आंगन सुनसान, शमशान के जैसे
वो मकान क्या मकान, जहां बेटियाँ न हो।

7. बेटियों के बिना नहीं सजता आशियां,
बेटियां है संस्कारों का परिचय
अगर होंगे उसे खुला आसमान,
तो बेटियां भी बढ़ायेंगी मान।

8. नूर-ए-मोहब्बत में
चाँद फीका नज़र आता है।
बेटी जब देता, मासूम चेहरा मुस्कुराता है।
जिनको मिली वो समझा, ए शुक्र करो।
ईश्वर की तरफ से
खास इनायत होती है बेटियां।

9. बेटी की मोहब्बत को,
कभी आजमाना नहीं।
वो फूल है, उसे कभी रूलाना नहीं।
बाप का तो मान होती है बेटी,
जिन्दा होने की पहचान होती है बेटी।

10. माँ-बाप का दर्द समझती,
सपनों का अरमान है बेटी।
भाई की आंखों का तारा,
ईश्वर का एहसास है बेटी।

11. बेटियां सबके मुकद्दर में कहां होती है?
घर खुदा को जब पसंद आता है
बस वहां बेटियां होती हैं।

12. सास ने पूछा, बहू दहेज में
क्या -क्या ले आई।
किसी ने ना पूछा, बेटी
क्या-क्या छोड़ आई।

13. चाँद गगन सूरज है बेटी,
सच पूछो भगवान है बेटी।

सपनों की लाठी

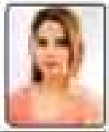

[illegible]

एक बार की बात है, एक गाँव में एक लड़का रहता था जिसका नाम शिव था, जो कि पढ़ने-लिखने में बेहद होशियार था और लगभग सभी परीक्षाओं में अपनी कक्षा में प्रथम आया करता था। उसके माता-पिता एवं उसके सभी गाँववासी उससे काफी अपेक्षाएं रखा करते थे और कहा करते थे कि वह अपनी जिन्दगी में कुछ न कुछ करके जरूर दिखाएगा एवं उसे अपने आप से भी काफी अपेक्षाएं थीं। उसका लक्ष्य था कि वह बेहद ही प्रसिद्ध लेखक ब्राज़ीलियन लेखक पाउलो कोएल्हो की तरह बनना चाहता था एवं उनकी किताबें पढ़ता रहता था। वह अभी मात्र 18 साल का ही था, लेकिन उसने लगभग 5 से 6 किताबें लिख चुका था।

शिव एक गरीब परिवार से सम्बन्ध रखता था। इसलिए उसके माता-पिता उसके लेखक बनने से बिल्कुल भी प्रसन्न नहीं थे और वह चाहते थे कि उसका लड़का भी सरकारी नौकरी करे, जिससे उन्हें गाँव एवं समाज में इज्जत मिले और इसी बात को लेकर वे शिव पर बहुत ज्यादा दबाव बनाया करते थे कि वह लेखक न बनकर पढ़-लिख कर एक अच्छी सी नौकरी करे। इसी दबाव के चलते शिव का ध्यान अपने लक्ष्य से हट गया और वह पढ़ने-लिखने में भी ध्यान नहीं लगा पाया। जिसके कारण उसका मानसिक संतुलन गड़बड़ हो जाता और उसका मन किसी भी कार्य में नहीं लगता। यह सब देखकर उसके माता-पिता एवं उसके गाँववासी उसके प्रति चिंतित हो गये, तभी गाँव में एक वृद्ध व्यक्ति शिव के माता-पिता को यह सलाह देता है कि आप इसके शिक्षक से बात करें और इस समस्या का कोई समाधान निकालने की कोशिश करें। तभी शिव के माता-पिता उसके स्कूल के शिक्षक के पास गये एवं उनसे बात करते हैं तो शिक्षक उसके माता-पिता को बताते हैं कि आपका लड़का बहुत ही होशियार छात्र है लेकिन वह सरकारी नौकरी नहीं करना चाहता है। वह एक लेखक बनना चाहता है एवं उसने बहुत सी किताबें भी लिखी हैं जो कि बेहद सुन्दर किताबें हैं। शिक्षक शिव के माता-पिता से पूछते हैं क्या आपने कभी उसकी किताब पढ़ी है, तो इस प्रश्न के जवाब में उसके माता-पिता कहते हैं कि नहीं, हमने उसकी किताबें नहीं पढ़ी हैं। शिक्षक की यह बात समझ में आ जाती है कि उनका पुत्र जो कार्य कर रहा है वह गलत नहीं है एवं अब वह उसे सरकारी नौकरी के लिए परेशान ना करते हुए उसे एक लेखक बनने में मदद करने लगते हैं, जिसके कारण शिव अपने सपनों को पूरा करने में लग जाता है और वह इस क्षेत्र में बहुत नाम भी कमाता है और अपनी कमाई से माता-पिता की भी सहायता करता है।

इस कहानी से शिक्षा- इस कहानी के माध्यम से उन माता-पिता को कहना चाहता हूँ जो अपने बच्चों पर दबाव डालते हैं। वह यह दबाव डालकर उनके सपनों और खुशियों का गला घोट देते हैं। इसलिए उनके सपनों को पूरा करने के लिए उनकी मदद करें जिससे वह शिव की तरह अपने जीवन में सफल हो पाये और उनकी राह में बाधा न बनकर उनकी सपनों की लाठी बनने की कोशिश करें, जिससे वह एक सफल इंसान बन सके।

हाँ मैं खामोश रहना चाहता हूँ

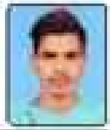

[illegible]
[illegible]

छोड़ दिया किसी का दीदार करना,
छोड़ दिया किसी का इंतजार करना,
अपनी डूबती हुई नाव को किनारों पर लाना चाहता हूँ,
क्योंकि अब मैं अपने दिल की सुनना चाहता हूँ,
हाँ, मैं खामोश रहना चाहता हूँ।

किसी और का फ़िक्र न करके,
अपने आप की फ़िक्र करना चाहता हूँ,
किसी और को प्यार न करके,
अपने आप से प्यार करना चाहता हूँ,
क्योंकि अब मैं अपने आप में रहना चाहता हूँ,
हाँ, मैं खामोश रहना चाहता हूँ।

नहीं आता मुझे, दूसरों के जज्बातों से खेलना,
नहीं आता मुझे, किसी से ज्यादा आगे बढ़ना,
सबकुछ छोड़कर अपना, अलग अंदाज बनाना चाहता हूँ,
मैं खुद को खुद से तसल्ली दिलाना चाहता हूँ,
हाँ, मैं खामोश रहना चाहता हूँ।

चलती राहों को न पकड़ कर,
जीने के लिए नई राह बनाना चाहता हूँ,
दूसरों से अलग एक अपनी नजरिया बनाना
चाहता हूँ,
अपना एक अलग संसार बनाना चाहता हूँ,
हाँ, मैं खामोश रहना चाहता हूँ।

परहित का महत्व

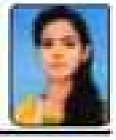

[illegible]
[illegible]

एक बार विधाता ने अपने दूत को पृथ्वी पर यह पता लगाने के लिए भेजा कि पृथ्वी में स्वर्ग प्राप्ति के योग्य कितने भक्तगण हैं। दूत ने आकर संसार के हजारों भक्तों एवं पुजारियों के नाम-पते अपने रजिस्टर में अंकित कर लिया। दूत के विदा होते समय उसे एक अंधा चौराहे पर लालटेन जलाकर खड़ा मिला। दूत ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। विधाता ने जब दूत का रजिस्टर देखा तो उसमें उस अंधे का नाम न था। विधाता ने स्वर्ग के सच्चे अधिकारी की परिभाषा बताते हुए, दूत के रजिस्टर को रद्द कर दिया। उन्होंने उस अंधे को स्वर्ग का सच्चा अधिकारी बताया जो पूजा-पाठ तो नहीं करता था, किन्तु विश्व-व्यवस्था में भगवान का सहयोग कर अंधकार में राहगीरों का मार्गदर्शन कर रहा था। दूसरों की सेवा करना ईश्वर तक पहुँचने की बहुत बड़ी सीढ़ी है।

कविता

कोरोना आया कोरोना आया,
सबसे पहले वुहान में आया,
फिर बाद में भारत आया,
यह कोरोना है जान लेवा,
हमने इसे मार भगाया,
कोरोना आया कोरोना आया,

हमने कोरोना पर हमला बोला,
सबको हमने सावधान कराया,
पूरे भारत बन्द करवाया,

हमने इसका दवा मंगवाया,
कोरोना को हमने मार भगाया,
कोरोना आया कोरोना आया,

कोरोना ने हमें एक सीख पढ़ाया,
सबसे पहले हाथ धुलवाया,
उसके बाद यह दूरी बनवाया,
नहीं तो यह है जानलेवा,
कोरोना आया कोरोना आया।

संतोषम् परम् सुखम्

मनुष्य अनेक वस्तुएं चाहता है। अपने से बड़े और सुखी सम्पन्न स्थिति के लोगों को देखकर यह इच्छा उत्पन्न होती है कि हमारे पास भी इतना ही वैभव और ऐश्वर्य क्यों न हो? इस प्रकार की तृष्णा ही असंतोष का कारण बनती है। हमें चाहिए कि अपने से नीचे गिरे हुए दुखी और गरीबों से अपनी तुलना करते हुए संतोष की सांस लें कि परमात्मा ने हमें सबसे कमजोर भले ही बनाया है। पर असंख्यों से ऊँचा भी रखा है। असंतोष यदि एक कारण में होता है तो सौ कारण संतोष के भी होते हैं जो कुछ संतोष के कारण हमें प्राप्त है, उन पर विचार करें और उनसे अपना चित्त प्रसन्न रखने का प्रयत्न करें, दृष्टिकोण के बदलते ही मन की खिन्नता का प्रत्यावर्तन प्रसन्नता और उत्साह में हो जाता है। हर किसी की इच्छा भी पूरी नहीं हुई, सबको जो कुछ मिला है उसी पर सब्र करके अधिक प्राप्ति के लिए प्रयत्न करते रहना पड़ता है। यही क्रम शान्तिदायक है, इसी को अपनाकर हम संतोष के अधिकारी बन सकते हैं। महत्वाकांक्षी गुण होना चाहिए। हम दूसरों की अपेक्षा अधिक स्वस्थ, अधिक संयमी, अधिक सेवाभावी, अधिक धार्मिक बनें। ये प्रतिस्पर्द्धाएं यदि होने लगे तो व्यक्ति का पतन असंभव ही होगा।

पहेली

1. सर्दी गर्मी या बरसात दिन-दोपहर या हो रात सीमा पर ये मिल जाता है दुश्मन इनसे घबराता है।

   - सैनिक

2. गोल हूँ पर गेंद नहीं, पूछ है पर पशु नहीं, पूंछ पकड़कर खेले बच्चे पर मेरे आंसू न निकलते।

   - गुब्बारा

3. ऊँट की बैठक, हिरण सी तेज चाल, कौन-सा जानवर है जिसके पूंछ न बाल।

   - मेंढक

4. पत्तों के अन्दर है बन्द, स्वादिष्ट जैसे कलाकंद, ताजा हो या मेला, खाया जाता है अकेला।

   - केला

5. एक पैर है काली, धोती जाड़े में वह हरदम सोती, गर्मी में है छाया देती, सावन में वह हरदम रोती।

   -छतरी

6. ना कभी किसी से किया झगड़ा, ना कभी करो लड़ाई, खुशियों में शामिल होता सबकी, फिर भी होती रोज पिटाई।

   -ढोलक

7. सत्य, शान्ति और समृद्धि दुनिया को सिखलाता है। गर्व से सिर ऊँचा होता है, जब ये सामने आता है।

   - तिरंगा

8. मोटा पेट है मेरा भाई, मुख है मेरा छोटा गोल, प्यासे को मैं प्यास बुझाऊँ, रहस्य पहचान खोल।

   -मटका

सुविचार

[illegible]
[illegible]

- माँ सबसे पहली और अच्छी शिक्षिका होती है।
- माता-पिता से बढ़कर कोई चीज मूल्यवान नहीं होती है।
- अगर हमें आगे बढ़ना है तो अपने मनोबल को नहीं छोड़ना चाहिए।
- शिक्षा वह शस्त्र है जिससे आप दुनिया को बदल सकते हैं।
- सभी के हाथ दुआओं में अगर उठते हैं, लेकिन सबकी दुआएं पूरी नहीं होती।
- जिन्दगी को जीने के लिए नसीब की जरूरत होती है।
- दूसरों की चीज देखकर परेशान मत हो, भगवान तुझे भी देंगे।
- सपने पूरे नहीं होते, संकल्प पूरे होते हैं।
- दूसरों की सहायता करो, तब तुम्हारी सहायता करेंगे।
- दुनिया तो सच्चाई के लिए सबूत माँगती है।
- मन को वश में करना सबके वश की बात नहीं है।
- आप हद से न गुजरें, सब मिलता है नसीब से।
- अगर आप सच्चाई पर विश्वास करें तो पूरी कायनात जुड़ जाती है।
- नदी का पीछा करो, सागर तक पहुँच जाओगे।
- हाथों की लकीर पर विश्वास मत करो, तकदीर तो उनकी भी होती है जिनके हाथ नहीं होते।

- कुछ पल बैठा करो माँ-बाप के पास, हर चीज नहीं मिलती मोबाइल के पास।
- कुछ पल बैठा करो बीबी के पास, हर चीज नहीं मिलती टीवी के पास।
- कुछ पल बैठा करो बच्चों के पास, हर चीज नहीं मिलती व्यापार के पास।
- कुछ पल बैठा करो गुरु के पास, हर चीज नहीं मिलती गूगल के पास।
- कुछ पल बैठा करो दोस्तों के पास, हर चीज नहीं मिलती फेसबुक के पास।
- कुछ पल बैठा करो खुद के पास, हर चीज नहीं मिलती व्हाट्सएप्प के पास।
- जितना लगन और प्यार से लोग अपने परिवार के लिए मकान बनवाते हैं,
- उसी मकान और परिवार में प्यार से रहना भूल जाते हैं।
- रिश्तों को इस तरह से बचा लिया कर, कभी मान जाया कर और कभी मना लिया कर।
- वक्त निकाल कर अपनों से मिला करो, अगर अपने ही ना होंगे तो क्या करोगे वक्त का।

मंजिल

- नया जिन्दगी, नई शुरुआत करते हैं।
- जो उम्मीद औरों से की थी, वो अब खुद से करते हैं।
- अगर किसी और की तुलना में आपको सफलता के लिए ज्यादा वक्त लग रहा है तो बिल्कुल भी निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि

घर बनने से ज्यादा वक्त बंगला बनाने में लगता है।

- ना पूछो कि मेरी मंजिल कहाँ है, अभी तो सफर का इरादा किया है।
- ना हारूँगी हौसला उम्र भर ये मैंने किसी से नहीं खुद से वादा किया है।
- मंजिलें भी जिद्दी हैं, रास्ते भी जिद्दी हैं, देखते हैं कल क्या होगा, हौसले भी जिद्दी हैं।

थोड़ा थक सा जाता हूँ...!

[illegible]
[illegible]

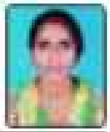

थोड़ा थक सा जाता हूँ अब मैं,
इस लिए दूर निकलना छोड़ दिया है।
पर ऐसा भी नहीं है कि अब,
मैंने चलना ही छोड़ दिया है।

फासले अक्सर रिश्तों में,
अजीब सी दूरियां बढ़ा देते हैं।
पर ऐसा भी नहीं है कि अब मैंने,
अपनों से मिलना ही छोड़ दिया है।

हाँ जरा सा अकेला महसूस करता हूँ,
खुद को अपनों की ही भीड़ में,
पर ऐसा भी नहीं है कि अब मैंने,
अपनापन ही छोड़ दिया है।

याद तो करता हूँ मैं सभी को,
और परवाह भी करता हूँ सब की,
पर कितनी करता हूँ,
बस बताना छोड़ दिया है।

जय-जवान, जय-किसान

आजादी के 74 साल बाद,
ये कैसा दौर आया है,
एक जवान कश्मीर के बार्डर पर लड़ता है,
और किसान दिल्ली के बार्डर पर
ये कैसी सरकार और ये कैसी राजनीति है,
देश के दो महान सपूतों को आमने-सामने
खड़ा कर रखी है।

जिनकी बदौलत देश का नाम खड़ा रहता है,
आज उन्हीं के ऊपर वाटर कैनन और
लाठी चार्ज की जाती है।

हद तो तब हो जाती है जब,
किसानों को किसानों के रूप में
आतंकवादी कहा जाता है,

हद तो तब हो जाता है जब युवाओं को नौकरी
मांगने पर नक्सली कहा जाता है?
जिसे हमारे देश का पालनहार कहा जाता है,
और आज उसी की रोटी पर
सवाल किया जाता है।

क्या जय जवान, जय किसान का नारा रह गया है?
क्यों जब जवान वर्दी में है तो देश भक्त
और किसान के लिए मांग कर रहा है
तो देशद्रोही कहा जाता है।

***क्रांति का कल्पना से मेल ही सविनय अवज्ञा है।
आम जन और व्यक्तियों के लिए सविनय अवज्ञा को
स्थायी मानसिक रुझान के रूप में विकसित करना होगा।***

-डॉ० लोहिया

तीखे वचन

घबराने की पैसे तो कोई बात नहीं,
बस मेरे सिवा कोई साथ नहीं।
जो कुछ भी मिला है इनाम है मेरा,
ये वक्त की कोई खैरात नहीं।

कदम अगर सही राह पर हो,
और मन में हो पूरा हौसला।
तो कोई भी मंजिल ज्यादा दिनों तक
आपसे दूर नहीं रह सकती है।

सामने हो मंजिल तो रास्ते ना मोड़ना,
कदम-कदम पे मुश्किलें मिलेंगी आपको,
बस सितारे चुनने के लिए जमीन मत छोड़ना।

उठती लहरों को साहिल की दरकार नहीं होती,
हौसलों के आगे कोई दीवार नहीं होती।
जलती हुए चिराग ने आंधियों से कहा,
जलने के लिए रोशनी की दरकार नहीं होती।

मानने के लिए आंखना जरूरी है,
और जानने के लिए दिमाग हमेशा खुला रखो।
जहाँ से सुझे पहिए, विकास के पहल उसके मूल से
ही निकलते हैं।

अतीत के आइने से धूल हटाए बिना,
भविष्य की कल्पना आकार नहीं ले सकती।
आप चाहे जो भी करें, एक बार अपने से पूछ लें
कि क्या यह सार्थक है?

किताबों का महत्व

किताबें हैं ज्ञान का सागर।
भर देती है हमारे जीवन में ज्ञान का गागर।
इनको न बेकार समझेंगा
इनके बल पर हमें आगे है बढ़ना।
ये अकेलेपन में हमारा साथ है निभाती,
सबसे अच्छी दोस्त कहलाती।
जब भी जीवन में कोई बाधा है आती,
किताबें ही हमें आगे बढ़ने का मार्ग दिखाती।
जब भी हम असमंजस में होते,
हमें सत्य के मार्ग पर चलना सिखाती।
इनको पढ़ने से मिलता है जीवन में,
सांस्कृतिक, सामाजिक,
राजनैतिक व आध्यात्मिक ज्ञान।
इनको पढ़ने से आता है जीवन में आत्मविश्वास,
इसलिए किताब को कहा जाता है ज्ञान का प्रकाश।
इनके माध्यम से हम जीवन में पाते हैं,
धन, सम्पत्ति, वैभव का आकाश।
हम अपने खाली समय को व्यर्थ न गवायें,
बल्कि इनसे अपने ज्ञान कोष को बढ़ायें।
किताबें हैं ज्ञान का सागर,
भर देती है हमारे जीवन में ज्ञान का गागर।

अपकार हमेशा खुश रहना आपको दुश्मनों के लिए सबसे बड़ी सजा है।

–कौटिल्य

Thought

Shweta Shrma
[illegible]

1- Education makes a man to human, and built a civilized person.
2- Happiness in not key of success. Because success is the key of happiness.
3- Education is the most important thing of humanity.Education is humanity of human.
4- Education is the first path of mature life, And enter the universe, "Dear Student."
5- Education is the most important for everybody.
6- Study is good for better life.
7- Good work gives good thing.
8- Good man good thought is good for all person.
9- Everybody is selfish for their feelings, willings work, "I also."
10- Be positive, Think positive.
11- Never stop believing in yourself.
12- Everything is depend upon our thought.
13- Practice makes a man perfect.
14- Friends are flower in the garden of our life.
15- A good book gives us good knowledge.
16- Study is student life.

दुनिया का सबसे कड़वा सच

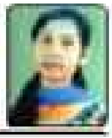

मितु सिंह कुशवाहा
[illegible]

दुनिया का सबसे कड़वा सच

इस दुनिया का सबसे कड़वा सच बारात में दूल्हा सबसे पीछे और दुनिया सबसे आगे होती है। शमशान यात्रा में व्यक्ति सबसे आगे होते हैं, दुनिया सबसे पीछे होती है। यानी कि दुनिया खुशी में आपके आगे होती है और दुःख में पीछे हो जाती है। अजब तेरी दुनिया, गजब तेरा खेल। मोमबत्ती जलाकर मुर्दों को याद करना और मोमबत्ती बुझाकर जन्मदिन मनाना, वाह रे हमारी दुनिया।।

ऐ खुदा सारी इबादतें तुझसे फरियाद करती हैं, सलामत रखना उनको जो पत्तियों से प्यार करती है।

बहुत दूर तक जाना पड़ता है, सिर्फ ये जानने के लिए कि नजदीक कौन है। वक्त आपका है चाहो तो सोना बना लो, चाहो तो सोने में गुजार दो। वक्त हालात देखकर बदलता है और अपने नीयत देख कर बुरा करने का विचार आए तो कल पे टालो, अच्छा करने का विचार आए तो आज ही कर डालो। पीठ हमेशा मजबूत रखनी चाहिए क्योंकि शाबाशी और धोखा दोनों पीठ पीछे से ही मिलते हैं। सच्चे इंसान को झूठे इंसान से अक्सर ज्यादा सफाई देनी पड़ती है। सच को तमीज ही नहीं, बात करने की, झूठ को देखो कितना मीठा बोलता है। पसन्द आए तो कोई अपना नहीं तो कोई पराया, कई बार मन करता है, हार मान लूं लेकिन बाद में याद आता है। अभी तो मुझे बहुत लोगों को गलत साबित करना है। ये वो दौर है जहाँ मासूमियत को बेवकूफी कहा जाता है। अपनी उम्र और पैसों पर कभी घमण्ड मत करना क्योंकि जो चीजें गिनी जा सके वो यकीनन खत्म हो जाती हैं। मेरी मंजिल मेरे करीब है, इसका मुझे एहसास है, घमण्ड नहीं मुझे अपने इरादों पर, ये मेरी सोच और हौसले का विश्वास है। आधी जिन्दगी गुजार दी हमने पढ़ते-पढ़ाते और सीखा क्या? एक दूसरे को नीचा दिखाना। जीवन में इतना तो संघर्ष कर लेना चाहिए कि अपने बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए। दूसरों के बुरे वक्त पर हंसने वालों वक्त जब भी शिकार करता है तो वो हर दिशा से वार करता है।

चुटकुले

[illegible]

- एग्ज़ाम देते हुए... लड़का
  लड़की से- तीसरे प्रश्न का उत्तर बताओ ना।
  लड़की- नहीं आता।
  लड़का- पांचवे प्रश्न का उत्तर बता दो।
  लड़की- नहीं आता।
  लड़का- 10, 11, 12 का
  लड़की- वो भी नहीं आता।
  लड़का- अगर तेरे 80 प्रतिशत अंक आये तो क्राइम पेट्रोल में मर्डर का एपिसोड जरूर आयेगा।

- भारत में 1000 लड़कों पे 945 लड़कियों का रेशियो है। मतलब 55 लड़के बिना शादी के रहते हैं। और ये 55 लड़के ही आगे जा कर अब्दुल कलाम, वाजपेयी और रतन टाटा बनते हैं। बाकी के 945 फ्यूज़ की तीन सीढ़ी देने के बाद गैस बन्द करते हैं।

- बच्चा- पापा जैसे आप मुझे मारते हो...
  क्या दादा जी भी आपको मारते थे...
  बाप- हाँ बेटा।
  बच्चा- तो ये खानदानी पागलपन कब तक चलेगा।

- एक नवविवाहित जोड़ा बर्तन की दुकान में झगड़ रहा था।
  पत्नी- ये वाला स्टील का गिलास लो।
  दुकानदार-साहब जी महिला दिवस भले ही चला गया है, लेकिन मैडम जो कह रही वही गिलास ले लीजिए ना।
  पति- अरे भईया, तुम्हें बेचने की पड़ी है लेकिन इस छोटे से गिलास में मेरा हाथ घुसता नहीं है। मैं इसे मांजूंगा कैसे?

- पत्नी- तुम्हारे शर्ट पर एक भी बाल नहीं है
  पति- हां, तो क्या हुआ?
  पत्नी- मैं पूछती हूं कौन है वो टकली जिससे तुम्हारा अफेयर चल रहा है।

- क्लास में टीचर ने बच्चों को एक निबन्ध लिखने के लिए दिया।
  आलस्य क्या है?
  बन्टी ने तीन पेज खाली छोड़ दिए और अन्त में लिखा आलस्य यही है।

माता-पिता की नसीहत सबको बुरी लगती है, पर माता-पिता की वसीयत सबको अच्छी लगती है। माता-पिता के बिना घर कैसा होता है? अगर इसका अनुभव करना है तो एक दिन अपने अंगूठे के बिना सिर्फ उंगलियों से सारे काम करके देखो। माता-पिता की कीमत तब पता चल जायेगा। माता-पिता की जितनी जरूरत हमें बचपन में होती है उतनी ही जरूरत उनको बुढ़ापे में हमारी होती है। माँ-बाप का दिल दुखाकर अपनी जन्नत को दोज़ख मत बनाओ।

क्या खूब लिखा है किसी ने संगत का असर पक्का रखना साहब.... संगत अगर आपकी खराब होगी और बदनाम माँ-बाप पर भी उतना ही विश्वास रखो जितनी दवाइयों पर रखते हो, बेशक थोड़े कड़वे होंगे, पर आपके फायदे के लिए होंगे।

दोस्ती

प्रियंका सिंह
[illegible]

क्यों मुश्किल में साथ देते हैं दोस्त,
क्यों गम को बाँट लेते हैं दोस्त।
न रिश्ता खून से, ना रिवाज से बंधा,
फिर भी जिन्दगी भर साथ देते हैं दोस्त।।

पलकें तो आँखों की हिफाजत होती है,
धड़कन तो दिल की अमानत होती है।
ये दोस्ती का रिश्ता भी अजीब है,
क्या चाहत भी कभी शिकायत होती है?

दोस्ती का रिश्ता दो अनजानों को जोड़ देता है,
हर कदम पर जिन्दगी को नया मोड़ देता है।
सच्चा दोस्त साथ है तब,
जब अपना साया भी साथ छोड़ देता है।।

जीवन में कुछ दोस्त दर्पण और
कुछ दोस्त परछाई जैसे जरूर रखना, क्योंकि
दर्पण कभी झूठ नहीं बोलता और
परछाई कभी साथ नहीं छोड़ती।।

किनारों पे सागर के खजाने नहीं आते,
फिर जीवन में दोस्त पुराने नहीं आते।
जी लो इन पलों को हँस के जनाब
फिर दोस्ती के जमाने, लौट के नहीं आते।।

दोस्ती और प्यार में सबसे बड़ा
फर्क पता है, क्या है?
प्यार कहता है अगर तुम्हें कुछ हो
गया तो, मैं जी नहीं पाऊँगा,
जबकि दोस्त कहता है कि बेवकूफ
मेरे रहते तुझे कुछ नहीं हो पायेगा।।

पहरुए सावधान रहना

अजय कुमार
[illegible]

आज जीत की रात
पहरुए, सावधान रहना
खुले देश के द्वार
अचल दीपक समान रहना।

प्रथम चरण है नये स्वर्ग का
है मंजिल का छोर।
इस जन-मन्थन से उठ आयी
पहली रत्न हिलोर।
अभी शेष है पूरा होना
जीवन मुक्ता डोर
क्योंकि नहीं मिट पायी दुख की
विगत साँवली कोर।

ले युग की पतवार
बने अम्बुधि महान रहना,
पहरुए, सावधान रहना।

विषम शृंखलाएं टूटी हैं
खुली समस्त दिशाएँ।
आज प्रभंजन बनकर चलतीं
युग बन्दिनी हवाएँ।
प्रश्नचिह्न बन खड़ी हो गयीं
यह सिमटी सीमाएँ।

वे कितने निर्धन हैं जिनके पास धैर्य नहीं।
क्या आज तक कोई घाव बिना धैर्य के ठीक हुआ है।

-शेक्सपियर

मन की सोच

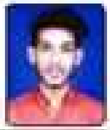

1. आवाज़ को नहीं, अपने अल्फ़ाज़ को ले जाओ बुलंदी पर,
बादलों की गरज नहीं, बारिश की बौछार फूल खिलाती है।
2. लफ़्ज़ों के भी स्वाद (ज़ायके) होते हैं,
परोसने से पहले आस्वादन कर लेना चाहिए।
3. ज़िद कई बार बरबाद कर देता है,
कई बार आबाद करने में भी कसर नहीं छोड़ता।
4. किसी के सुख का कारण बनो, भागीदार नहीं,
किसी के दुःख का भागीदार बनो, कारण नहीं।
5. बुलंदियों को पाने का ख्वाहिश तो है,
पर दूसरों को नीचे गिराने का हुनर नहीं।
6. अपने-आप को हमेशा बुलंदियों की ऊँचाइयों पर रखना,
क्योंकि दुनिया तुम्हारे इतिहास की 'इमेज' को नहीं
तुम्हारे वर्तमान के 'स्टेटस' को देखती है।

नन्हा पौधा

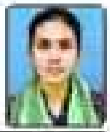

एक बीज था गया बहुत ही गहराई में बोया।
उसी बीज के अन्दर में था नन्हा पौधा सोया।।

उस पौधे को मंद पवन ने आकर पास जगाया।
नन्हीं-नन्हीं बूँदों ने फिर उस पर जल बरसाया।।

सूरज बोला, "प्यारे पौधे निद्रा दूर भगाओ"।
अलसाई आँखें खोलो तुम उठकर बाहर आओ।।

आँख खोलकर नन्हें पौधे ने ली तब अंगड़ाई।
एक अनोखी नई शक्ति-सी उसके तन में आई।।

नींद छोड़, आलस्य त्यागकर पौधा बाहर आया।
बाहर का संसार बड़ा ही अद्भुत उसने पाया।।

अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम।
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।

- मलूकदास

अर्थात्-

आलसी, सोने वाले मनुष्य को दरिद्रता प्राप्त होती है तथा कार्यकुशल मनुष्य निश्चित ही अभिष्ट फल पाकर ऐश्वर्य का उपभोग करता है।

माँ का आँचल

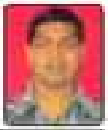

[illegible]

एक वक्त हमारा ऐसा है,
अब बिन तकिया के सोते हैं।
एक वक्त हमारा ऐसा था,
जब माँ की आँचल में सोते थे।।

सुबह-सुबह जब आँखे खुलती,
माँ की गोद में हम होते थे।
माँ की ममता, माँ की सूरत,
बिन देखे न सोते थे।।

एक वक्त हमारा ऐसा है,
जब बिन भोजन सो जाते हैं।

एक वक्त हमारा ऐसा था,
बिन माँ के हाथों से, नहीं खाते थे।।

एक वक्त हमारा ऐसा है,
अब घोर परिश्रम पर भी, नींद नहीं आती है।
एक वक्त हमारा ऐसा था,
जब खेलते-खेलते, गोद में माँ के सो जाते थे।।

कभी आदर्श जीवन में ऐसा,
वक्त न आने पाये।
बिन माँ के कोई कैसे,
अपना जीवन सुखमय बिताये।।

नव वर्ष का उमंग

अंजली [illegible]

ओस भीगा निकला रवि, लिए नव उमंग,
कलियां भी मुस्काईं, छटा लिए सतरंग।
लाल-सफेद बागों में पक्षियों का कोलाहल,
प्रकृति पर आज चढ़ा है, नव वर्ष का रंग,
बीती बात भूल जा प्यारे, क्या घटित हुआ तेरे संग।

क्षमा, भूल, अपराध बोध, करें मन की शान्ति भंग

बोझ लदा जो तेरे हृदय पर उसको हल्का कर,
कर गई शुरुआत है नव वर्ष का उमंग।
छेड़ दी तू राग निराला, ला दे जग में नवरंग।

बिखेर दे तू रंग, अनुपम भर दे हर तरफ सतरंग।
हर्षोल्लास में झूमें सभी, साज-बाज बजाए जन-जन,
नभ भी आँखे फाड़ देखे, ये नव वर्ष का उमंग।

इंसान की सोच

[illegible]

मैंने बहुत से इंसान देखे हैं,
जिनके बदन पर लिबास नहीं होता।

मैंने बहुत से लिबास देखे हैं,
जिनके अन्दर इंसान नहीं होता।

कोई हालत नहीं समझता,
तो कोई जज्बात नहीं समझता।

ये तो बस अपनी-अपनी समझ है,
कोई कोरा कागज भी पढ़ लेता है।

तो कोई पूरी किताब नहीं समझता।
इंसान गलत नहीं होता है,
गलत उसकी सोच होती है।

इंसान से घृणा मत करो,

घृणा उसकी सोच से करो।

इंसान को नमक की तरह होना चाहिए,
जो खाने में रहता है, परन्तु दिखाई नहीं देता है,
और न रहे तो, उसकी कमी महसूस होती है।

आप अच्छे की तलाश में मत निकलिए
खुद अच्छे बन जाए।
शायद आपसे मिलकर
किसी की तलाश पूरी हो जाए।

माँ

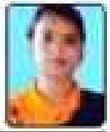

स्वाति सिंह
[illegible]

- इस तरह मेरे गुनाहों को वो धो देती है।
  माँ बहुत गुस्से में होती है तो रो देती है।
- किसी भी मुश्किल का अब किसी का हल नहीं मिलता।
  शायद अब घर से कोई माँ के पैर छूकर नहीं निकलता।
- मांगने पर जहाँ पूरी होती है हर मन्नत।
  माँ के पैरों में ही तो होती है जन्नत।
- माँ के आंचल से अच्छा धाम क्या होगा।
  माँ के खिदमत से अच्छा काम क्या होगा।
- खुदा ने रख दी जिसके कदमों में जन्नत।
  सोचो उसके सर का मुकाम क्या होगा।
- ऊपर जिसका अंत नहीं उसे 'आसमां' कहते हैं।
  इस जहाँ में जिसका अंत नहीं, उसे 'माँ' कहते हैं।
- मेरी तकदीर में कोई गम नहीं होता।
  अगर तकदीर लिखने का हक मेरी माँ को होता।
- कौन सी है वो चीज, जो यहाँ नहीं मिलती।
  सब कुछ तो मिल जाता है, पर माँ नहीं मिलती।

*जिसका ज्ञान बस किताबों तक सीमित है
और जिसका धन दूसरों के कब्जे में है,
वो जरूरत पड़ने पर ना अपना ज्ञान प्रयोग
कर सकता है ना धन।*

-चाणक्य

अनमोल बातें

1. ज़िन्दगी में कभी-भी किसी को बेकार मत समझना,
   क्योंकि बन्द घड़ी भी दिन में दो बार सही समय बताती है।
2. किसी की बुराई करने वाले इंसान की मिसाल उस मक्खी की तरह है,
   जो सारे खूबसूरत जिस्म को छोड़कर केवल ज़ख्म पर ही बैठती है।
3. कभी खुद से मुस्कुरा कर देखो तो सारा जहाँ रंगीन है,
   वरना भीगी पलकों से आइना भी धुँधला नज़र आता है।
4. ईश्वर से कुछ माँगने पर न मिले तो उससे नाराज़ न होना,
   क्योंकि ईश्वर वह नहीं देता जो आपको अच्छा लगता है।
   बल्कि वह देता है जो आपके लिए अच्छा होता है।
5. लगातार हो रही असफलताओं से निराश नहीं होना,
   क्योंकि कभी-कभी गुच्छे की आखिरी चाभी भी ताला खोल देती है।
6. ज़िन्दगी में अच्छे लोगों की तलाश मत करो "खुद अच्छे
   बन जाओ" आप से मिलकर शायद किसी की तलाश पूरी हो जाए।
7. ज़िन्दगी में उतार-चढ़ाव का आना बहुत जरूरी है।
   क्योंकि ई.सी.जी. में सीधी लाईन का मतलब मौत ही होती है।
8. आजमाती है ज़िन्दगी उसी को जो कठिन रास्तों पर चलना जानता है।
   ज़िन्दगी में जीत उसी की होती है जो सब खोकर भी मुस्कुराना जानता है।

दहेज गीत

कैसे बचेगी अब घर की लाज,
मुश्किल हुई लड़कियां सयानी आज,
बड़ी परेशानी है, ऐसी चली हवा,

दहेज की प्रथा चली है,
और लोगों की माँगे बढ़ी है,
माँगे बड़ी फोरव्हीलर गाड़ी,

ये लोगों की नादानी है, ऐसी चली हवा,
बड़ी परेशानी है ऐसी चली हवा,

जिसके पास है लड़का,
वो तो अपने को कहता है बड़का,
वो तो सबसे [illegible],
मेरा लाखों में एक है लड़का,
पढ़ता है, लिखता है, छवि में सूरती है।
ऐसी चली हवा।
बड़ी परेशानी है ऐसी चली हवा,

सब सामान पाकर दूल्हा मण्डप में बैठा है,
मुँह को फुलाके,
बेटी के बाप बोले रोते-रोते, वो मण्डप में आके
जो कुछ था सब दे दिया, अब बची ज़िन्दगानी है,
ऐसी चली हवा...
बड़ी परेशानी है, ऐसी चली हवा...

सुखी जीवन

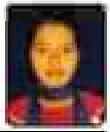

कंचन थेटा
[illegible]

पूजा करते हो तो विश्वास रखना सीखो।
बोलने से पहले सुनना सीखो।
खर्च करने से पहले कमाना सीखो।
लिखने से पहले समझना सीखो।
भागने से पहले फिर से कोशिश करना सीखो।
रिश्ते बनाने से पहले निभाना सीखो।
मरने से पहले खुलकर जीना सीखो।
रोने से पहले हँसना सीखो।
मन मिले जिससे, रिश्ता रखो उसी से।
जहाँ कदर नहीं, वहाँ जाना नहीं।

जो सुनता नहीं, उसे समझाना नहीं।
जो पचता नहीं, उसे खाना नहीं।
जो सच बात पर भी रूठे, उसे मनाना नहीं।
जो नजरों से गिर जाए उसे उठाना नहीं।
जिन्दगी में तकलीफ आ जाए तो घबराना नहीं।
मौसम की तरह जो दोस्त बदल जाए
उसे दोस्त बनाना नहीं।
जिसे मोहब्बत की कदर नहीं उसे जताना नहीं।
और जो आपके राज छुपा ना सके,
उसे राज बताना नहीं।

सच्ची बातें

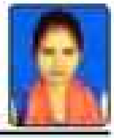

सुवर्णा
[illegible]

1. सुना है कि मौत सबको आती है। वरना अमीर तो इस बात का भी मजाक उड़ाते कि गरीब था इसलिए मर गया।
2. इंसान हंसता तो सबके सामने है, मगर रोता सिर्फ उसी के सामने, जिसपर उसे सबसे ज्यादा भरोसा होता है।
3. जिन्दगी जीने के सिर्फ दो तरीके हैं, जो पसन्द है उसे हासिल करो, नहीं तो जो हासिल है उसे पसंद करो।
5. अगर पैंसिल बनकर किसी की खुशियाँ नहीं लिख सकते तो कोशिश करो कि एक रबर बन कर किसी का गम मिटा दो।
7. अमीर इतने बनो कि कितनी भी कीमती चीज खरीद सको और कीमती इतने बनो कि इस दुनिया का कोई अमीर से अमीर भी आपको खरीद ना सके।
8. सफर में पड़ी रोटियाँ बस यही कहा करती है कि भूख मिटने के बाद इंसान अपनी औकात भूल जाते हैं।

हकीकत

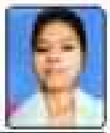

मंजू
[illegible]

समय बड़ा अजब होता है।
इसलिए घड़ी में फूल नहीं कांटे होते हैं।

जो चाहा कभी पाया नहीं,
जो पाया कभी सोचा नहीं,
और जो सोचा कभी मिला नहीं,
और जो मिला वह रास आया नहीं।

फूलों की शुरुआत कली से होती है।
जिन्दगी की शुरुआत प्यार से होती है।
प्यार की शुरुआत दोस्ती से होती है।
और दोस्ती की शुरुआत आप से होती है।

मुस्कुराने वाले को खुशनसीब मत समझो,
कुछ लोग मुस्कुराते हैं ताकि वो अपने गम छुपा सकें।

दास्तान-ए-औरत

कितना मुश्किल है इक औरत का जहाँ में रहना,
सुबह से, शाम से, हालात से लड़ते रहना।
रेत के दरिया की मौजों में ही बहते रहना।
हर कदम पर जो बस ज़हर ही पीना पड़ता,
अपने अंदर के ही सन्नाटे में जीना पड़ता।

माँ की आगोश में, जब आई थी नन्ही सी कली,
अपने माँ-बाप की गोदी में, सिमट कर के पली,
उसकी किलकारी से घर गूंजा, महकती थी गली,
उसमें फिरदौस की दिखती थी झलक पाकीज़ा।
उसकी हरकत से ही आते थे सब मुरीदा।

एक दिन खुशियों की डोली में वह ससुराल चली,
वह अनजानी थी पर शौक से खुशहाल चली,
अपने अरमान समेटे वह बदहाल चली,
ज़िन्दगी कैद हुई सांप की फुफकारों में।
बंध गई अपनी ही पाज़ेब की झंकारों में।

हमसफर की रही हर वक्त वह साया बन कर,
फिर भी वह साथ में आया तो पराया बनकर।
वह हकीकत नहीं, बस रहा था सपना बन कर,
गोद में नन्ही सी किलकारी मिली, ख्वाब हुआ।
खुदबखुद जीस्त का इक सौदा हुआ पाप हुआ।

फातिमा, सीता हो, मरियम हो या हो शाहज़ादी,
सबका किरदार मुकद्दर है जो नीयत है इसी,
आसमां इन पे फिदा होता है इतराती अदाएँ,
अपने आँचल को यह पाकीज़ा बना कर रखती।
अपने किरदार के जौहर को सजा कर रखती।

नौकरी करने को बाहर जो गई दफ्तर में,
घिर गई मातहतों, साथियों और अफसर में,
खुद को पाती थी सदा तीरों में और खंजर में,
अपने बच्चे के लिए ज़िन्दगी से लड़ती रही।
घर की खुशहाली में दिन रात बसर करती रही।

यह कहानी नहीं हर घर की हकीकत है यही,
हजारों किस्सों के अफसाने की किस्मत है यही,
मर्दों की दुनिया में हर लड़की की हालत है यही,
सब कुछ दे के भी, अब चैन नहीं पाती है।
घुट के अपने में ही, हर रोज़ वह मर जाती है।

सब को कुछ करना है, यह दौर बदलना होगा,
बेजा ख्वाहिश को दबे, पाँव कुचलना होगा,
जाल जो फैले हैं, अब उन से निकलना होगा,
चलिए फ़िलफ़ौर हर इक रीति बदल डालें अब।
ख्वाब को पूरा कर तस्वीर बदल डालें अब।

मर्द हो न...

शायद इसीलिए
औरत के जज़्बातों से
खेलना तुम्हारा शौक बन चुका है
नहीं देख सकते तुम उसको

हंसते मुस्कुराते
किसी दूसरे मर्द के साथ
नहीं बर्दाश्त होता तुम्हें
उसका किसी से बात भी करना।

पर क्यों ?

क्योंकि तुम्हारी नजर में
मर्द और औरत का

सिर्फ एक ही रिश्ता है
दोस्ती जैसा शब्द शायद

तुम्हारी डिक्शनरी में है ही नहीं
हर रिश्ते की बुनियाद विश्वास
पर टिकी होती है,
जरा-सा मुस्कुरा कर बात कर लेने पर
किसी भी औरत पर
चरित्र हीनता का आरोप लगा देना
कितना आसान है न
तुम्हारे लिए।

अपनी दकियानूसी सोच की
वजह से आधारहीन बातें
जिनका कोई वजूद नहीं होता।
आधार बना कर
अविश्वास व्यक्त करना
बेबुनियाद शक करना, शायद
तुम्हारा स्वभाव बन चुका है,
तुम्हारा प्रेम सिर्फ वासना से लिप्त है,
जिसे तुम प्रेम कहते हो वो सिर्फ देह तक सीमित है।

एक औरत का प्रेम देह से परे होता है।
वो अपने प्रेम की तुलना
चाँद सितारों से नहीं करती
वो सिर्फ एक प्यार भरा स्पर्श चाहती है।
आँखों पर चुम्बन-एहसास
उसे अद्भुत प्रेम का एहसास कराती है

विश्वास प्रेम को बढ़ाता है
अविश्वास दूरियाँ बढ़ाता है
प्रेम को कहना और प्रेम को जीना
बहुत फर्क है दोनों में
जिस दिन प्रेम को
जीना सीख जाओगे न ..
उस दिन अविश्वास, द्वेष और
जलन की भावना से ऊपर उठ जाओगे,
और अपनी गृहस्थी को सुन्दर बनाओगे।

किसान आन्दोलन

[illegible]

1. आज के दौर में वही परेशान है,
 जो मेहनत करने वाला किसान है।
2. कर्जे के दबाव में किसान आत्महत्या कर रहा है,
 किसान आन्दोलन के नाम पर बेमौत मर रहा है,
 देश का किसान कमाऊ में खूब तरक्की कर रहा है,
 अपने हक के लिए सड़कों पर ठंड में मर रहा है।
3. न जाने कब किसानों की तरक्की होगी,
 उनके बच्चों की बुनियादी जरूरतें पूरी होंगी,
 न जाने कब किसानों के चेहरे पर मुस्कान होगी,
 न जाने कब किसानों की किस्मत धनवान होगी।
4. किसान ही तो भारत देश की शान है,
 फिर ठंड में सड़कों पर क्यों परेशान है।
5. किसानों को यह मालूम है,
 सत्ता उसे हमेशा छलता है।
 किसान परेशानी की आग में जलता है,
 पर उनका किस्मत नहीं बदलता है।
6. सरकार वादे पर वादा कर रही है,
 लेकिन किसान की किस्मत नहीं बदल रही है,
 पक्ष हो या विपक्ष हो, दोनों ही छल रही है,
 यहाँ तो सरकार भी भगवान भरोसे चल रही है।
7. किसानों का हाल हमेशा बदहाल होता है।
 सरकार कोई भी हो सिर्फ बवाल होता है।
8. भ्रष्टाचारी सरकार सत्ता से भगाई जाएगी,
 किसानों की कोई नई किस्मत जगाई जाएगी।
9. सरकार वादे पर वादे कर रही है,
 फिर भी किसान की हालत बिगड़ रही है।

10. किसानों की हालत देखकर जो गुस्से से फूंक जाते हैं, नेता, विधायक, मंत्री बनने के बाद किसानों को भूल जाते हैं।

11. ये कड़कड़ाती ठंड-
आन्दोलन किसानों की जान न निगल जाए,
सरकार किसानों से बात करने के लिए संसद से निकल कर आए।

12. ठंड में ठिठुरते किसानों की आह! खाली न जाएगी,
सत्ता को उखाड़ फेंकेगी झूठी कसम खाली न जाएगी।
कृषि-विकास के लिए कार्य सही होना चाहिए।
किसानों के ऊपर कभी राजनीति नहीं होनी चाहिए,
जब किसानों की भृकुटी तन जाती है,
बड़ी-बड़ी ताकतवर सत्ता भी ढह जाती है।
जिस दिन किसानों की तकदीर पलट जाएगी,
उस दिन सत्ता की तख्ती की तस्वीर बदल जाएगी।

गाँव-गंवार

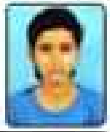

✍ [illegible] वर्मा
[illegible]

तेरी बुराइयों को हर अखबार कहता है,
और तू मेरे 'गाँव' को 'गंवार' कहता है।

ऐ शहर मुझे तेरी 'औकात' पता है,
तू 'चुल्लू' भर पानी को भी 'वाटर पार्क' कहता है।

'थक' गया है हर शख्स काम करते-करते,
तू इस 'अमीरी' को 'बाजार' कहता है।

गाँव चलो 'वक्त ही वक्त' है सबके पास,
तेरी सारी फुर्सत तेरा 'इतवार' कहता है।

मौन होकर 'फोन' पर 'रिश्ते' निभाए जा रहे हैं,
तू इस मशीनी दौर को 'परिवार' कहता है।

जिनकी 'सेवा' में खपा देते थे जीवन सारा,
तू उन माँ-बाप को अब 'भार' कहता है।

वो मिलने आते थे तो कलेजा साथ लाते थे,
तू दस्तूर निभाने वाले को भी 'रिश्तेदार' कहता है।

बड़े-बड़े 'मसले' हल करती थी पंचायतें,
तू अंधी भ्रष्ट दलीलों को 'दरबार' कहता है।

बैठ जाते थे अपने-पराये सब 'बैलगाड़ी' में,
पूरा 'परिवार' भी ना बैठ पाये, उसे तू 'कार' कहता है।

अब बच्चे भी बड़ों का 'अदब' भूल बैठे हैं,
तू इस नये दौर को 'संस्कार' कहता है।

ये शहर सोच तू किसको 'गंवार' कहता है।

कोई तुमसे पूछे

कोई तुमसे पूछे कौन हूँ मैं?
तुम कह देना कोई खास नहीं ...
एक दोस्त है पक्का कच्चा सा
एक झूठ है आधा सच्चा सा,
जज्बात से ढका एक पर्दा है
एक बहाना है कोई अच्छा सा ...
जीवन का एक ऐसा साथ है जो
पास होकर भी पास नहीं ...

कोई तुमसे पूछे कौन हूँ मैं?
तुम कह देना कोई खास नहीं ...
एक साथी जो अनकही सी,
कुछ बातें कह जाता है
यादों मे जिसका धुंधला सा
एक ही चेहरा रह जाता है।
यूँ तो उसके ना होने का
मुझको कोई गम नहीं

पर कभी-कभी वो आँखों से,
आँसू बन के बह जाता है।
यूँ रहता तो मेरे जेहन में है
पर नज़रों को उसकी तलाश नहीं ...

कोई तुमसे पूछे कौन हूँ मैं?
तुम कह देना कोई खास नहीं...
साथ अक्सर जो रहता है
छूना तो चाहूँ उसको, पर

वो पाँवों में छा जाता है
अकेला महसूस करूँ कभी, तो
सपनों में आ जाता है ...
मैं साथ खड़ा हूँ सदा तुम्हारे
कहकर साहस दे जाता है,
ऐसे ही रहता है साथ मेरे
उसकी मौजूदगी का आभास नहीं
कोई तुमसे पूछे कौन हूँ मैं?
तुम कह देना कोई खास नहीं ....

स्कूल लाइफ

— अमित कुमार

पाँचवीं तक स्लेट को जीभ से चाटकर कैल्शियम की कमी पूरा करना हमारी स्थायी आदत थी, लेकिन इसके पापबोध भी था कि कहीं 'विद्यामाता' नाराज न हो जाये, तब हम पढ़ाई का तनाव पेंसिल का पिछला हिस्सा चबाकर मिटाया था।

स्कूल में पिटते हुए और मुर्गा बनते हुए हमारी 'ईगो' हमें कभी परेशान नहीं करता था, दरअसल हम जानते ही नहीं थे कि 'ईगो' होता है क्या।

पिटाई हमारे दैनिक जीवन की सहज-सामान्य प्रक्रिया थी, क्योंकि तब "मार खाने वाला" (हम) और "पीटने वाला" (गुरुजी हमारे) दोनों खुश। क्योंकि हम इसलिए खुश कि कम "पीटे" तथा "पीटने" वाला इसलिए खुश कि हाथ साफ हुआ।

पुस्तक के बीच 'गुलाब का पत्ता' व 'मोर के पंखों' को चॉक के टुकड़ों के बीच रखने से हम होशियार हो जायेंगे, ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास था।

तब माता-पिता को हमारी पढ़ाई की थोड़ी-सी फिक्र थी न उनकी जेब पर बोझ थी। सालों-साल बीत जाते थे पर माता-पिता के कदम हमारे स्कूल में न पड़ते थे। हर साल जब नई कक्षा की ओर बढ़ते तब किताब-कॉपी, नया बैग, नया ड्रेस पर मानो जिल्द चढ़ाना हमारे जीवन का वार्षिक उत्सव-सा बन जाता था, तब हम प्राइवेट नहीं खिचड़ी वाले स्कूल सरकारी स्कूल में पढ़ा करते थे।

हमने अपने माता-पिता को कभी नहीं बता पाये कि हम उन्हें कितना प्यार करते थे, क्योंकि हमें "आई लव यू माँ" व "आई लव यू पापा" कहना नहीं आता था।

आज हम गिरते-सम्भलते, संघर्ष करते दुनिया का हिस्सा बनने वाले हैं। तथा कुछ मंजिल पाने वाले हैं तो कुछ कहीं खो गए हैं। हम दुनिया में कहीं भी हो लेकिन यही सच है कि हमें हकीकतों ने पाला है और हम सच की दुनिया में थे।

क्योंकि तब हमें झूठ बोलना नहीं आता था।

संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसमें भारतीय संस्कृति का विस्तृत ज्ञान भरा है।
बिना संस्कृत पढ़े कोई पूर्ण भारतीय और विद्वान नहीं बन सकता।

—महात्मा गांधी

बचपन

कितना भी परेशान करके वो गिला नहीं करते,
वो बचपन वाले दोस्त अब मिला नहीं करते।
कितने खूबसूरत हुआ करते थे, बचपन के वो दिन,
हाथों की उँगलियां जुड़ते ही
दोस्ती हो जाया करती थी।
बचपन नादान था पर,
बड़ा ही शानदार था।
किसी के भाव बिक गई कापियाँ,
जिन पर कभी (Very good)
देखकर फूले न समाते थे।
बेफिक्र हंसी और खुशियों का खजाना था,
कितना खूबसूरत वो बचपन का ज़माना था।
झूठ बोलते थे, फिर भी कितने सच्चे थे हम,
ये उन दिनों की बात है जब बच्चे थे हम।
वो बचपन के दोस्त कितने सच्चे थे,
लौटा दो हमारा गुज़रा हुआ वक्त,
हम बचपन में ही अच्छे थे।

संघर्ष

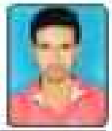

✍ [illegible]
[illegible]

जो छोड़ गये पथ मोड़ गये, उनको यह बतलाना है,
राहें कठिन हमारी हैं, उनको सरल बनाना है।

तूफानों से सामना कर, अम्बर को यह बतलाना है,
जो चाहूँगा वो कर लूँगा, इतना ही बस जतलाना है,
आसमां में चाँद की तरह, घर अपना बनाना है।

जो छोड़ गये पथ मोड़ गये, उनको यह बतलाना है,
राहें कठिन हमारी हैं, उनको सरल बनाना है।

दुनिया की अमर कहानी में, नाम अपना लिखवाना है,
चाहे जो भी हो बीच में, पार उनको कर लक्ष्य तक जाना है,
है आंधियाँ तूफान राहों में, मगर बीच में रास्ता बनाना है।

जो छोड़ गये पथ मोड़ गये, उनको यह बतलाना है,
राहें कठिन हमारी हैं, उनको सरल बनाना है।

समर्पण

खोल दूं फिज़ाओं को,
बोल दूं हवाओं को,

है जान अर्पित तुम पर,
है जीवन समर्पित तुम पर।

फूलों पर जैसे भंवरों की तरह,
दिल पर है मेरे, तुम्हारा पहरा,

तुम चाँद हो मैं आसमां,
जो रहा है बड़ा गहरा,

इन वादियों से पूछ लूं,
क्या है इरादा तेरा?

कैसे कहूं मैं तुमसे
जीवन भर का यह वादा मेरा।

खोल दूं फिज़ाओं को,
बोल दूं हवाओं को,

है जान अर्पित तुम पर,
है जीवन समर्पित तुम पर।

हारा नहीं मुसाफिर हूँ

हारा नहीं मुसाफिर हूँ, पथ पर चलता मैं रहूँगा,
लक्ष्य बहुत दूर है, मगर पहुँचकर मैं रहूँगा।।
अड़चनें आएंगी बीच में, मैं नहीं डरूँगा,
चल दिया हूँ अब बस, लक्ष्य पर आ रहूँगा,
हारा नहीं मुसाफिर हूँ, पथ पर चलता मैं रहूँगा।
हो राह में द्वेष अगर, प्रतिशोध मैं करूँगा,
बाढ़ आएगी बीच में, पार उसे मैं करूँगा,
हारा नहीं मुसाफिर हूँ, पथ पर चलता मैं रहूँगा।
नाव रूपी ज्ञान से, लहरों से भी मैं लड़ूँगा,
नाव डूबी मेरी अगर, तैरकर पार मैं करूँगा,
हारा नहीं मुसाफिर हूँ, पथ पर चलता मैं रहूँगा।
लहरों को चीर धाराओं पर, नाम अपना मैं लिखूँगा,
इस युग में एक कहानी हो, ऐसे ही मैं अमर रहूँगा।
हारा नहीं मुसाफिर हूँ, पथ पर चलता मैं रहूँगा।
लक्ष्य बहुत दूर है, मगर पहुँचकर मैं रहूँगा।

माता-पिता

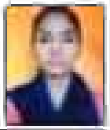

[illegible]

जिसके होने से मैं खुद को मुकम्मल मानती हूँ,
मेरे रब के बाद, मैं बस मेरी माँ को जानती हूँ।

अजीज भी वो है, नसीब भी वो है।
दुनिया की भीड़ में, करीब भी वो है।
उनकी दुआ से चलती है जिन्दगी।

क्योंकि

खुदा भी वो है, तकदीर भी वो है,
मेरी तकदीर में एक भी गम ना होता,
अगर तकदीर लिखने का हक मेरी माँ को होता।

वो पिता ही होता है जो अपने बच्चों को अच्छे
विद्यालय में पढ़ाने के लिए दौड़-भाग करता है।
अगर लाखों डोनेशन भरता है, जरूरत पड़ी तो
किसी के हाथ-पैर पर भी पड़ता है।
वो पिता ही होता है, जो स्वयं
फटे कपड़े पहनता है और,
बच्चों के लिए नयी जीन्स, टी-शर्ट लाता है।
वो पिता ही होता है जो खुद बटन फोन चलाता है पर,
बच्चे के लिए स्मार्ट फोन लाता है।

वो पिता ही होता है। पिता का प्यार दिखता नहीं है,
सिर्फ महसूस किया जाता है।

मैं पिता पर चार लाइन लिखती हूँ-
पिता रोटी है, कपड़ा है, मकान है,
पिता नन्हें परिन्दे का बड़ा आसमान है।
पिता है तो बच्चों के सारे सपने हैं,
पिता है तो बाजार के सारे खिलौने अपने हैं।

चुटकुला

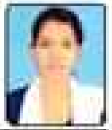

1. एक बात पहले ही बता दूँ, मेरी सारी पोस्ट हिन्दी में होती है, इसका मतलब यह नहीं है कि English is not come to me, मुझे आती है English.
2. एक खास बात बता दूँ, जिन्दगी में वही लोग आगे बढ़ते हैं जो झाड़ू लगाते हैं। पोछा लगाने वालों को तो बस मैंने पीछे ही हटते हुए देखा है।
3. शादी में सोनू काफी देर से खाना खा रहा था, किसी ने पूछ लिया-कितना खाओगे? वो बोला-

   मैं भी खाते-खाते परेशान हो गया हूँ लेकिन कार्ड में लिखा है... खाना खाने का समय 7 से 10 बजे तक...
4. आदमी मच्छर से- दिन में क्यों काट रहे हो? मच्छर- ओवरटाइम कर रहा हूँ साहब। माँ-बाप बीमार हैं घर में जवान बहन है और लड़के वालों ने दहेज में एक लीटर खून माँगा है।
5. तराजू पर बैठा मुर्गा ग्राहक को घूर रहा था
   ग्राहक- क्यों घूर रहा है?
   मुर्गा- मुझे तो खरीद लिया अब प्याज खरीद के दिखा लेगा प्याज।

कामयाबी

1. संघर्ष में आदमी अकेला होता है, सफलता में दुनिया उसके साथ होती है, जिस-जिस पर ये जग हँसा है, उसी ने इतिहास रचा है।
2. दो जो शोर मचाते हैं भीड़ में, भीड़ ही बनकर रह जाते हैं, वही पाते हैं जिन्दगी में कामयाबी जो खामोशी से अपना काम कर जाते हैं।
3. कामयाब होने के लिए अच्छे मित्रों की आवश्यकता होती है और ज्यादा कामयाब होने के लिए अच्छे शत्रुओं की आवश्यकता होती है।
4. शाम सूरज को ढलना सिखाती है, शमा परवाने को जलना सिखाती है, गिरने वाले को होती तो है तकलीफ, पर ठोकर इंसान को चलना सिखाती है।
5. चलती रहूँगी रास्ते पर, चलने में माहिर बन जाऊँगी या मैं अच्छा मुसाफिर बन जाऊँगी।

बेटी का जवाब

क्या खूब जवाब था एक बेटी का-
जब उससे पूछा गया कि तुम्हारी दुनिया कहाँ से
शुरू होती है और कहाँ पर खत्म?
बेटी का जवाब था-
माँ की कोख से शुरू होकर पिता की खुशी की
गलियों से होकर बच्चों के सपनों
को पूरा करने तक खत्म।
लाख गुलाब लगा लो तुम, अपने आँगन में, जीवन
में खुशबू तो बेटी के आने से ही होगी।
पराया धन होकर भी, कभी पराई नहीं होती।

शायद इसीलिए किसी बाप से हंसकर, बेटी की
विदाई नहीं होती।
जिस घर में बेटियाँ पैदा होती हैं,
उस घर का पिता राजा होता है, क्योंकि
परियाँ पालने की औकात हर किसी की नहीं।
भले-जेब खाली हो, फिर भी मना करते नहीं देखी,
मैंने पिता से अमीर इंसान नहीं देखी।

लोग कहते हैं, बेटियों का कोई घर नहीं होता,
बेवकूफ हैं वो लोग क्योंकि बेटियों के बिना कोई
घर नहीं होता।
सूने दिन भी दोस्तों त्योहार बनते हैं,
फूल भी हंसकर गले का हार बनते हैं,
टूटने लगते हैं सारे बोझ के रिश्ते,
बेटियाँ होती हैं तो परिवार बनते हैं।

धर्म-अधर्म

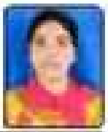

अंजु [illegible]
[illegible]

धर्म क्या है? मुझे पूर्णतः ज्ञान नहीं, धर्म का मर्म
समझूं मैं इतना विद्वान नहीं, किन्तु

किन्तु गर मुझे अधर्म की पहचान है
तो जीवित मेरे भीतर का इंसान है।

धर्म साधना से अधिक कर्म है,
जो हो इंसानीयता के विरुद्ध, वही अधर्म है।

सत्य अहिंसा, प्रेम, संतोष धर्म है,
एकलव्य का अंगूठा कटवाना अधर्म है।

गर भेद-भाव, जाति-पाति का ताना-बाना धर्म है,

तो राम का शबरी के जूठे बेर खाना अधर्म है।

ऊँच-नीच की भावना है अधर्म,
स्वार्थ वश की गई आराधना है अधर्म।

निर्बल पर अत्याचार है अधर्म,
बल पूर्वक लिया गया अधिकार है अधर्म।

गर दुर्योधन का अहंकार है अधर्म,
तो कर्ण का हुआ तिरस्कार है अधर्म।

भेद-भाव को सहना है अधर्म,
अन्याय पर मौन रहना है अधर्म।
अन्याय पर मौन रहना है अधर्म।

ऐसा आसमान दो

पंख दिए हैं तो उड़ सकूं, ऐसा आसमान दो,
जनम दिया है तो जी सकूं, ऐसा जीवन दो।

मैं कहीं सुप्त मन की कल्पना ही रही
किसी माँ के हृदय की गुप्त भावना ही रही।

गर्भ में ही मिटाई गई,
नौ मास जिसने संसार को ढोया

क्यों वही यहाँ बोझ मानी गई?

हुई हूँ अब अंकुरित किसी कोख में,
तो विकसित होने का विधान दो।

पंख दिए हैं तो
उड़ सकूं, ऐसा आसमान दो।

***चरित्र के अभाव में मनुष्य भी टूटे-फूटे खण्डहर जैसा दिखायी देता है-
भले ही उसके पास भौतिक सम्पत्ति कितनी ही अधिक मात्रा में हो।***

-महात्मा गांधी

भाई सा कोई नहीं

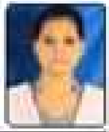

[illegible]

रावण जब रणभूमि में मृत्यु शैया पर अंतिम सांसें ले रहा था तब उसने श्री राम से कहा था राम मैं तुमसे हर बात में श्रेष्ठ हूँ। जाति मेरी ब्राह्मण है जो तुमसे श्रेष्ठ है। आयु में मैं तुमसे बड़ा हूँ। मेरा कुटुम्ब तुम्हारे कुटुम्ब से बड़ा है। मेरा वैभव तुमसे अधिक है। तुम्हारा महल स्वर्ण जड़ित है, मेरी पूरी लंका ही स्वर्ण नगरी है। मैं बल-पराक्रम में भी तुमसे आगे हूँ। मेरा राज्य तुम्हारे राज्य से बड़ा है। ज्ञान और तपस्या में तुमसे श्रेष्ठ हूँ।

इतनी श्रेष्ठता होने पर भी मैं रणभूमि में तुमसे पराजित हो गया सिर्फ इसलिए कि तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ है और मेरा भाई मेरे खिलाफ। बिना भाई के साथ जब रावण हार सकता है तो हमें कैसा घमण्ड है। सदा साथ रहिए, सदा विजय रहिए। सभी को कोशिश करनी चाहिए कि कभी परिवार टूटे नहीं क्योंकि- किसी भी पेड़ के कटने का किस्सा न होता अगर कुल्हाड़ी के पीछे लकड़ी का हिस्सा न होता।

गज़ल

सिया बनी राम की
राधा बनी, श्याम की,
सती शिव की, महारानी हो गई।
बनाया ताजमहल जिसने
वो याद पुरानी हो गई।
तेरे इश्क में यारा, मैं बिन फेरों
की सुहागन हो गई।

ना लाल रंग ओढ़ा मैंने
ना गुलाल मांग में सजाया
ना ही कोई सूत गले में तेरे
नाम का बंधवाया।
मैं हर बंधन से पराई हो गई,
तेरे इश्क में यारा, मैं बिन फेरों
की सुहागन हो गई।

ना चाहते हुए भी मेरी खुशबू तेरी जैसी हो गई।
तेरे इश्क में यारा, मैं बिन फेरों की सुहागन हो गई।

बटोही ! धीरे-धीरे चल

[illegible]

बटोही! धीरे-धीरे चल
कंटकमय राहें हैं तेरी
कंकड़-पत्थर घुमन घनेरी
फिर भी कदम बढ़ाए चल
बटोही! धीरे-धीरे चल।

मन संजीवन हारे-हारे
आघातों से मारे-मारे
प्रेम-प्रतीति करता चल
बटोही! धीरे-धीरे चल।

एक दिन ऐसा आएगा
अमन चैन छा जाएगा
अपना कर्म निभाता चल,
बटोही! धीरे-धीरे चल।

अन्धकारमय है जग सारा
खोया-खोया है उजियारा
मन का दीप जलाए चल,
बटोही! धीरे-धीरे चल।

कौन, कहां, किसका?
सब अपना
अपनापन ही बना एक सपना
मानव धर्म निभाता चल,
बटोही! धीरे-धीरे चल।

कन्यादान

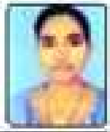

कु. [illegible]

कन्यादान हुआ जब पूरा, आया समय विदाई का।
हँसी-खुशी सब काम हुआ था, सारी रस्म अदाई का।।

बेटी के उस कातर स्वर ने, बाबुल को झकझोर दिया।
पूछ रही थी पापा तुमने, क्या सचमुच में मुझे छोड़ दिया।।

अपने आँगन की फुलवारी, मुझको सदा कहा तुमने।
मेरे रोने को पल भर भी, बिल्कुल नहीं सहा तुमने।।

क्या इस आँगन के कोने में, मेरा कुछ स्थान नहीं।
अब मेरे रोने का पापा, तुमको बिल्कुल ध्यान नहीं।।

देखो अन्तिम बार देहरी, लोग मुझे पुजवाते हैं।
आकर के पापा क्यों इनको, आप नहीं धमकाते हैं।।

नहीं रोकते चाचा ताऊ, भैया से कोई आस नहीं।
ऐसी भी क्या निष्ठुरता है, कोई आता पास नहीं।।

बेटी की बातों को सुनके, पिता नहीं रह सका खड़ा।
उमड़ पड़े आँखों से आँसू, बदहवास सा दौड़ पड़ा।।

कातर बछिया सी वह बेटी, लिपट पिता से रोती थी।
जैसे यादों के अक्षर वह, अश्रु बिन्दु से धोती थी।।

माँ को लगा गोद से कोई, मानो सब कुछ छीन चला।
फूल सभी घर की फुलवारी से कोई है ज्यों बीन चला।।

छोटा भाई भी कोने में, बैठा-बैठा सुबक रहा।
उसको कौन करेगा चुप अब, वह कोने में दुबक रहा।।

हमें अतीत के बारे में पछतावा नहीं करना चाहिए, न ही भविष्य के बारे में चिंतित होना चाहिए। विवेकवान व्यक्ति हमेशा वर्तमान में ही जीते हैं।

– चाणक्य

इ कोरोनवा बीमारिया

अंजलि सिंह

हाय रे महामरिया
इ कोरोनवा बिमरिया।
जे के हो जात बा
जल्दी ना जात बा
शरीर से लड़त बा
देहिया में फईल जात बा
हाय रे महामरिया
इ कोरोनवा बिमरिया

तन पर हमला बोलत बा
धीरे-धीरे नष्ट करे
तन कर शरीरवा
हाय रे महामरिया
इ कोरोनवा बिमरिया।

इ कहत्तल ह बिमरिया
घूमे गाँव और शहरिया
केहू के ना छोड़त बा

मास्क न लगईब
त होई कोरोनवा
सही ढंग से रहिब
त रहिब निरोगवा
हाय रे महामरिया
इ कोरोनवा बिमरिया।

What is life

A Joker says, life is Funny.
A richman says, life is Money.
A begger says, life is struggle.
A woman says, life is Puzzle.
A lazyman says, it is meant for Laziness.
A youngster says, it is full of Pleasure.
A saint says, it is the way to reach Almighty.
But I think life is unsolved mystery.

ग़ज़ल

वह छीन न ले, मेरी ज़िन्दगी
खुशी बनकर जो पा सका
न मुझे मेरी बेकदी बनाकर
यह अपना-अपना मोहब्बत है,
इसको क्या कहेंगे, किसी ने इश्क में पाया
किसी ने इश्क में खोया है।
पत्थर बना दिया मुझे रोने नहीं दिया,
दामन भी तेरे गम में भिगोने नहीं दिया।

जब घर को किसी ने बनाया था,
तैश अतिथियों ने आजमाया था।
समझ रहे हैं मगर बोलने का यारा नहीं
जो हम से मिल के बिछड़ जाए वह हमारा नहीं।
आज मुझ पेड़ की निशानी पे सज़ा लगती है।
सूखे पत्ते को तो हल्की सी हवा काफी है,
समझ पाते हमारे दर्द दिल को
अगर तुम भी लगाते दिल किसी से।

खुश्क मंजर है पानी से डूबा हुआ
इतनी बारिश हुई रेत दरिया हुआ।

इन चिरागों का कोई भरोसा नहीं,
हम आले गम से तो फिर उजाला हुआ।

माँ

माँ की गोद मुझे मेरे अनमोल
होने का एहसास कराती है।
माँ की प्रेरणा मुझको
जग जीतने की विश्वास दिलाती है।
माँ की सीख हमको आदमी से इंसान बनाती है।
माँ की डांट मुझको नित नये राह दिखलाती है।

माँ की सूरत मुझे मेरी पहचान कराती है।
माँ की लोरी अब भी मीठी नींद सुलाती है।
माँ की पूजा मुझे मेरा हर पाप मिटाती है।
माँ की याद मुझे बहुत रुलाती है।
"दुनिया में ऐसा कोई नहीं है
जो माँ से ज्यादा हमसे प्यार करता है।"

धैर्य ही सफलता का कारण

✍ [illegible]
[illegible]

व्यक्ति को विघ्न बाधाओं से भागना नहीं चाहिए। हम जितना बाधाओं, संकटों से भागते हैं, वह हमारा पीछा करता है, किन्तु जब उसका डटकर सामना करते हैं तो ही सफल हो पाते हैं। उदाहरण स्वरूप स्वामी जी के साथ घटी घटना उनके जीवन में कैसे परिवर्तन लाया, इस घटना के माध्यम से देखते हैं-

एक दिन स्वामी जी वाराणसी के दुर्गा मन्दिर से लौट रहे थे, बन्दरों का झुण्ड स्वामी जी का पीछा करने लगा, बंदरों का झुण्ड उन्हें नोंचना चाह तो भागते रहे। यह देखकर एक संन्यासी ने उन्हें पुकारकर कहा-"इनके सामने धैर्य से खड़े रहो" स्वामी जी साहस जुटाकर पलटकर खड़े हो गए, बन्दर पहले तो रुक गए फिर दुम दबाकर भाग गए। इस घटना से स्वामी जी के जीवन को एक महत्वपूर्ण शिक्षा मिली। विघ्न बाधाओं को देखकर कभी भागना नहीं चाहिए, निर्भीक हृदय से उससे आँखें मिलानी चाहिए। दुश्मन चाहे कितना भी भयानक क्यों न हो, साहस के साथ उसके सम्मुख खड़े हो जाओ, जीवन के दुःख कष्ट को जब हम देखकर भागते नहीं तो वे भी इन बन्दरों की तरह हमारे पास भटकने का साहस नहीं कर पाते। कायर कभी विजयी नहीं होते, यदि हम चाहते हैं कि भय, बाधा विपत्ति एवं अहंता हमसे दूर रहे तो हमें उनसे विरुद्ध युद्ध की घोषणा करनी होगी। एक सफल व्यक्ति के सफलता का रहस्य यह है कि-"वह हमेशा सही निर्णय पर काम करता है, लेकिन सही निर्णय उसे प्राप्त कैसे होता है। अनुभवों के आधार पर अनुभव कैसे प्राप्त होता है? तो गलत निर्णयों पर काम करने में धैर्य की आवश्यकता है, सफलता और साहस के लिए, अतः धैर्य ही सफलता का कारण है।

स्वामी विवेकानन्द जी की दृष्टि में-

"यदि यहाँ अभी और पूर्णता की प्राप्ति असम्भव है, तो इस बात का कोई प्रमाण नहीं कि दूसरे जन्म में पूर्णता मिल ही जायेगी।"

फरिश्ता

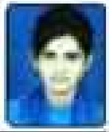

1. नींद अपनी भुला के, सुलाया हमको,
आँसू अपने गिरा के, हंसाया हमको,
लिए गोद में झुलाया हमको,
जीवन की हर खुशी से पापा आपने मिलाया हमको.

2. खुशियों से भरा, हर पल होता है,
जिन्दगी में सुनहरा, हर कल होता है,
मिलती है कामयाबी उनको,
जिनके सिर पर पिता का हाथ होता है।

3. पिता के बिना जिन्दगी, वीरान होती है,
तन्हा सफर में हर राह, सुनसान होती है,
जिन्दगी में पिता का होना जरूरी है,
पिता के साथ से हर राह आसान होती है...

4. दुनिया की भीड़ में करीब भी वो हैं,
उनकी दुआ से चलती है जिन्दगी,
क्योंकि खुदा भी वो है तकदीर भी वो है...

5. मुझे रख दिया छाँव में,
खुद जलते रहे धूप में,
मैंने देखा है एक ऐसा
फरिश्ता अपने पिता के रूप में ...

चुटकुला

1. पति- कितनी बार कहा है कि-
खाना बनाते टाइम मोबाइल मत चलाया करो।
अब देखो! सब्जी का स्वाद एकदम पानी जैसा लग रहा है।
पत्नी- ज्यादा दिमाग का दही ना करो जी, आपसे कितनी बार बोला है कि खाना खाते टाइम मोबाइल मत चलाया करो, आप सब्जी की जगह पानी में रोटी डुबो-डुबो कर खा रहे हैं।

2. दुकानदार- मैंने आपको दुकान की एक-एक चप्पल दिखा दी, अब तो एक भी बाकी नहीं है।
महिला- तो सामने वाले डिब्बे में क्या है।
दुकानदार- बहन थोड़ा तो रहम करो, वो तो मेरा टिफिन है, उसमें मेरा दोपहर का खाना है।

3. कल एक पत्नी ने अपने पति को ये कहकर चुप करा दिया कि
ज्यादा होशियार मत बनो- जितना दिमाग तुम्हारे पास है,
उतना तो मेरा हमेशा खराब रहता है।

"संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसमें भारतीय संस्कृति का चिन्तन ज्ञान भरा है। बिना संस्कृत पढ़े कोई पूर्ण भारतीय और विद्वान नहीं बन सकता।"

– महात्मा गांधी

अनमोल वचन

[illegible]
[illegible]

1. शिव में आस्था है तो,
   अड़चनों में रास्ता है।
2. रिश्ता चाहे कोई भी हो,
   परछाई सी ही होता है।
   "विश्वास"
3. रात, सुबह का इन्तजार नहीं करती,
   खुशबू, मौसम का इन्तजार नहीं करती।
   जो भी खुशी मिले, उसका आनन्द लिया करो।
   क्योंकि जिन्दगी वक्त का इन्तजार नहीं करती।
4. जिन्दगी में तीन लोगों को कभी मत भूलना,
   मुसीबत में साथ देने वालों को,
   मुसीबत में साथ छोड़ने वालों को,
   मुसीबत में डालने वालों को।
5. इंतजार जीना दस्तूर है जिन्दगी का,
   एक ही किस्सा मशहूर है जिन्दगी का,
   बीते हुए पल कभी लौटकर नहीं आते,
   यही सबसे बड़ा कसूर है जिन्दगी का।
6. जिन्दगी में कभी भी अपने हुनर पर घमण्ड मत करना,
   क्योंकि पत्थर जब भी पानी में गिरता है,
   तो अपने ही वजन से डूब जाता है।

गाँठ बांध लो

- जो पिता के पैरों को छूता है वो,
  कभी गरीब नहीं होता है।
- जो माँ के पैरों को छूता है वो,
  कभी बदनसीब नहीं होता है।
- जो भाई के पैरों को छूता है वो,
  कभी गमगीन नहीं होता है।
- जो बहनों के पैरों को छूता है वो,
  कभी चरित्रहीन नहीं होता है।
- और जो गुरु के पैरों को छूता है वो,
  उस जैसा कोई खुशनसीब नहीं होता है।

चुटकुला

1. पति - तुम मास्क क्यों नहीं पहन रही हो।

   पत्नी- आपको पता कैसे चलेगा कि मैं मुंह फुला कर घूम रही हूँ।

2. कोरोना तुम अब तक कहाँ थे?

   बीवी की शॉपिंग बंद, गोल गप्पा बंद, रिश्ते की फरमाइश बंद, आउटिंग बंद, बाहर जाना बंद और सबसे बड़ी बात, मुंह पर मास्क लगाने से दिनभर का चिक-चिक बंद, वाह रे कोरोना तुम भी कमाल की चीज हो, जो अच्छे-अच्छे न कर पाए वो तुमने कर दिखाया।

3. टीचर - अगर दुनिया में बिजली नहीं होती तो टी.वी. कैसे देखते।

   पप्पू- मोमबत्ती जला के।

[illegible] सिंह 'राजपूत'
[illegible]

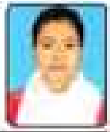

आज की यह कहानी 'शिक्षा का महत्व' उन लोगों के लिए है जो कहते हैं- उन्हें "पढ़ने का मौका नहीं मिला" या फिर "पढ़ाई हमारी किस्मत में ही नहीं थी" और बच्चों के लिए है, तो हम आपसे कहना चाहते हैं कि बच्चों और स्टूडेंट्स को ये कहानी जरूर बताएं।

IMPORTANCE OF EDUCATION - एक आदमी जिसकी अपनी एक सामाजिक पहचान है, दिन भर में कई लोगों से मिलता है, कई लोग उसका इंतजार करते हैं, वो एक दिन बड़े से मॉल में किसी वस्तु की शिकायत करने जाता है और मॉल के सफाई कर्मचारी से पूछता है, मैनेजर का ऑफिस कहां है तो कर्मचारी उसे मैनेजर के ऑफिस तक छोड़ देता है और वहां पर छह फीट लम्बा सिक्योरिटी गार्ड उसे रोकता है और इंतजार करने को कहता है। थोड़ी देर बाद मैनेजर उस आदमी को अंदर बुलाता है तो आदमी मैनेजर को देखता है जो बहुत ही दुबला-पतला आंखों पर चश्मा लगाए हुए एक हाथ में पेन और दूसरे में कम्प्यूटर का माउस लिए बड़ी सी कुर्सी पर बैठे मैनेजर उस आदमी को भी बैठने का इशारा करता है, उसकी पूरी बात ध्यान से सुनता है और उसकी शिकायत को दूर करने के लिए उसे इंतजार करने को कहता है और उसकी वस्तु को लेकर मॉल के उस डिपार्टमेंट में चला जाता है जहां से उसने वो वस्तु खरीदी थी।

तो आदमी सोचता है, मेरे से मिलने के लिए लोग इंतजार करते हैं और मैं इस मैनेजर का इंतजार करूंगा और बेचैन होकर बाहर आ जाता है, बाहर खड़े गार्ड को कहता है, ये शायद जानता नहीं मैं कौन हूं, मैं किसी का इंतजार नहीं करता। गार्ड कहता है साहब सामान वापसी का यही नियम है, आपको थोड़ा इंतजार तो करना पड़ेगा।

वो आदमी गार्ड से बात करने लगता है और बातों-बातों में पूछता है तुम इतने हैंडसम हो, छः फीट लम्बे हो, ताकतवर भी हो, तुम मैनेजर से डरते हो क्या?

साहब मेरा हैंडसम होना, ताकतवर होना कोई मायने नहीं रखता, मैनेजर मुझसे ज्यादा पढ़ा लिखा है और आज "कलम की ताकत सबसे बड़ी ताकत है।"

"फिर तुमने पढ़ाई क्यों नहीं की?"

इस बात का तो जिन्दगी भर अफसोस रहेगा साहब, माँ-बाप स्कूल भेजते थे, मैं ही स्कूल से भागता था। माँ-बाप ने घर पर भी टीचर लगा दिया था जो मुझे रोज पढ़ाने आता था, पर मेरी किस्मत में पढ़ाई की रेखा बहुत छोटी है। "हमारे गांव में पढ़ाई का माहौल भी नहीं होता और स्कूल कॉलेज भी ठीक नहीं होते।"

नहीं साहब, ये तो बस बहाना है न पढ़ने का, गांव में भी सरकारी स्कूल होते हैं जो यहाँ किताबें पढ़ाई जाती हैं, वहीं भी वही किताबें पढ़ाई जाती हैं, असल में पढ़ता वही है जो मजबूर हो या उसे पढ़ने का शौक हो।

ये जो आप मैनेजर देख रहे हैं, ये मेरे ही गांव का है, कभी स्कूल में मास्टर जी नहीं आते थे तो हम सिनेमा चले जाते थे और ये पेड़ के नीचे बैठकर पढ़ता था और हम इसपर हंसते थे। हमारे पापा के पास बहुत जमीन थी, बहुत पैसा था और इसके पास कुछ नहीं था। हमारी जमीन पापा की बीमारी खा गई और साथ

पैसा भी खत्म हो गया। हम गांव में बेरोजगार हो गये।

फिर एक दिन मैनेजर साहब को हमने अपनी तकलीफ बताई और वो हमें दिल्ली ले आये और यहाँ पर ये गार्ड की नौकरी दिलवा दी। अब चल जाता है इससे थोड़ा बहुत खर्चा-पानी। साहब मैं तो कहूंगा कि आप भी बच्चों को समझाइये, जो कहते हैं कि पढ़ाई हमारे किस्मत में नहीं है। इतने में मैनेजर वापस आ गया और उस आदमी से माफी मांगते हुए उनकी शिकायत दूर की और हाथ मिलाया।

"घमण्ड न करना, जिन्दगी में तक्दीर बदलती रहती है।
शीशा तो वही रहता है, तस्वीर बदलती रहती है।"

जो पढ़ता है, वही दुनिया को पढ़ाता है।
आज का किया मेहनत, कल रंग लाता है।

जिसे खुद पर विश्वास हो, वो यही कहता है।
मेहनत कर, किस्मत का लिखा भी बदलता है।

शिक्षा वही है जो इंसान को इंसान बनाये।
व्यर्थ है वो शिक्षा जो आतंक फैलाये।

बुझने लगी हो आंखे तेरी, चाहे थमती हो रफ्तार,
उखड़ रही हो सांसे तेरी, दिल करता हो चित्कार,
दोष विधाता को ना देना, मन में रखना तू ये आस,
रणविजयी बनता वही, जिसके पास हो
आत्मविश्वास।

हास्य व्यंग्य

- इंडियन लोग गिफ्ट्स के लिए थैंक्स नहीं करते, वो कहते हैं- ही ही ही ही इसकी क्या जरूरत थी।
- अगर कोई आपसे बेवजह नफरत करता है, तो एक जोरदार थप्पड़ मार कर उसे वजह दे दो।
- पढ़ाई छोड़ के सब खेल रहे हैं आजकल पबजी, बाद में नौकरी ना मिली तो बेचोगे सब्जी-जी।
- बेटा बियर पीकर घर लौटा था, पापा की डाँट से बचने के लिए लैपटॉप खोलकर पढ़ने लगा।
- **पापा-** बेटा तू फिर से पीकर आया है?
  बेटा- नहीं पापा नहीं, मैं नहीं पिया हूँ।
  पापा- तो फिर सूटकेस खोलकर क्या पढ़ रहा है?
- **माँ-** बेटा क्या कर रहे हो?
  बेटा- पढ़ रहा हूँ माँ,
  माँ- शाबास! क्या पढ़ रहे हो?
  बेटा-आपकी होने वाली बहू का एस0एम0एस0, दे थप्पड़ दे थप्पड़।
- **पोता-** दादा जी अस्सी साल की उम्र में भी दादी को आप डार्लिंग, स्वीटी, माई लव कहते हैं।
  दादा- हाँ बेटे, दस साल पहले ही उसका नाम भूल गया था तो अब तक दुबारा पूछने की हिम्मत नहीं हुई।
- **एक अंग्रेजी मेम नौकर से-** यूं डफर, तुमसे एक काम भी ढ़ंग से नहीं होता, बदतमीज कहीं का।
  नौकर (गुस्से में) - मैडम सलीके से बात करो, मैं नौकर हूँ आपका शौहर नहीं।
- अजीब आलम है आजकल प्याज छिलते समय एक Extra Layer छिल जाए तो लगता है, दस का नोट फट गया।

लड़कियों की जिन्दगी आसान नहीं होती

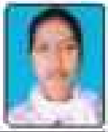

भाई की लाडली है और है फिक्र से अनजान,
माँ का सपना और है पिता का अभिमान।

पर क्या जानते हैं आप कि नन्ही-सी इन परियों की एक दायरे से बाहर कभी उड़ान नहीं होती,
और जितना सोचते हैं हम लड़कियों की जिन्दगी उतनी आसान नहीं होती।

जन्म लेते ही माँ इनके शादी
के गहने जुटाने लगती है,
क्या सही है क्या गलत हर बात
पर समझाने लगती है।

देखो तुम लड़की हो, अपना ध्यान रखना,
जमाने को बदलना मुमकिन नहीं,
इसलिए हमेशा का खास ख्याल रखना।
सुनो किसी की बातों में मत आना,
और कुछ भी गलत लगे तो
सबसे पहले आकर मुझे बताना।

जमाने के साथ चलना इन्हें
बेशक सिखाया जाता है,
पर साथ एक दायरा इन्हें समझाया जाता है।
खुद की ही अपनी दुनिया में
ये खुद ही महफूज नहीं होती।

और जितना सोचते हैं, हम लड़कियों की जिन्दगी
उतनी आसान नहीं होती।

बचपन से ही कभी रूप कभी रंग तो
कभी व्यवहार को लेकर टोकी जाती है,
तुम अकेले कैसे करोगी, कहां खोगी राह, न जाने
कितने अवसरों से रोकी जाती है।

कहने को लड़कों के बराबर है आज, पर मौका
मिलते ही आंखें इन पर सेंकी जाती है,

कभी जन्म से पहले तो कभी
हवस का शिकार बन, फिर कूड़े में फेंकी जाती है।

गलतियाँ कई नजर अंदाज करती है बेशक, पर
नजरिये से कभी ये अंजान नहीं होती।
जितना सोचते हैं हम, लड़कियों की जिन्दगी
आसान नहीं होती।

एक घर में बीते और दूसरे में जीवन
बिताना पड़ता है,
माँ, भाई और पापा का प्यार मानो
एक दिन में भुलाना पड़ता है।

एक हाथ से कई रिश्ते छूटे और दूसरा हाथ कई
रिश्तों के लिए बढ़ाना पड़ता है।
कई बार मन मिले या न मिले पर
उम्र भर बेमन हर बन्धन निभाना पड़ता है।

किसी एक शख्स के खातिर
ये अपनी पूरी जिन्दगी बदल देती है।
फिर भी उम्र भर इनकी अलग
कोई पहचान नहीं होती।
जितना सोचते हैं हम.....

बात-बात पर आँखें इनकी भीगी होती है, बेवजह
बेतुकी बातों पर ये अक्सर रोती हैं।
हाँ को ना और ना को हाँ कहती हैं, मुंह से कुछ
कहे न कहे, पर बात सारी मानती है।

माते ये खुद की अपने तक ये रख नहीं पाती है,
बस तुझे बता रही हूं किसी से कहना मत,
वह फिर सबको बताती है,
आदतों में गलतियां कई शुमार है,
बेशक पर नियत इनकी कभी बेईमान नहीं होती।
जितना सोचते हैं हम लड़कियों की
जिन्दगी उतनी आसान नहीं होती।
साल में सैकड़ों बार इनको देवी बना पूजा जाता है,
फिर भी उन दिनों में
न जाने क्यों अलग सा सोचा जाता है।
बहुत से रिवाज बने हैं इन दिनों के लिए, पर
अफसोस इस दर्द पर किसी
का ध्यान नहीं जाता है।
लड़की है ठीक से काम न कर पायेगी,
कभी बीमारी कभी थकी सी
कभी कुछ और बहाना बनायेगी,
भगवान का दिया हर दर्द सिर आंखों पर, जमाने
तेरी ये सोच बर्दाश्त नहीं होती।
जितना सोचते हैं ......

ढ़ोंग की जिन्दगी

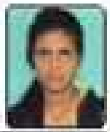

कु. प्रिया [illegible]
[illegible]

1. ढ़ोंग की जिन्दगी से बेहतर है ढ़ंग की जिन्दगी, जब किसी का गुण दिखाई दे तो मन को कैमरा बना लो। जब किसी का अवगुण दिखाई दे तो मन को आइना बना लो।
2. किसी के घर जाओ तो अपनी आंखों पर इतना काबू रखो, उसके सत्कार के अलावा उसकी कमी या, न दिखे और जब किसी के घर से निकलो तो अपनी जुबान पर काबू रखो ताकि उसके घर की इज्जत और राज दोनों सलामत रहे।
3. दिल में बुराई रखने से नाराजगी जाहिर कर दो, मैं सब जानती हूं कि यह सोच इंसान को कुएं का मेंढक बना देती, खुद का मान चाहो तो औरों का मान रखो, कहानी को अगर जीभ मिली है तो सुनने का धन रखो।
4. जब लोग आपकी बुराई करते हैं तो बिल्कुल परेशान न हो, वास्तव में वे लोग आपको महत्व देने का कोई रास्ता जानते ही नहीं। कभी उसको मत छोड़िये जो बहस करते हैं, पर उसको जरूर छोड़िये जो छल करते हैं।
5. ये दो बातें अपने अन्दर बिठा लो, एक तो चुप रहना, दूसरा माफ करना, क्योंकि चुप रहने से बेहतर कोई जवाब नहीं और माफ कर देने से बेहतर कोई सजा नहीं।

सपने वो नहीं जो आप सोते समय देखते हैं,
बल्कि सपने वो हैं जो आपको सोने नहीं देते।

-डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय रकसा
रतसर, बलिया-उ०प्र०

शैक्षिक/शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण

डॉ0 अशोक कुमार सिंह	प्राचार्य

कला संकाय (स्नातक व परास्नातक)

1.	डॉ0 चन्द्रमा सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर
2.	डॉ0 राजीव कुमार सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर
3.	डॉ0 अनिल कुमार पाण्डेय	असिस्टेंट प्रोफेसर
4.	डॉ0 अभय नाथ सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर
5.	श्री संजय कुमार शुक्ल	असिस्टेंट प्रोफेसर
6.	डॉ0 रूदल कुमार सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर
7.	डॉ0 बीना पाण्डेय	असिस्टेंट प्रोफेसर
8.	श्रीमती मंजुला त्रिपाठी	असिस्टेंट प्रोफेसर
9.	डॉ0 शारदा यादव	असिस्टेंट प्रोफेसर
10.	डॉ0 अश्विनी कुमार पाण्डेय	असिस्टेंट प्रोफेसर
11.	डॉ0 भाग्यवन्ती चौहान	असिस्टेंट प्रोफेसर
12.	डॉ0 सुनीता	असिस्टेंट प्रोफेसर
13.	डॉ0 गंगा राम पटेल	असिस्टेंट प्रोफेसर
14.	डॉ0 प्रदीप कुमार गुप्ता	असिस्टेंट प्रोफेसर

शिक्षा संकाय (बी0एड्0)

1.	डॉ0 नागेन्द्र राम	विभागाध्यक्ष
2.	श्री विकास सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर
3.	श्री अमित कुमार पाण्डेय	असिस्टेंट प्रोफेसर
4.	श्री अनिल कुमार यादव	असिस्टेंट प्रोफेसर
5.	श्री अश्विनी कुमार	असिस्टेंट प्रोफेसर
6.	श्री राम विलास यादव	असिस्टेंट प्रोफेसर
7.	कु0 सरिता	असिस्टेंट प्रोफेसर

8.	श्री सुरेन्द्र कुमार रजक	असिस्टेंट प्रोफेसर
9.	श्री विजेन्द्र कुमार गुप्ता	असिस्टेंट प्रोफेसर
10.	श्री अनिल यादव	असिस्टेंट प्रोफेसर
11.	श्री अर्सलान अहमद	असिस्टेंट प्रोफेसर
12.	श्री अरविन्द कुमार मिश्रा	असिस्टेंट प्रोफेसर
13.	श्री अरविन्द कुमार यादव	असिस्टेंट प्रोफेसर
14.	श्री रजनीश कुमार शुक्ला	असिस्टेंट प्रोफेसर
15.	श्री संजीव कुमार चतुर्वेदी	असिस्टेंट प्रोफेसर
16.	श्री संतोष कुमार पाल	असिस्टेंट प्रोफेसर
17.	श्री सुबाष कुमार	असिस्टेंट प्रोफेसर
18.	श्री राजेश कुमार यादव	असिस्टेंट प्रोफेसर
19.	श्रीमती कुसुम देवी	असिस्टेंट प्रोफेसर

डी0एल0एड्0 (बी0टी0सी0)

1.	डॉ0 अखिलेश कुमार	विभागाध्यक्ष
2.	मु0 सेराज अख्तर	प्रवक्ता
3.	श्री जितेन्द्र सिंह	प्रवक्ता
4.	श्री संजय कुमार	प्रवक्ता
5.	श्री संजय शर्मा	प्रवक्ता
6.	श्री सुधाकर सिंह	प्रवक्ता
7.	श्री अंजनी कुमार गुप्ता	प्रवक्ता
8.	श्रीमती विभा सिंह	प्रवक्ता
9.	श्रीमती सुनीता	प्रवक्ता
10.	श्री रिपुंजय सिंह	प्रवक्ता
11.	श्री शैलेन्द्र सिंह	प्रवक्ता
12.	श्री कमलेश कुमार गुप्ता	प्रवक्ता

बी0एल0एड्0

1.	डॉ0 राकेश कुमार सिंह	विभागाध्यक्ष
2.	श्री ओम प्रकाश सिंह यादव	असिस्टेंट प्रोफेसर
3.	श्री नन्द किशोर वर्मा	असिस्टेंट प्रोफेसर
4.	श्री सुजीत कुमार मौर्य	असिस्टेंट प्रोफेसर

5.	श्री रविन्द्र सिंह यादव	असिस्टेंट प्रोफेसर
6.	श्री अमरजीत यादव	असिस्टेंट प्रोफेसर
7.	श्री योगेश सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर
8.	श्री दिलीप कुमार यादव	असिस्टेंट प्रोफेसर
9.	श्री पदम सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर
10.	श्री घासी राम राही	असिस्टेंट प्रोफेसर
11.	श्री मुकुन्द लाल	असिस्टेंट प्रोफेसर
12.	श्री विवेक सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर
13.	सुश्री रीता गुप्ता	असिस्टेंट प्रोफेसर
14.	श्री विनोद कुमार	असिस्टेंट प्रोफेसर
15.	श्री भाष्कर सोनकर	असिस्टेंट प्रोफेसर
16.	श्री योगेन्द्र कुमार सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर

विज्ञान संकाय (स्नातक)

1.	डॉ0 मो0 सलीम सिद्दीकी	असिस्टेंट प्रोफेसर
2.	श्री अशोक कुमार सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर
3.	श्री विश्वप्रकाश शुक्ल	असिस्टेंट प्रोफेसर
4.	श्री राजीव कुमार शर्मा	असिस्टेंट प्रोफेसर
5.	श्री ज्ञान प्रकाश सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर
6.	डॉ0 आशीष कुमार गुप्ता	असिस्टेंट प्रोफेसर
7.	डॉ0 अवधेश कुमार यादव	असिस्टेंट प्रोफेसर
8.	डॉ0 सुयश कुमार श्रीवास्तव	असिस्टेंट प्रोफेसर
9.	डॉ0 अजय सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर
10.	तनुप्रिया सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर

प्रयोगशाला सहायक

1. श्री बृजेश कुमार सिंह
2. श्री पंकज कुमार सिंह
3. श्री शम्भू नारायण उपाध्याय
4. गुलनारा खातून
5. श्री संजय कुमार

पुस्तकालय

1.	श्री रवीन्द्र प्रताप सिंह	पुस्तकालयाध्यक्ष
2.	श्री धर्मेन्द्र कुमार सिंह	पुस्तकालयाध्यक्ष (शिक्षा संकाय)
3.	श्री गजाधर नाथ पाण्डेय	पुस्तकालय लिपिक
4.	श्री राम जन्म चौहान	पुस्तकालय परिचर
5.	श्री कुंज बिहारी सिंह	पुस्तकालय परिचर

कर्मचारीगण (तृतीय श्रेणी)

1.	श्री ब्यास मुनि सिंह	लेखाकार
2.	श्री अब्दुल कयूम खाँ	कार्यालय अधीक्षक
3.	श्री मुरलीधर	प्रधान लिपिक
4.	श्री अमरेन्द्र प्रताप सिंह	आशुलिपिक
5.	श्री रेयाज अहमद खाँ	कम्प्यूटर प्रचालक
6.	श्री मुनीर अहमद खाँ	नैत्यिक लिपिक
7.	श्री राज किशोर सिंह	नैत्यिक लिपिक
8.	श्री ओम प्रकाश यादव	नैत्यिक लिपिक
9.	श्री बलवन्त सिंह	नैत्यिक लिपिक

कर्मचारीगण (चतुर्थ श्रेणी)

1.	श्री जितेन्द्र बहादुर सिंह	दफ्तरी
2.	श्री हरिकृष्ण चौहान	परिचर
3.	श्री हृदय नारायण प्रसाद	परिचर
4.	श्री दिनेश प्रसाद	परिचर
5.	श्री तारकेश्वर नाथ तिवारी	परिचर
6.	श्री गुलाब चन्द	परिचर
7.	सरिता यादव	परिचारिका
8.	श्री संजय कुमार सिंह	चौकीदार
9.	श्री आफताब अहमद खाँ	चौकीदार
10.	श्री शिव गोविन्द सिंह	ड्राइवर
11.	श्री ज्ञानीदास	ड्राइवर
12.	श्री शिव प्रसाद	ड्राइवर
13.	श्री सुरेन्द्र यादव	ड्राइवर
14.	श्री गनेश रावत	स्वीपर
15.	श्री महेश रावत	स्वीपर

बलिया जनपद के ग्रामीण अंचल में शिक्षोन्नयन हेतु विभिन्न शिक्षण संस्थानों के माध्यम से हमारा सतत् प्रयास

- किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय रकसा, रतसर
- स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाँसडीह
- नागेश्वरी देवी श्रीकृष्ण इण्टर कालेज, उकछी
- पार्वती देवी इण्टर कालेज रकसा, रतसर

लल्लन सिंह
संस्थापक/प्रबन्धक

किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय रकसा

रतसर-बलिया (उ०प्र०)

कुलगीत

हे प्रज्ञा के पीठ, हे ज्ञान के दीप,
शत्-शत् तुझे नमन है.....

सदियों से जिस धरती का, गंगा ने किया प्रक्षालन,
तमसा ने तम हर लिया, सरयू ने किया है पालन।
ऋषि भृगु, बलि वीर व दानी, मंगल का तू चमन है॥

शत्-शत् तुझे नमन है...

मानव के निर्माण का हम, देखें सदा ही सपना,
सद्भावना हो सबमें, बस लक्ष्य मात्र यह अपना।
इस पवित्र तेरी छाया में, मानवता का उन्नयन है॥

शत्-शत् तुझे नमन है...

दान ज्ञान का दे सबको, नव राष्ट्र का नित उदय हो,
तेरा हो उत्कर्ष सदा ही, तेरी सदा ही जय हो।
है किसान की गौरव गाथा, तेरा सदा वन्दन है॥

शत्-शत् तुझे नमन है...

रकसा की सरजमीं से, आलोक ज्ञान का फैलाये,
बाबा भगतहा की किरणें, ज्योतिर्मय विद्या बिखरायें।
तेरा मस्तक हो ऊँचा, हरदम तेरा अभिनन्दन है॥

शत्-शत् तुझे नमन है...

ज्ञान चक्षु मानव को दे, मन भय और शोक रहित हो,
अनुशासित करूणामय जीवन, माँ भारती को अर्पित हो।
धवल प्रकाश बनें वसुधा का, मन में यही लगन है॥

शत्-शत् तुझे नमन है...

परमेश्वर की हृदयस्थली, कर्मभूमि लल्लन जी की,
शान वहीद, खालिक की हो, पहचान सच्चिदानन्द की।
रामदरश के मानस का तू, एक अनमोल रतन है॥

हे प्रज्ञा के पीठ, हे ज्ञान के दीप,
शत्-शत् तुझे नमन है॥

महाविद्यालयीय प्रबन्ध समिति

क्र0	नाम	पिता का नाम	पता	पद
1.	श्री सनातन पाण्डेय	स्व0 रामजी पाण्डेय	पाण्डेयपुर, ताखा-बलिया	संरक्षक
2.	श्री मुनीर अहमद	स्व0 खैरूद्दीन अहमद	रतसर-बलिया	अध्यक्ष
3.	श्री विजय बहादुर तिवारी	श्री परमेश्वर तिवारी	उकछी-बलिया	उपाध्यक्ष
4.	श्री लल्लन सिंह	स्व0 शिवशंकर सिंह	रकसा, रतसर-बलिया	प्रबन्धक
5.	श्री अमर नाथ सिंह	स्व0 तारकेश्वर सिंह	पहाड़पुर, चिलकहर-बलिया	उपप्रबन्धक
6.	श्री खालिक खाँ	स्व0 सलमीन खाँ	रकसा, रतसर-बलिया	मंत्री
7.	श्री वहीद अहमद खाँ	स्व0 जमीर खाँ	रकसा, रतसर-बलिया	कोषाध्यक्ष
8.	श्री रामदरश यादव	स्व0 दलसिंगार यादव	बदनपुरा, रतसर-बलिया	सदस्य
9.	श्री जनार्दन प्रसाद सिंह	श्री भोला नाथ सिंह	सिकरिया खुर्द-बलिया	सदस्य
10.	डॉ0 अशोक कुमार सिंह	प्राचार्य		पदेन सदस्य
11.	श्री संजय कुमार शुक्ल	शिक्षक	प्रतिनिधि	पदेन सदस्य
12.	डॉ0 बीना पाण्डेय	शिक्षक		पदेन सदस्य
13-	श्री ओम प्रकाश यादव	नैत्यिक लिपिक	शिक्षणेत्तर कर्मचारियों का प्रतिनिधि	पदेन सदस्य

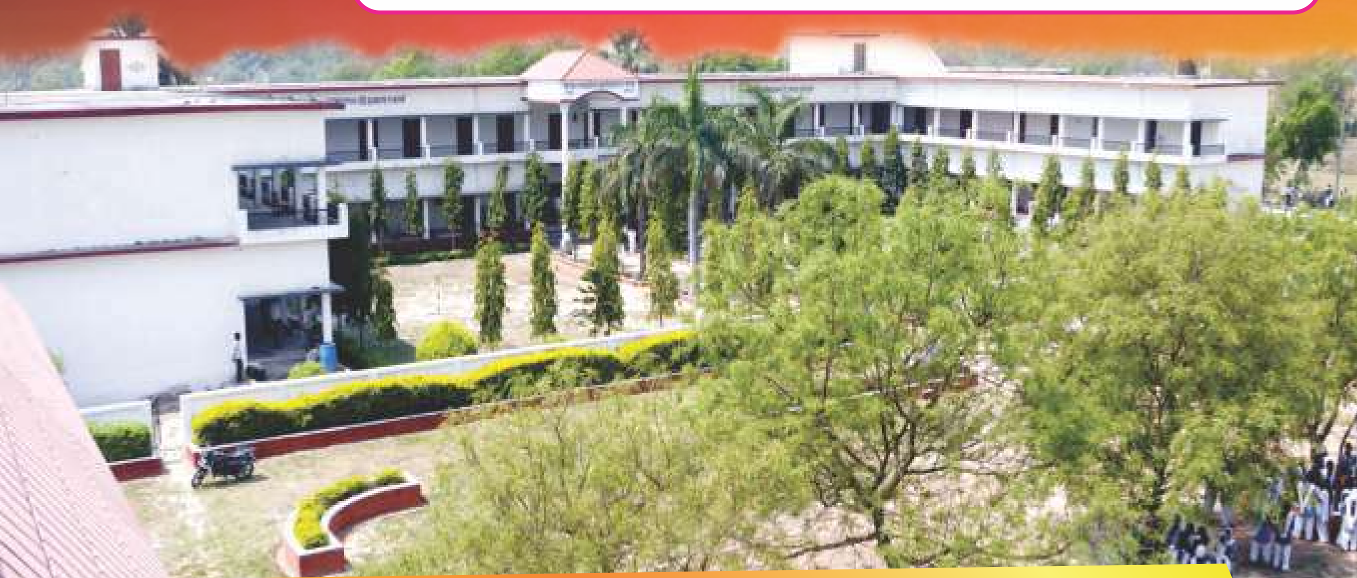

सम्पर्क सूत्र

+91- 941 569 0684, 991 846 9616, 941 525 4779

www.kisanpgcollege.in *kisankmv@gmail.com*